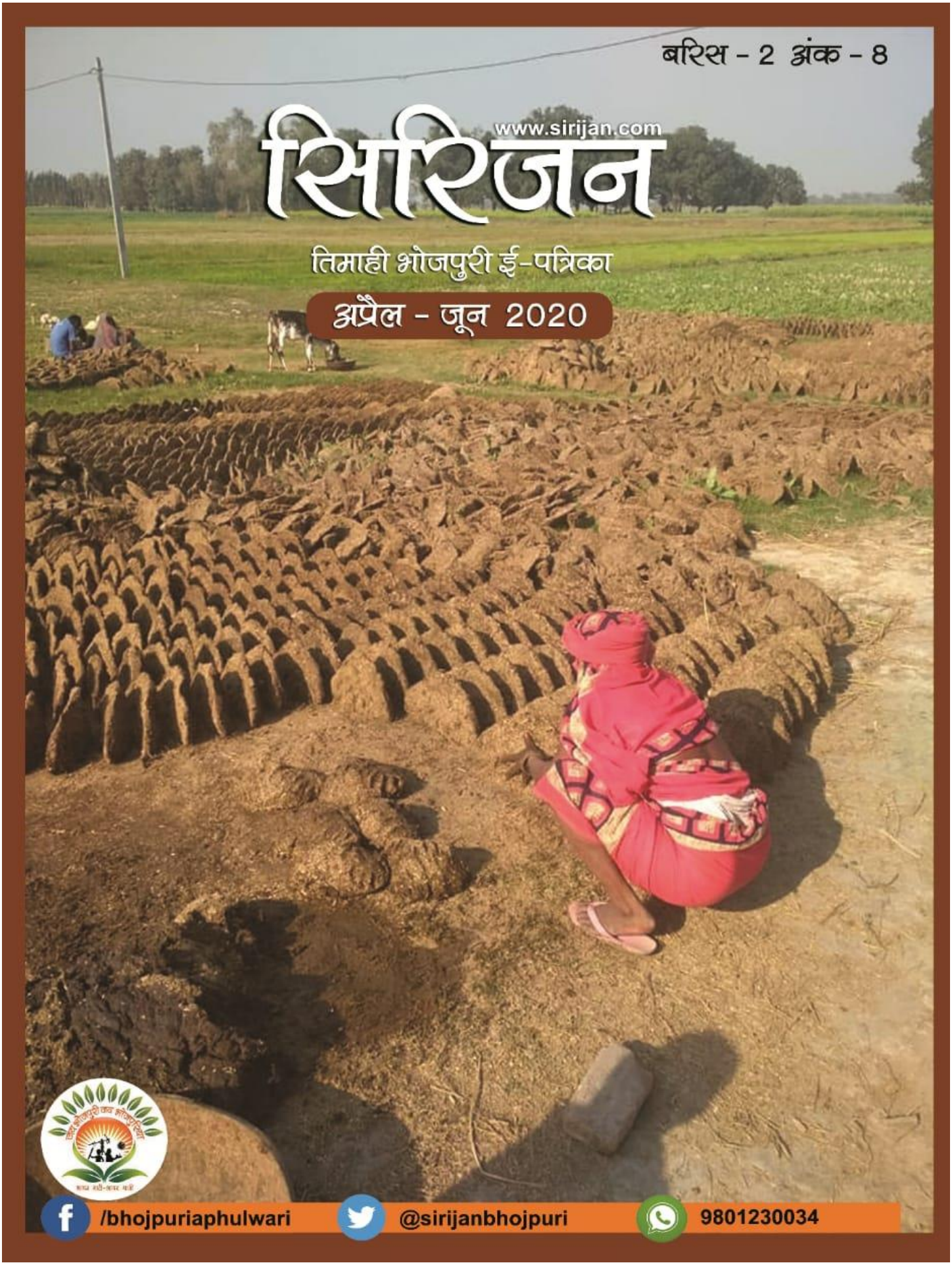

बरिस - 2 अंक - 8

सिरिजन

www.sirijan.com

तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका

अप्रैल - जून 2020

/bhojpuriaphulwari @sirijanbhojpuri 9801230034

सिरिजन

(तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका)

प्रबंध निदेशक	:	सतीश कुमार त्रिपाठी
संरक्षक	:	1. सुरेश कुमार, (मुम्बई)
		2. कन्हैया प्रसाद तिवारी, (बैंगलोर)
प्रधान सम्पादक	:	सुभाष पाण्डेय
सम्पादक	:	डॉ अनिल चौबे
बिशिष्ट सम्पादक	:	बृजभूषण तिवारी
उप सम्पादक	:	तारकेश्वर राय
कार्यकारी सम्पादक	:	संजय कुमार मिश्र
सलाहकार सम्पादक	:	राजीव उपाध्याय
सह-सम्पादक	:	1. भावेश
		2. दिलीप पाण्डेय
		3. माया चौबे
		4. डॉ अमरेन्द्र सिंह
		5. गणेश नाथ तिवारी
प्रबंध सम्पादक	:	लव कान्त सिंह
आमंत्रित सम्पादक	:	चंद्र भूषण यादव
बिदेश प्रतिनिधि	:	रवि शंकर तिवारी
ब्यूरो चीफ	:	संजय कुमार ओझा
ब्यूरो चीफ (बिहार)	:	अमरेन्द्र सिंह
ब्यूरो चीफ (प. बंगाल)	:	दीपक कुमार सिंह
ब्यूरो चीफ (उत्तर प्रदेश)	:	1. राजन द्विवेदी 2. अनुपम तिवारी
ब्यूरो चीफ (झारखण्ड)	:	राठौर नितान्त
पश्चिम भारत प्रतिनिधि	:	बिजय शुक्ला
दिल्ली, NCR प्रतिनिधि	:	1. बिनोद गिरी
		2. राम प्रकाश तिवारी
क़ानूनी सलाहकार	:	नंदेश्वर मिश्र (अधिवक्ता)

(कुल्हि पद अवैतनिक बाड़न स)

स्वामित्व, प्रकाशक सतीश कुमार त्रिपाठी के ओरी से : 657, छठवीं मंजिल, अग्रवाल मेट्रो हाइट, प्लाट नंबर इ-5 नेताजी सुभाष पैलेस, सेंट्रल वजीरपुर,पीतमपुरा, दिल्ली – 110001, सिरिजन में प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरूरी नइखे की सम्पादक के बिचार लेखक के बिचार से मिले। रचना प बिवाद के जिम्मेदारी रचनाकार के रही। कुल्हि बिवादन के निपटारा नई दिल्ली के सक्षम अदालत अउर फ़ोरम में करल जाई।

सिरिजन क झपोली

अनुक्रम

1. संपादकीय
   - संपादकीय - डॉ अनिल चौबे / 4
   - आपन बात - तारकेश्वर राय / 5
2. कनखी
   - सोशल मिडिया से कुफ्ताइल कोरोना - डॉ अनिल चौबे / 8
3. कथा-कहनी /दँतकिस्सा
   - नवल भोर - मणि बेन द्विवेदी / 23
   - रहमत के रमजान - विवेक सिंह / 54
   - बंशी - संजीव कुमार रंजन / 67
4. कविता
   - हमरो घर मलिकाइनि बाड़ी - पं कुबेर नाथ मिश्र "विचित्र" / 9
   - तीन गो मुक्तक - पं कुबेर नाथ मिश्र "विचित्र" / 9
   - गाँव गिराँव क हाल बेहाल बा - कृष्ण मुरारी राय / 16
   - मुक्तक - कृष्ण मुरारी राय / 17
   - किरदार बदलल बा मिता - संगीत सुभाष / 21
   - चइती - कोइलिया, बेध समाइल- संगीत सुभाष / 21
   - दोहा-गजल (कोरोना) - माया शर्मा / 22
   - नइहरे में - श्लेष अलंकार / 22
   - सुगना - श्लेष अलंकार / 22
   - मन अउँजाता बा - राकेश कुमार पाण्डेय / 25
   - काजर के कोर से - द्वारिका नाथ तिवारी / 26
   - मनोहर पोथी - द्वारिका नाथ तिवारी / 26
   - ओका बोका बहुते भईल - द्वारिका नाथ तिवारी / 26
   - प्रीत - मन के भाव / संजय कुमार ओझा / 38
   - कोरोना कर्फ्यू काशी - रत्नेश चंचल / 38
   - ओ मॉय गॉड - हरेश्वर राय / 39
   - छव जो मुक्तक - विद्या शंकर विद्यार्थी / 39
   - बिरहिन के हूक - अमरेन्द्र सिंह / 42
   - मोह में भुलाइल बाड़ू कैंहँवा - कवि हृदयानंद बिशाल / 42
   - मुँहवा खोलत नइखीं - सुजीत सिंह / 43
   - सनातनी नववर्ष - दिलीप पैनाली / 43
   - वसंत उहाँ कबो ना आवे - निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव / 48
   - हम भाषा भोजपुरी ह ईंधन - राम प्रकाश तिवारी "ठेठ बिहारी" / 63
   - आंसू इ जुदाई के - श्रद्धानंद "चंचल" / 64
   - खरहर देह रहे चिकनाइल - विवेक पाण्डेय / 64
   - फौजी बनाइब - राना रंजीत बासु / 65
   - पहिला मुहब्बत - भरत तिवारी / 65
   - जा ए कोरोना - रविकांत शास्त्री / 66
   - सरसो - संजीव कुमार रंजन / 66
5. गीत/ गजल
   - डॉ जौहर शफियाबादी के कुछ ग़ज़ल / 10
   - उड़ल जाला दूर सुगनवा - विद्या शंकर विद्यार्थी /37
   - फइलल कोरोना - पंकज तिवारी / 37
   - घर में रहीं - देवेन्द्र कुमार राय / 49
   - फइलेला कोरोनवा / गणेश नाथ तिवारी / 49
   - ज़िनिगी जियल कबो एतना मुहाल हो जाला - दीपक सिंह / 71
   - कइसे होई पिया से मिलनवाँ - शैलेन्द्र कुमार तिवारी / 71
6. पुरुखन के कोठार से
   - राधा मोहन चौबे "अंजन" जी के मुक्तक / 11
7. नाटक / एकांकी
   - परिवर्तन - विद्या शंकर विद्यार्थी / 40
   - जय हो कोरोना - विशाल नारायण / 76
8. आलेख/निबंध
   - विशिष्ट विवेचक विप्र जी आ उनकर 'राम काव्य परम्परा में मानस - डॉ जयकांत सिंह `जय`/ 18
   - सरस सलिला माँ गंगा - मणि बेन द्विवेदी / 27
   - आइ हो दादा बिदेश से आइल बाड़ ऽ का ? - तारकेश्वर राय / 35
   - नेपाल में नारी के अवस्था - अनिता शाह / 45
   - महामारी के मार ऽल,सगरो जहान - त्रिपुरारी पाण्डेय / 50
   - शक्ति के ही त नाम नारी ह - पूजा "बहार" / 53
   - योग अउर योगी - योगगुरु शशि प्रकाश तिवारी /56
   - मानव जाती खातिर नया खतरा : कोरोना वायरस - समीर कुमार राय / 69
9. सबद कौतुक
   - टोकरी भ सुख-दुख - दिनेश पाण्डेय / 12
10. भोजपुरी उपन्यास
   - अतवरिया - राधा मोहन चौबे "अंजन" / 29
11. संस्मरण
   - गँउआ के बसिया शहरिया में जाला - प्रीतम पाण्डेय सांकृत / 58
   - भूख रोटी के - अभियंता सौरभ भोजपुरिया / 73
12. पुस्तक समीक्षा
   - 'एक मुठी सरसो' - जयशंकर प्रसाद द्विवेदी / 33
13. ब्यंग्य
   - निर्भया के चिठ्ठी आपना माई के नावें - गीता चौबे "गूंज" / 72
14. हंसी / ठिठोली - 44
15. पाठक का कोना - राउर बात / 79
16. कलमकार से गोहार - 80
17. सतमेझरा -7, 60,61,62, 78,81

सिरिजन परिवार की ओर से सब पाठकबन्धु के नवका साल के बधाई।
सनातनी नया वर्ष शुरू हो गइल बा।
ए सम्बत्सर के नाव ह प्रमादी। त नाव के मोताबिक प्रमाद स्वाभाविके बा। उन्माद होखे भा प्रमाद, इंसान आ इंसानियत दुनो खातिर ठीक ना होला, बाकी अदिमी में जदि समय रहते चेतना जागि जा त जिनगी के साँझ होखे के पहिले आदमी आपन जिनिगी जी लिही। ना त सूरुज का डुबते जिनिगी घनघोर अन्हरिया के डेरवावन निशाने पर आ जाले।। त मन के मारीं आ मनमसोस के घरे रहीं, मनमानी मत करीं।

ए संवत्सर २०७७ के शुरूआत एगो अइसन महामारी से भइल बा जेकर कल्पना केहू ना कइले होई। हालाँकि एकर संकेत भविष्यवक्ता लोगन से, ज्योतिषीय गणना से, भारतीय पत्रा से बराबर मिलत रहल बा। नास्त्रेदमस अपनी एगो किताब में एक जगह लिखले बाड़ें कि - एगो समय अइसन आई कि सुअर का तरे मुँहवाला लोग सड़कन पर दिखाई दिहें। आज कोरोना के दारुण दौर में मास्क लगवले मनुष्य का अइसने नइखे लउकत ?

होई उहे जवन पहिले से तय बा, - होइहै सोइ जो राम रचि राखा, को करि तरक बढ़ावै साखा। ए महामारी के भी प्री-फ़िक्स समझल जाव। चीन के वुहान से निकलल कोविड 19 वायरस के संकेत नारदसंहिता में भी बा। ज्योतिषीय गणना के आधार पर एकर शुरूआत आ समाप्ति के भी उल्लेख बा।
नारद संहिता में लिखल बा - भूपावहो महारोगो मध्यस्यार्द्धवृष्टय ,
दु:खिनो जन्त्वसर्वेSसंवत्सरे परिधाविनी। माने परिधावी नामक संवत्सर में राजा लोग में परस्पर युद्ध होई, महामारी फइली, ढेर वरखा होई आ सब जीव-जन्तु दुखी होइहें। प्रमादी के पहिले ले परिधावी नाम के सम्बत्सर चलत रहल ह।
एह महामारी के उल्लेख कुछ ज्योतिष के ग्रन्थ में भी कइल बा जवना अनुसार एकर सुरुआत ईसवी २०१९ के अन्त में होखे वाला सूर्यग्रहण से होई। बृहद्संहिता में लिखल बा कि-
शनिश्चर भूमिसुतो स्कृद रोगे प्रपीडिते जना:
माने जवना संवत्सर के अधिपति शनि महाराज होलें ओ वर्ष में महामारियन खातिर स्वर्ग की स्थिति बनेला। सभे देख रहल बा कि कोरोना दुनियाँ के नरक बना के खुद स्वर्ग जइसन सुख में बा।

शास्त्रानुसार ई जेतना जल्दी आइल बा ओतने जल्दी चालिओ जाई। प्रमादी के एगो माने लापरवाही भी होला त लापरवाही मत करीं प्रमादी के आलसीवाला अर्थ अपनाईं, चुपचाप घर मे परल रहीं।
भगवान करें कि ई कोरोना राछस गाँव में ना पहुँचे ।
इटली, स्पेन, अमरीका भले त्राहिमाम करत होखे कोरोना से, बाकी आपन भारत त्याग आ संयम नियम वाला देश ह। इहाँ से जरूर कोरोना हारि के भागी। असही कालिया नाग भी जमुना जल में संक्रमण फइलवले रहल । भगवान श्रीकृष्ण लरिकाइए में ओ के नाथ दिहलें । तैतीस कोटि देवता देवी वाला ई देश अपना आध्यात्मिक शक्ति से आ आत्म अनुसाशन से जरूर ए पर विजय पाई।
समय काटे खातिर अपनी रुचि के अनुसार किताब पढ़ीं, कुछ लिखीं। टीवी पर रामायण आ महाभारत आवता, देखीं। कुम्भकरण वाला रहन अपनाईं। हनुमान जी की तरे जड़ी बूटी की खोज में बाहर सड़क पर मत जाईं। आराम करत करत यदि थकि जाईं त उठीं सिरिजन पत्रिका के डाउन लोड करीं, पढ़ीं आ अपनी ग्रूप में शेयर करीं ।

रउरे

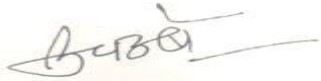

✍ (डॉ अनिल चौबे)
सम्पादक "सिरिजन"

आपन बात

हाय रे कोरोना, दुनियाँ का सोझा बहुत बड़ संकट के रूप में खाड़ बिया ई बीमारी। एकरा चलते त दुनियाँ के गति थम अस गइल बा। बिकास के काठ मार गइल। दुनियाँ के कुल्हि गतिविधि ठहर गइल बा। आजकाल्ह 'मत सट, दुर हट' मूलमन्त्र बनल बा । चीन के वुहान शहर से शुरु भइल कोरोना वायरस गँवें-गँवें विश्व के एक सौ चालिस से अधिका देश के अपना पंजा में दबा लिहलस। एसे उपजल महामारी के कहर अबहीं जारी बा । कई हजार लोग एह बीमारी के चलते आपन जान गवाँ चुकल बाड़ें । एह बीमारी के कवनो इलाज चिकित्सा शास्त्र में अबहीं तक नइखे, बैज्ञानिक लोग एह क्षेत्र में प्रयासरत बा। दुनिया भर के सरकार कोरोना वायरस के बारे में लोगन के जागरूक कर रहल बाड़ी सँ । जानकार लोग के कहनाम बा कि ई छुआछूत के बेमारी ह एसे संक्रमण के फइले से रोक के ही एकरा के काबू में कइल जा सकता । साफ सफाई जागरूकता अउरी रोग प्रतिरोधक क्षमता के बढ़ा के ही एह महामारी से जान बाँच सकता । कोरोना से ना त डेरइला के काम बा ना एकरा से भगला से जान बाँची हिम्मत से लड़ला के काम बा। लक्षण दिखते चिकित्सा केन्द्र में जाके जाँच करावल जरूरी बा । सुखद समाचार बा कि मरीज ठीक होके घर वापस भी जा रहल बाड़ें ।

कुछुवे दिन पहिले सत्ता के केन्द्र दिल्ली के एगो भाग में दँगा के आगि अइसन फइलल कि ना जाने केतना घर झुलस गइले । घर, माल-असबाब का संगे समाजिक सद्भावो जरल, मानवता के बिश्वास का साथे नियम-कानून प्रशासन के डर भी खत्म होत लउकल। आपन देश के पहचान वैश्विक स्तर पर एगो जीवन्त आ बिकासशील लोकतंत्र के रूप में बा । पिछला सात दशक में विकास के शानदार कहानी लिखाइल बा । भारतीय संस्कृति बहुत प्राचीन ह। एकर आत्मा में मानव के उच्च संस्कार के सोरि तरे ले समाइल बा, एके हिलावल आसान बात नइखे ।

चिरई नियन पाँखि लगा के समयइयो आँखि के सोझा से परात चलल चल जाता। फागुन के मस्ती में सराबोर लोकमन फेरु से आपन पुरनका जगह पर काबिज होखे के कोशिश में लागि जाला । जात फागुन अपना संगे हाड़ कपावे वाली ठंढ़ी आ ठार कनकन बयारि के समेटत, प्रखर सुरुज के तपिश के आगवनि के संकेत दे जाला।

चढ़ते चइत मौसम के मिजाज बदल देला, ना ढेर ठंढा रहेला ना ढेर गरमी । खेती बारी के काम में तनिक कमी आ जाला फुरसत में बइठल खेतिहर के मन में फसल के पाके के आनन्द भरि जाला। एह से मदाइल मन चइता के धुन पर थिरके लागेला ।

पुरनका के बिदाई अउरी नवका के सुआगत के महीना ह चइत । सुखल पाखल फेड़ के मोसमात के मांग नियन बिरान डाढ़ि प नाजुक कोमल हरियर नावा पत्तई पनप आवेली । रंग-बिरंग फूल से फेड़ के डहुँगी तोपा जाली, लागेला कि सगरे सृष्टि नवकी दुलहिन के रूप ध लेले बाड़ी । इहे समय ह प्रकृति के नव सृजन के बन्दन के, अभिनन्दन के ।

चइत महीना के शुक्लपक्ष के पहिली तारीख से हिन्दी साल के समहुत होला । पहिला जनवरी के नावा साल मनावे के पाछे हमनीके नकल करे के सुभाव काम कर रहल बा । साँच कहि त हमनीके बिचार, ब्यवहार, संस्कार अउरी शरीर के बिदेशी संस्कृति के चाशनी में लपेट देले बानीं जा । बिदेशी चीझन के प्रति झुकाव ही एकर मूल कारण बा । हमनीके संस्कृति के नीक चीझन के बिदेशी अपना लिहलन सँ, ताजा उदाहरण बा हाँथ जोर के अभिवादन करे क रिवाज, भलहीं एकरा पाछे महामारी के कारन काहें ना होखे। हमनीके ई काम ना कइनी जा । एह लेन-देन के चलते हमनीके आपन संस्कृतिक मर्यादा अउरी आदर्शन के अपना जीनिगी से बहार के बाहर फेंक दिहनी जा । बिदेशी संस्कृति के अपनावे ख़ातिर उतावला हो गईनीं जा ।

अंग्रेजी के नवका साल के मनावल छोड़ल त असम्भवे बा ब्यवहारिक भी नइखे लेकिन ई त होइये सकत बा कि आपन संस्कृति के मूल्यवान धरोहर परम्परा रीति रिवाज के ना छोड़त हिन्दी के नावा साल के भी मनावल जाव । हमनीके पहचान एगो उत्सवप्रिय समाज के रूप में बा, एगो सांस्कृतिक उत्सव फिर लौट आई ।

पहिला अप्रैल से वित्तीय बरिस के शुरुआत करेला उद्योग आ ब्यापार जगत । एह दिन से नावा बही खाता के समहुत होला। पहिली अप्रैल के एगो अलगे पहिचान बा "मूर्ख दिवस" के रूप में। ई रोमन सभ्यता के देन ह जेकरा पाछे के एगो कहानी बा कि पुरनका समय मे रोमन लोग भी पहिला अप्रैल से ही आपन नावा

साल के शुरुआत करत रहे, लेकिन 1852 में पॉप ग्रेगरी अष्टम ग्रेगोरियन कैलेंडर (बर्तमान मान्य कैलेंडर) के शुरुआत कइलन जेकरा आधार पर पहिली जनवरी से नवका साल मनावे के परम्परा चालू भइल । नवका कैलेंडर के आधार मानके नवका साल मनावे वाला लोग पहिला अप्रैल के नावा साल मनावे वाला लोगन के मूर्ख माने लागल तबे से पहिला अप्रैल के "एप्रिल फूल" भा "मूर्ख दिवस" के रूप में मनावे के रिवाज चालू भइल ।

नवका हरियर कोमल पत्तई अउरी रंग बिरंगा फूल से सजल फेड़ । आम के सिर पर शोभत मौर । महुवा के मिठास जब ना सहला त ऊ चु जाला आ ओकर सुगन्ध से मदमस्त हो जाला वातावरण। प्रकृति के ई मनभावन रूप खाली आदमिये के ना देवी देवता के भी खूबे लुभावेला । दुष्टन के करनी से रकति के लोर बहावत मानवता के उद्धार करे खातिर एहि चइत में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के दशरथ नन्दन के रूप में अवतार भइल । ऊ राज परिवार में जनम लिहला के बावजूद नंगे पावँ काँट-कुश, जंगल-झाड़ के धाँगत-लाँघत, आदर्श के अपना जिनिगी के परोजन बनवलन । कतनो बिकट परिस्थिति काहें ना होखे लेकिन मर्यादा के दामन उनकरा हाँथ से छूटल ना । रामनवमी के उनकरा जन्मदिन के रूप में मना के अपना अतीत पर गौरवान्वित होलें सनातन धर्म के मानेवाला समाज ।

चइत शुक्ल पक्ष के षष्टी के दिन मनावेवाला छठ के चइति छठ के रूप मे जानल जाला । कातिक में आपन भक्तन से अगाध श्रद्धा पावेवाली छठी मइया चइत के मधुमास में भी प्रकृति के नवका सिगार के निरेखे बदे एक बेर फिर आवेली।

बैसाख चढ़ते नावा पत्तइ पा के फेड़ रुख हरियर हो जाला अउरी अपना के सुरुज देव के तपिश से बचावे बदे भी तइयार हो जाला । जाँगर के आपन जजात माने वाला भोजपुरिया समाज भी आपन खान पान के बदलि देला । घर मे आइल नवका फसल जौ, रहिला, कबीली के भुज कूट पीस के सतुआ तैयार कइल जाला । सतुआन नवका फसल आ खरमास के पूर्णाहुति के रूप में मनावल जाला । माँगलिक काम भी शुरु हो जाला । नवका आम के टिकोरा के चटनी पन्ना पियाज अँचार के साथे सतुआ गजबे सवदगर हो जाला । पानी पियते छुधा जुड़ा जाला । गरमी के दिन आ पछुआ हवा सीना तनले ललकारत होखे त बेशरम हवा से निपटे में इहे सतुआ काम देला एहि के बल पर भोजपुरिया बघार के मेहनतकश लोग सुरुज देव के बिख नियन घाम के एक ओर टारत अपना काम मे बाझल रहेला। सतुआ नाचत करुआइन दुपहरिया में देह के जरावत हवा पर ठंढा पानी के छिड़काव करत रहेला।

श्रम शब्द सुनते हमनीके कड़ा शारिरिक श्रम के खेयाल आवेला । खेत खरिहान सड़क इमारत कल कारखाना सभकर आधार में श्रम बा श्रमिक बा । इनकरे मेहनत के चलते कुल्हिये सुख सुविधा हमनीके भेंटाता । पहिला मई के मजदूर दिवस के रूप में मनावेला समूचा देश । एहि बहाने समाज मजदूर के भलाई आ उन्नति के बारे में सोचेला । हमनीके के भी कर्तब्य बा कि मजदूरन के साथ जात-धरम, पंथ, लिग, बिकलांगता के आधार पर कवनो भेदभाव ना होखे । खून पसीना के सही अउरी वाजिब मजूरी दिहल हम आप सभकर कर्तब्य बा । सरकार त आपन काम करते बिया ।

सिरिजन के आठवाँ अंक के झपोली में भरल रचनन के मिठास के रउआ सब के सामने परोस रहल बानीं जा । नीक जबून के विवेचना के जिम्मेवारी त राउर बा । सिरिजन के सफर अनवरत जारी रहो एकर उत्साह ख़ातिर परेम - पियार सुझाव के आकांक्षी जरूर बानीं जा ।

राऊर आपन,

तारकेश्वर राय

(तारकेश्वर राय)

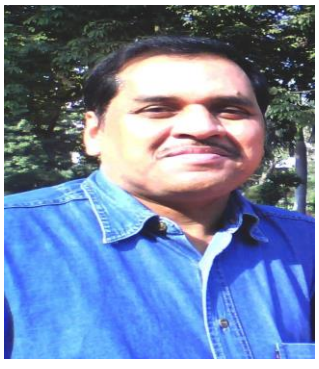

भोजपुरी साहित्य जगत खातिर अपूरणीय क्षति : ना रहलें भोजपुरी के सुख्यात वयोवृद्ध कवि-गजलकार आ सम्पादक जगन्नाथ जी। 15 जनवरी,1934 के बक्सर जिला के कुकुड़ा गाँव में जनमल जगन्नाथ जी भारतीय संचार सेवा, बिहार परिक्षेत्र के उपमहाप्रबंधक के पद से अवकाश लिहला के बाद अंत-अंत तक साहित्य साधना में लागल रहलें ह। इनकर गजल संग्रह "लर मोतिन के "(1977), पाँख सतरंगी (भोजपुरी गीत गजल संग्रह), गजल के शिल्प विधान , भोजपुरी गजल के विकास यात्रा, हिन्दी उर्दू भोजपुरी के समरूप छंद आदि पुस्तक प्रकाशित बा। जगन्नाथ जी भोजपुरी के आधुनिक कविता प्रधान भोजपुरी पत्रिका " कविता " के सम्पादक आ प्रकाशक रहलें। इनका गीत-गजलन के कई विश्वविद्यालयन में पढ़ावल जाला। इनका व्यक्तित्व आ कृतित्व अउर इनका साहित्यिक योगदान के लेके शोधकार्य भी हो चुकल बा। ईश्वर जगन्नाथ जी का दिव्यात्मा के परम शान्ति देस आ उनका समस्त आत्मीय जन के शोक सहे के शक्ति। गोलोकवासी जगन्नाथ जी के भावभीनी श्रद्धांजलि। कोटि-कोटि नमन।

टीम सिरिजन के ओर से

सोशल मीडिया से कुफ़्ताइल कोरोना

चीन के वुहान में जनमल, इटली, स्पेन, अमेरिका, ईरान में गुलछर्रा उडावत जब कोरोना भारत पहुँचल आ अब्बे ओकरा अइले कुछुवे दिन भइल बा तले सोशल मीडिया पर जनता जवन मज़ाक बनवले बा कि कोरोना कुफ़्ता गइल बा। काल्हि अस्पताल का बहरा एगो कोना में कोरोना मुँह पर मास्क लगवले खुदे खाँसत- छींकत भेंटा गइल। दुःखी होके कहे लागल -विश्व में कहीं एतना बेइज्जती नइखे भइल जेतना भारत मे हो रहल बा।

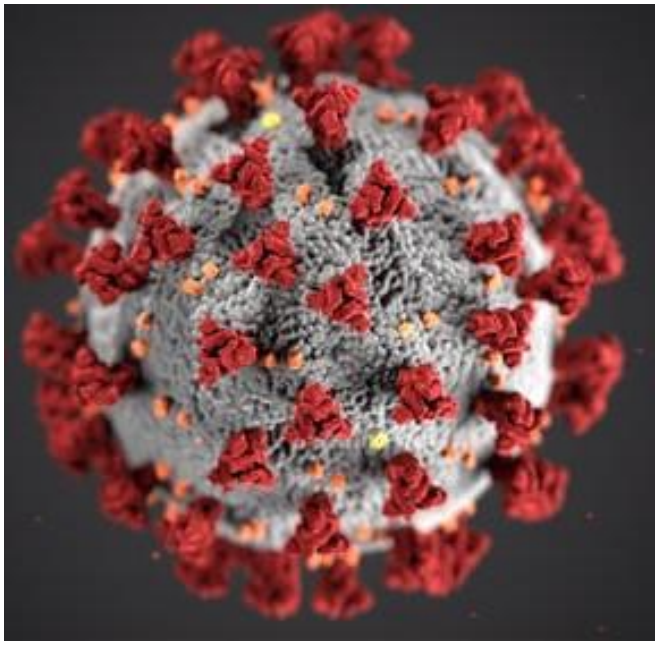

लॉकडाउन में केकरा घरे जाईं? लोग फेसबुक, वाट्सअप आ ट्यूटर पर चुटकुला बनाके, पैरोडी बनाके आ तरह- तरह के टिक टॉक बना के एतना हमार बेइज्जती करता कि अब हमरा केहू के मुँह देखावे के मन नइखे करत आ अइसहूँ केहूँ हमार मुँह देखे नइखे चाहत। उ त भला होखे कोरोनावाल के जे अपनी कुकुरखाँसी से दिल्ली में अइसन माहौल बनवलें कि पलायन करत मजदूरन के सहारे हो सकेला कुछ दिन कहीं अउरी पनाह मिल जाव।एगो टीव्हीवालन से डर लागता कि कहीं चीन्ह गइलसँ त मुँह में माएक डाल के पूछे लगिहनसँ। भारत के लोग से मन उबिया गइल बा। का कहीं, एक जानी त कोरोना केक बना के खात वीडियो शेयर कइले बाड़ी। जवन मरद मेहरारू पर मज़ाक बना के सुनावत रहलें ऊ मेहर की ताना पर गाना बना के सुनावत बाड़ें। जानू की गली में अबे बाबू जाए के चाहत बाड़ें तले पुलिस पिछुआरे एतना लाठी मारत बिया कि बाबू बाबूलाल हो जात बाड़ें। हम त डेराते डेराते पुछुवीं कि तू त खुदे कोरोना हउवे त मुँह पर मास्क काहें लगवले बाड़े। बेचारा सुसुकि सुसुकि के बतावे लगुवे -सोचनीं कि लोगबाग घर से नइखे निकलत त चली बैंक खुलल बा ओहिजा। बैंक जइसे तइसे पहुँचुवीं त गेट पर सूचना साटल रहुवे। कुछ दिन रुपया निकाले मति आईं, बादो में निकल जाई। अबे आइबि त बाद में नामिनी के निकाले के पड़ी। एतना पढ़ते लुत्ती की तरे भगुवीं तले गोबर गली में जवन लात बिछलउवे कि मुँहे की भरे मुतनहर में गिर गउवीं ।तबसे अबले हमार खुद साबुन से हाथ मुँह धोवत- धोवत हाथ मुँह भम्हात बा। बेइज्जती बर्दास्त नइखे होत। लॉकडाउन खुलते कहीं अउर भाग जाइब, बाकी भारत में ना रहब।

✍ **(डॉ अनिल चौबे)**

सम्पादक "सिरिजन"

(कुबेर कविताई से साभार)

हमरो घर मलिकाइनि बाड़ी

जनमे के ऊ हई छबिल्ली,
झाँकेली जस भुअरी बिल्ली ।
अइसन उ सुन्नर लागेली,
जइसे कवनो बुढिया पिल्ली ॥
घर जाई त स्वागत ख़ातिर लेके परे करिखही हाँड़ी।
हमरो घर मलिकाइनि बाड़ी ॥

दुनु हाथ फाँकेली भूजा,
उनुकर पेट हवे तरबूजा ।
हँकड़ी हँकड़ी हमके गरियावे,
एक्के धरम अउर नहि दूजा ॥
साँझी सबेरे अइसन चोंकरे जस चोकरे ललुआ के पाड़ी ।
हमरो घर मलिकाइनि बाड़ी ॥

बोरा अइसन ब्लाउज चाहीं,
एसे पातर पहिरें नाहीं ।
फरका से अइसन लउके जस,
चकुनी हाथी के परीछाहीं ॥
भेंट होत खूने सुखि जाला होले बन्द हृदय के नाड़ी।
हमरो घर मलिकाइनि बाड़ी ॥

बारह बजे त बिस्तर छोड़ें,
चूल्हा चउका से मुँह मोड़े ।
चाह पकउड़ी ना पावे तऽ,
होत भोर अँगना घर कोड़े ॥
ऊ हमार सेवा का करिहें हमही उनुकर धोई साड़ी ।
हमरो घर मलिकाइनि बाड़ी ॥

ॐ यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता ।
हम मलिकाइनि के पूजा करीलें रउरो सभे पूजा करीं ॥

✍पं. कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र'

मुक्तक

जवना आदिमियाँ की घर मे बसेली नाहि,
मधुर बचनियाँ सुनावे वाली कनियाँ ।
तवना का चाहीं घर छोड़ी बन चलि जाऊ,
घरवा त भइलें बिपतिया के खनियाँ ॥

* * * *

साथे रहे मलिकाइनि तऽ,
बन झाड़ पहाड़ घरे बनि जाला ।
बे मलिकाइनि के महलो,
बन झाड़ पहाड़ तरे बनि जाला ॥

* * * *

ऊ घर ना घर हऽ जवना में,
रहें पतिनी नहि प्रान पियारी ।
प्रान पियारी बिना महलों,
ई 'विचित्र कहें कि हवे बँसवारी ॥

* * * *

✍पं. कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र'

(गवई-गांव के माटी में सनाइल लुकाइल केतने माई सुरसती के सेवक बाड़ें जे पर समाज के नजरे ना पड़ल, ऊ लुकाइल भुलाइल रह गइलें आपन सगरी जिनिगी । कविवर पंडित कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र' अइसने एगो गुदरी के लाल भोजपुरी माई के अनन्य सेवक रहले। इ सचहूँ के कविता के कुबेर रहलन। इनकर कुल्हिये रचना भोजपुरिया साहित्यप्रेमी के सोझा आवो एकरा खातिर टीम 'सिरिजन' प्रयासरत बा ।)

डॉ. जौहर शफियाबादी के कुछ गज़ल

लड़ाई हक के बा

लड़ाई हक के बा अपना, जतावल भी जरूरी बा ।
बतावल भी जरूरी बा, बुझावल भी जरूरी बा ।।

कबो ई साँप बहिरा ना सुनी कवनो मधुर भाषा ।
कड़क छिंउकी आ पैना से जगावल भी जरूरी बा ।।

खड़ा तूफान में होके बचावे के पड़ी टोपी ।
घड़ी भर माथ के अपना झुकावल भी जरूरी बा ।।

सही अक्षर के खातिर मश्क करहीं के पड़ी बाबू ।
बनावल भी जरूरी बा, मिटावल भी जरूरी बा ।।

बतावल बा इहे दर्शन से दर्शन जिन्दगानी के।
उगावे खातिर अपना के, डूबावल भी जरूरी बा ।।

कबो जौहर ना देखस कोरा सपना जब दिन में कवनो ।
एही से आज. उनका के घटावल भी जरूरी बा ।।

मुस्कुरा के जे चल सकत नइखे

मुस्कुरा के जे चल सकत नइखे।
कबहूँ दुनिया बदल सकत नइखे।।

जब ले शह ना हवा दे लहरन के।
कवनो दरिया उछल सतत नइखे।।

उड़ सकत बाटे राह के पत्थर।
बाकी लाते कुचल सकत नइखे।।

रौशनी का ऊ दी जमाना के।
जे दिया बन के जल सकत नइखे।।

दोष कागज के का भला बाटे।
खत से आँसू उबल सकत नइखे।।

हंस के जीयल कला हऽ जौहर जी ।
तीर दिल से निकल सकत नइखे।।

घर कइसे फूँकाता

अनबनी में अपनो घर कइसे फूँकाता देखलीं ।
फूल से फल से लदल गछिया कटाता देखलीं ।।

औने- पौने में बिकाता अब इहाँ कुछ आदमी ।
जे करे धोखाधरी अच्छा कहाता देखलीं।।

साधु अनशन में मरल गंगा छछन के रो पड़ल ।
देश भक्ति के नया सीमा खींचता देखलीं ।।

सामने बा लोभ-अहंकार के अब आदमी ।
राड़ के परचा इहाँ हर दिन बटाता देखलीं ।।

मोल-मर्यादा गवाँ के लोग बोलत बा इहाँ ।
झूठ अब साँचे नियर फरहर बुझाता देखलीं ।।

खो गइल जौहर कहीं संवेदना बा आज-काल्ह ।
कुछ रोपाता, कुछ कहाता, कुछ सुनाता देखलीं ।।

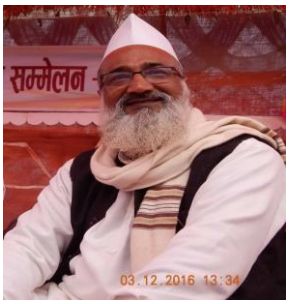

(डॉ जौहर शफियाबादी)

राधामोहन चौबे "अंजन" जी के कविता अउरि जीवन परिचय

अंजन जी के सात गो मुक्तक

1.
जइसे मन करे ले चली चले के बा,
समय का समुन्दर में हले के बा,
एक से सइले केहू-केहू गनेला,
बीचे में लटकि के हाथ मलेके बा ।

2.
हँसलके काल हो गइल,
केतना केतना बवाल हो गइल,
आँखि पर आँखि चढ़ी गइल,
कवनो पियर हो गइल कवनो लाल हो गइल

3.
ना हम बानी,ना हमार बा,
जे कुछु बा, सब तोहार बा,
कवनो गीत होखे, ताल होखे लय होखे,
सबके साथे तहरे सितार बा ।

4.
जले लउकता बा बिटोर ली,
दोसरा के कमाइल ह छोरी ली,
लोग डूबी डूबी के पियत बा,
रउओ हाथ गोड़ जोरि ली ।

5.
सालों भरि लटकले रहेला दउर मति,
लोग लहास बुतावत बा खउर मति
गाँठी पर गाँठी गुरही गनात ढेर बाटे
ऊपर से चिकना-चिकना के चउर मति ।

6.
ध लिहले बा बा याब जाई ना,
ले बीती सकुचाई ना,
बजर बेहाल ई मन बाटे,
साफ डूबल उतिराइ ना |

7.
चकोह में फँसा के ताकतो नइख
साफ मुड़िया गइल बाड़, झाँकतो नइख
लोग खातीर पोथा पर पोथा लिखा जाता,
हमार छोटी चुकी चिटकुना के टाँकतो नइख.।

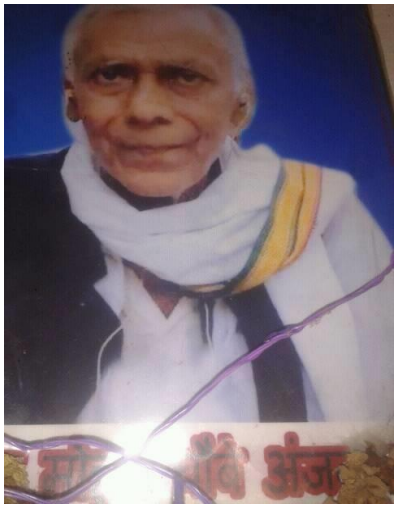

राधामोहन चौबे "अंजन"

कवि, गीतकार राधा मोहन चौबे (अंजन जी) क जन्म दिनांक 4 दिसम्बर 1938 को ग्राम शाहपुर-डिघवा, थाना-भोरे, गोपालगंज जनपद, बिहार में भईल रहे । इहाँ के बाबूजी के नाँव श्रीकृष्ण चतुर्वेदी अउरी माई के नाँव महारानी देवी रहे । बाद में अंजन जी आपन ननिहाल ग्राम अमहीं बाँके, डाक-सोहनरिया , कटेया में स्थाई रूप से बस गइनी । अंजन जी बचपने से कविता लिखे लगनी । बाकि प्रसिद्ध भोजपुरी कवि धरीक्षण मिश्र के संपर्क में अइला के बाद अंजन जी के काव्य प्रतिभा में निखार आइल । अंजन जी एगो प्रतिभाशाली विद्यार्थी रहीं । हाई स्कूल क परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास कइनी । अंजन जी बाद में हिन्दी मे एम०ए० पास कइनी, पास कइला के बाद 19 अगस्त 1959 के शिक्षक के नौकरी मिलल । तब से शिक्षक, प्रधानाचार्य, प्राचार्य, प्रखण्ड शिक्षा अधिकारी, क्षेत्र शिक्षा अधिकारी आदि पद पर काम कइनी और फिर 1 फरवरी 1998 के सेवानिवृत्त भ गइनी । अंजन जी भोजपुरी गीतकार के रूप में मशहूर भइनी । इहाँ के आकाशवाणी पटना आ दूरदर्शन पर भी गीत प्रस्तुत कइनी । अंजन जी कविता अउरी गीतन के अलावा कहानी , उपन्यास और नाटक भी लिखनी । इहाँ के गीतन में गंवई समाज के संवेदना के उत्कर्ष और अपकर्ष क धुरी के चारों ओर नाचत मिलेला । आजो पूर्वी उत्तर प्रदेश के तमाम गायक अंजन जी के गीतन के गा गा के जनमानस के मन्त्रमुग्ध क देला लोग । अंजन जी कवि, गीतकार के साथ-साथ निक पहलवान भी रहनी । अंजन जी के कुल 25 जो किताब प्रकाशित भइली स । इहाँ के पहिलका किताब-कजरौटा, 1969 में प्रकाशित भइल रहे । कुछ अन्य मुख्य प्रकाशित किताबें के नाँव बा -फुहार, संझवत, पनका, सनेश, कनखी, नवचा नेह, अंजुरी, अंजन के लोकप्रिय गीत, हिलोर आदि । अंजन जी के पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद, कोलकाता, मुम्बई दूरदर्शन आदि के द्वारा समय-समय पर सम्मानित भी कइल गइल । अंजन जी क देहावसान 15-01-2015 के भइल, आज उहाँ के हमनी के सोझा नइखी बाकी उहाँ के रचना जब जब पढ़ल जाई तब तब जनमानस उहाँ के जरूर याद करी । बारम्बार नमन बा जमीन से जुड़ल एह कवि, गीतकार के ।

टोकरी भ सुख-दुख

वि जिहीष्व वनस्पते योनि: सूष्यत्या इव।
श्रुत मे अश्विना हव सप्तवध्रीं च मुंचतम्।
भीताय नाधमानाय ऋषये सप्तवध्रये।
मायाभिरश्विना युवं वृक्षं स च वि चाचथ: ॥
- ऋक् ५.७८.५-६

[आहो कठही पिटक,
तू परसउती बदे उतारू
नारी के देह अस खुल जा।
अश्विन,
हमार गोहार सुनऽ
आ उदबेग नाँसऽ।
अश्विन,
तू डरल, मँगता,
धीर रिखियन लो खाती
मायाकाठ के बनल
पेटी के उपभोग लायक
बना देवेलऽ।]

ई अलहदा बात बा कि इहाँ जवन सोझे लउकत बा ऊ ओतिना सोझ नइखे। एजा काठ काठी (काया) के बोधक बा आ सप्तवध्री कायारचना में शामिल पाँचो इन्द्रियन मन आ बुद्धि किवा परान के बाचक बा जवना के बंधहीन भा उन्मुक्त करे के बिनय कइल गइल बा। संसार से भीत धीर ज्ञानीजन के देह मन परान के सुगम आ उपभोग जोग बनावे के अनुनय अश्विनी लोगन से कइल गइल बा। खैर ई परतुक एह बदे कि रूपक भा प्रतीक के रूप में सही, इहाँ वनस्पति रचित पेटी के उल्लेख ई समुझे खाती काफी बा कि टोकरीसाजी के बिकास वैदिक कालो से अगते के चीज ह।

टोकरीसाजी दू-तीन दिसाईं फैलाव वाली चटाई भा पात्र बुनाई के उपयोगी कला ह। एहि में अनेक तरह के फेंड़-पौधन के नँवे जोग तना, तेकर चीरी-कमची लत्तर, रेशा, जनावरन के बार आ एही तरे के आन सामग्री के बेहवार होला। टोकरी बुनाई मानव सभ्यता के विकास क्रम में आम चलन के कारीगरी रहल ह, एकरा बावजूद एकर ईजाद, मौजूदगी आ पुरातनता के ले के कवनो समय निहचित कइल मोसकिल बा। टोकरी के निरमान सामग्री के दीरघकाल तक सुरक्षित ना रखल जा सके ई एकर सबसे बड़ ओजह ह। ऐतिहासिक सबूत ना रहला से एकरा बारे खाली अनुमान कइल जा सकेला, बाकी अतिना त अंदाजा लावल जा सकेला कि मानुस के आहार संग्रही काल में बेगर टोकरी के काम ना चलल होखी। भारतीय सिधु घाटी सभ्यता में टोकरी के चिन्हाँसी मौजूद बा।

शुक्रनीति के अनुसार चौसठ उपयोगी कलाओं में टोकरा बुनाई शामिल बा। संस्कृत में टोकरी बदे कइयक समार्थी शब्द बाड़न। 'करण्ड' (कृ+अण्डन्), 'करण्डिका' (करण्ड+ङिप्, टाप्, ह्रस्व) बेंत भा बाँस के छोट डलिया, संदूकची, पिटारी होत रहे, जवना में आकार के मुखता बा। भर्तृहरि में तेकर वाक्य प्रयोग देखल जाव-

"भग्नाशस्य करण्डपीड़िततनोर्म्लानेन्द्रियस्य क्षुधा,
कृत्वाऽऽखुर्विवरं स्वयं निपतितो नक्तं मुखे भोगिन:।"

[टोकरी में बंद, दुखी, भूख से व्याकुल अउ हताश साँप के पिटारी में रात के मूस बिल क के समा गइल।]

एही धातु से 'कण्डोल' (कण्ड+ओलच्), 'काण्डोल' (काण्डोल्+अण्) जइसन शब्द के उत्पत्ति ह जवन बेंत, नरकुल, बाँस आदि के बनल अनाज रखनेवाली बड़ टोकरी के बोधक हवें। टोकरी खाती 'पटलम्' (पट्+कलच्) संज्ञा में काठ के पातर पट्टी मुख बा, ई ढके-तोपे, अनाज भेयारे के कामे आवत रहे। टोकरी, सनूख बदे 'पिटक' (पिट्+कन्, पिट् शब्दसंघातयो, आवाज, समूह बनावे, इकट्ठा करे के अर्थ में) शब्द के सोरि में 'पेहान' (अपि धान, अपि+धा-ल्युट्, भागुरी के मत में विकल्प से अ लोप) के टकराए से उपजल शब्द ह। पेहानो में ढँके-तोपे, आच्छादन के अरथ बा। इस्तेमाल का आधार प पिटक के 'अन्नपिटक' - "पतयितुमेव शक्तर्नाखोरुद्धतुर्मन्नपिटकम्" (अन्नपिटक के गिरावे के सामरथ मूस में बा, उठाके रखे के ना। - पंचतंत्र १.४१३), 'वित्तपेटा' -

("गंडोपधानवर्तिकृतां वित्तपेटां शनै-शनै विदार्य" - पंचतंत्र २.१०१), 'मांसपिटक', 'मासंकम्' आदि शब्द बेवहार में रहे। बौद्ध धर्म में 'सुत्तपिटक', 'विनयपिटक' आ 'अभिधम्मपिटक' के बहुते महत्व बा, एन्हनि में तथागत के उपदेश संगोरल गइल बा। एसे एह शब्द के पदारथ से भिन्न लक्ष्यार्थ के रूप में प्रयोग के बात सोपट बा, जहाँ पिटक में संचय, संगरह के अरथ तात्पर्य बा। विनयपिटक में भिक्खू लो के उपयोग बदे 'परिभंड' (पेटी) के इजाजत दिहल गइल बा। 'पिट' (पिट्ति इति कः, पिड्यते इति विग्रह पिण्डोऽपि स्यात्।) धातु से बनल पेटा, पिटारा, पेटक, पेटाक, पेटारा, पेटाढ़ा आ स्त्रीलिग रुप में पेटारी, पेटी, पेटिका जइसन शब्द आजु ले प्रयोग में बाड़न। एह सभनि में आकार, बुनावट, सामग्री, उपयोग, छोटाई-बड़ाई आदि के थोरे-थोरे फरक के धेयान प्रयोगकर्ता के जेहन में रहेला।

भोजपुरी में टोकनी, टोकरा/टोकरी के व्युत्पत्ति संस्कृत के 'स्तुच्' (स्तुच्+घञ् = स्तोक। स्तोक+र+इका > थोक्कडिया > टोकरी) से ह जेकर अर्थ मांगलिक भा शुभ होखल होला। एसे ई संकेत मिलऽता कि टोकरी के शुरुआती इस्तेमाल पूजा बिधान आदि में धान्य, फल-फूल, मिष्ठान वगैरह मांगलिक बस्तु के संचय बदे भइल होखी। प्राकृत/देशी शब्द 'चङ्गेरिअ' से बिकसल चंगेली/चंगेरी सींक से बुनल छिछली टोकरी ह, जवना के मुँह चौड़ा आ पेनी क्रमशः सँकरा होत जाला। ई सतह प अडोल रहे एह बदे पेनी में 'गोड़ा' बुनाला।

टोकरी के समार्थी शब्दन में से एगो शब्द ह डाल। एकर मूल प्रकृत/देशी के 'डल्ल' ह। देशी में 'डल्लग', डलकम् शब्दन के बेवहार एही अर्थ में रहे। एहि मूल से डला, डाला, डोलचा, डल्लक पुंलिग आ डलई, डलिया, डाली, डोलची, डली, डेली स्त्रीलिग रूप में बेवहार में बाड़न। डलिया अधिकतर बाँस के पातरि तीली, मूँज, सरपत भा एही तुल तिरिन के मेंही डाँठी से बुनाला, आकार में छोट-मँझोल आ कलात्मक होला। डलउआ/डला बाँस के बारिक रंगीन कमाची से बनल गोलाकार टोकरा ह जेकर प्रयोग तिलक-बिआह जइसन मांगलिक काज में होला। एगो परिछावन गीत में एकर सरूप के देखल जाव-

"सोने डलउआ लेले सरहज ढाढ़े हे
कइसे में परिछों दामाद अलबेलवा हे।"

डाली, मूँज-राढ़ी के बनल छोट पात्र ह जेकर उपयोग फूल-फल वगैरह रखे में कइल जाला। फूल चुने के डलिया फुलडलिया ह जवन गोल, चौकोर भा बेलन के आकार के ढक्कनदार आ मूठदार (हैंडल) होला-

"फूल लोढ़े चलली कवन देई,
हाथे डलियवा लेले हो।
आरे, फूल प के लाल भँवरवा,
आँचर धइ रोकेले हो।"

पान रखे के डाली पानडलिया ह। सैमा पर्स के आकार के होखेला जवन पान-सुपारी, तमाखू रखे के काम में आवेला। साजी आ मटोर एही तरे के छोट डाली हवन। पाकल धान राखे में बड़ टंकीनुमा पात्र डेली ह जवना के दोसर नाँव छींकी ह। घास के तना, कास, सरकंडा आदि के सींक आ मूँज के बनल डलिया के सिकहुता, सिकहुती, सिकौथी, सिकहुती, करुई, डीकी कहल जाला। डलिया के समार्थी मउनी/मौनी के मूल मौञ्जी (मुञ्जस्येयमिति, मुञ्ज+अण् - शब्दकल्पद्रुम) हो सकता, जवन गोटे तौर प मूंज से बनल बस्तु के बोधक ह, हालांकि ई शब्द मूंजमेखला बदे रूढ़ रहे। मोन/मोना/मोन्हाँ के व्युत्पत्ति संस्कृत के 'मोण्' से मानल जाला। साइद मोन्हा के कलात्मकता आ गुंबद अस पेहानी के देखिए के जायसी पद्मावती के नखशिख बरनन में छाती के उपमान 'खरादल बेल' भा 'मोना में मूनल अमोल अमरित' से दिहले बाड़े-

"कुंदन बेल साजि जनु कूंदे।
अमृत रतन मोन दुइ मूंदे॥"

तार-खजूर के पतई से बनल डलिया कुन्ना, कुनिया चंगोर, ठीचा, ठैंचा, बोइया हवें। भौकी खगड़ा (तालपत्र) से बनल चौकोर पेनीं के गहिरा डलिया ह, ढकिया पातरि तल्ली के आ डगरा (देशी 'डगल' से बिकसल जवन फर भा ईंटा के टुकरा के अर्थ में रहे), छीवा बारीक सींक भा बाँस के बड़हन डाली ह।

छींटी बाँस के पातर तीली से बनल सपाट आ गोल डलिया ह जेकर प्रयोग माँड़ पसावे में होला

खेती-गिरहथी में बेगर टोकरी के काम चलल मोसकिल बा। गोबर-गोइँठा, बर-बुहारन, दाना-पानी से लेके बोअनी, ओसवनी, कुटौनी, अनाज के सँगोरन आ संरच्छन तक टोकरी के हजारन भूमिका बा, जवना माफिक काम, तवना माफिक रूप-भेद, आकार, बनावट-बुनावट आ तेही अनुरूप नाँव। बीज बोए के काम में ओड़, ओड़ा, ओड़िया, छँइटा, छँइटी, छींटा, दउरी, बट्टा, उड़ैना बिजबोअनीं आदि के उपयोग होला। खाँची/खौंचा मिठाई आदि रखे के सनूख हवें।

दउरा बाँस के कमाची से बनल टोकरा ह जेकर बुआई के अलावे मुख्य प्रयोग हित-नात, सगा-संबंधी किहाँ फल, मिष्ठान आदि भेजे में होला। ससुरा में पीहरपच्छ के तोख, सम्मान में बढ़ोतरी आ नइहर के संपन्नता के सूचक दउरा के आवनि के अभिलाख हर

बहुरिया के मन में पलत रहे। एगो पारंपरिक संस्कारगीत में बड़ मार्मिक प्रसंग आइल बा। एगो बहुअरि भाई के आवे के इंतिजार में अतिना बेचैन भ गइली कि चेरी से बहरी जा के देख आवे के आदेश दे दिहली कि उनकर भइया घोड़ा चढ़ल आवत बाड़े कि ना? निसंदेह एकरा पीछे उनकर मनसा आपन नइहर के संपन्नता के रोब जतावे के रहे, हकीकत से त ऊ वाकिफ रहले रही। वापिस आ के कहल चेरी के तंज भरल कथन सीधे करेजा के छू जाता जवना में बहुअरि के मन के भाव, ओह जमाना के पारिवारिक, सामाजिक परिवेश सभ बेपरद हो जाता-

"नाहि दिखे दउरवा चडेरवा,
ना पियरी के भरवा ए।
अरी नाहि दिखे घोर असवार,
नइहर तोर निरधन ए।"

दउरा के महत्त्व भोजपुरी इलाका के प्रसिद्ध लोकपर्व छठ में देखे में आवेला। सुरुज भगवान के अरघ देवे बदे सारा पूजन सामग्री आ नैवेद्य से दउरा सजले नदी घाट का ओरि जात स्त्रियन के झुंड के समूहगीत के एगो उदाहरण -

"डोमवा घर से लइहऽ ए तिवई,
दउरवा उधार।
ओइसे ही पूरइहऽ ए तिवई,
छठ्ठी मइया के आस।"

[ए तिवई, डोम घर से दउरा उधार ले अइहऽ। एहि तरि छठ्ठी माई के आस पूरइहऽ।] तात्पर्य ई कि भले बिपन्नता होखे, दउरा कीने के कूबत ना होखे, भले डोम से दउरा उधार लेवे पड़े बाकी छठ्ठी माई के व्रती से पूजन के आसा जरूर पूरा होखे, एह में खलल ना होखे।

गाय-गोरू के भूसा-चारा डाले बदे ओड़ी, औड़ैसा, पथिया, भूसही, गौताही काम में आवेला। चंगेरा, चंगेरी, चंगेली, झाल, झाइन, बटरी (वर्तुल+ई), पटरी (पटल+ई) , मनौटा (मन भर माप) अधिका अनाज रखे टोकरी हवें। छटका

धान भा अनाज रखे खाती बनल लगभग दू फुट घेरा आ चार फुट ऊंचाई के बेलनाकार टोकरी ह। ई बाँस के चौड़ी खपची से चटाई के ढंग के बुनाई में बुनल रहेला। डिमनी बाँस की पतली पट्टी से बनल ढक्कनदार पात्र ह। ई आकार में बड़हन होला जेकर अधिकतर उपयोग जनजातियन में धान आ छिलका सहित दाल इत्यादि रखे में होला। थोरहन सामान रखे खाती पूटली, डलिया, मौनी, फुलकी, बट्टा (वर्तुल) के उपयोग होला। चाकर मुँह के ओड़िया ढाका, ओड़, धामा ह। नरम रहेठा से बनल खाँखर आ बड़हन टोकरा खचिया, खाँचा, खैचा, छाबा, छबड़ा, छबरा, झल्ला, झाबा, झौआ आ थोरे छोट टोकरा खँचोली, झाबी, पथली, नौनिहारी, दमहरिया, कतना, अघोड़ी हवें जवन अधिकतर भूसा, अगवार, डाँटी, करसी, गोहरा आदि ढोवे में काम आवेलें। भाङ्गा पटसन, भांग के तना-रेशा आदि से बनल भूसा ढोवे के बड़ टोकरा ह। खाद, गोबर, सार-बुहारन आदि फेंके खाती छतनी (छत्र>छत), तरौना, बोगिया, गोबराही छँइटी चाकर मुँह के, छतनार होखे से बहुते काम के होले। पुट्टी बाँस के चौड़ी पट्टी से बनल बेलनाकार आ चौकोर आधार के टोकरी ह जेकर प्रयोग साग भाजी, महुआ के फूल रखे में होला। जनजातीय लोग एकर सामान्य तौर प उपयोग करेलें। बाँस निर्मित सूप (शूर्प, शृ+पः ऊश्च नित्) अनाज फटके, झटकारे, ओसावे, पइँचे के काम में आवेला, भोजपुरी में एकरा बदे कलसुप शब्द के बेवहार होला। ओसवनी छँइटी से ओसावे के काज होला। खोदरी पिरामिड के आकार के बाँस निर्मित तोता-मैना पाले के पिजरा ह। बाँसे से बनल गरना-गरनी मुर्गा-मुर्गी पाले के बड़ पिजरा ह। चापुट, गोल थरिया जइसन डलिया जेकर चौड़ाई डेढ़-दू फुट किनारा के ऊंचाई एक इंच होला, परात ह। ई सुखावे-पसारे भा धान रखे के कामे आवेला। खोंपा, टापरा के इस्तेमाल भेंड़ी, बकरी, नवजात बछरू वगैरह के ढँके में होला। छकनी के प्रयोग छाने-पसावे में कइल जाला। तरछा पोस्ता लोढ़े के टोकरी ह।

टोकरी के एगो रूप झपोली, झाँप, झाँपा, झाँपी ह जवन सींक निर्मित ढक्कनदार होला। सींकी मउनी, झँपोली आदि पारंपरिक तौर प घरे-घरे बुनात रहन जवना में औरतन के टोकरीसाजी के नायाब नमूना देखे में आवत रहे। कुछ त समय के जरूरत रहे, कुछ घर के औरतन के समय बितावे के शगल, ई कला गाँव-गिरामिन के जिनिगी से जुरल रहे। झाँपी बाँसो के रंगीन आ बारीक तीली से बनेला। झाँपी औरतन के सौगात के रूप में प्राप्त होखे आ उनकर एकाधिकार में होखे। ई उनकर उपयोग के सामान, कपड़ा-लत्ता आदि रखे के साधन रहे। एक सोहरगीत में झाँपा के बरनन देखल जा-

"झाँपा से कढ़ली साटन सारी,
अवरू पिताम्मर हो।"

झाँपी के उल्लेख बहुत प्राचीन काल से मिलेला। अमरकोश में बाँस के बनल झाँपी के कट् (कटति इति अच्) आ किलिञ्जक ((क्लियतेऽनेनेति) नाँव पर्याय के रूप में बा। पउती, पौती, पौतिया बाँस के पट्टी से बनल औरतन के सिंगार-पटार के सामान रखे के छोट आयताकार टोकरी ह। ए प पेहानी लगावल जाला आ तकरीबन एक फुट लाम आ आधा फुट चौड़ा होला। पर्रा-बीजना

(छोटहन डाली आ पंखा) भा सूपा-बेनी के प्रयोग बिआह उत्सव में होला। भाँवर का बखत लावा बिखेरे में तेकर इस्तेमाल होखेला। 'मात्स्यिकी संसाधन' में मछरी पकड़े के धंधा बहुत पुरान ह। धीवर, मल्लाह, मछुआरा आदि कई मानव जाति के मुख्य पेशा मछरी पकड़े से जुरल रहल। मछरी के धंधा में अनेक तरे के टोकरी के प्रयोग होला। अंटा, आरसी, ओका (चौड़ा मुँह), गाजा, टाप, टापा, टापी, टापरा, टिपारी, डिठोरीः, द्वोपी, परवे, पिट्ठ, पेरवा, सरैला, सैरा आदि मछरी पकड़े के काम में आवेवाली टोकरी भा साधन हवें। कुमनी बाँस के मजगूत पातर खपची से बनल चोंगी (शंकु) अस रचना ह। एकर प्रयोग नन्हीं मछरी धरे में होला। चेरिया बाँस के कनेर के फूल के आकार के साधन ह। एकर उपयोग बहत पानी के धारा से मछरी धरे में होखेला। एह बदे नदी-नारा के ऊ भाग, जहाँ पानी के धार पातर होखे, नाली बना दिहल जाला जे से होके पानी बहे। एकरे मुँहाना प चेरिया लगा दियाला। एह तरे चेरिया से होके पानी बहेला। एकर बंद सिरा में मछरी फँस जाली। चिलवन के समतुल प्रयोग ह जवन बाँस, बेंत आदि के सोझ पातर तना से बनल चटाई अस रचना ह।

टोकरी भा एकर समार्थी शब्दन के कुछ मुहावरेदार प्रयोग देखे में आवेला। कतिना लो' के जरूरी-गैरजरूरी कइ तरे के सामान बिटोरे के लत होला त ऊ भानुमति के पिटारा तइयार क लेवे लें। केहू के नसीब में 'ओड़ी-ओड़ी दुख' होला त केहू 'भर खाँची सुख' में मदाइल फिरेलें। हाकिम-हुक्काम 'डलिया' पवले खुश रहेले।

'परात भ' खाइल आ 'भर छँइटी' ध देल कइ अदिमी के फितरत ह। छूछ बोली में दाम थोरे लागेला? कुछ लोग 'खाँची भ' बधाई उलीचे में इचिको देर ना लावस, भलहीं केहू के उपलब्धि प उनका छाती प साँप लोटत होखे, त कुछ अइसनो होले जे दोसरा के उन्नति प 'ओका अस मुँह बवले' रह जइहें, उनका 'पिटारी' में उछाह बढ़ावे बदे दुगो सबदो के आभाव हो ला।

बीपत के का कहल जाव? ऊ कबो आ सकेला कतो आ सकेला। आपद के निवारन धिरिजा से होला, दोसर कवनो रहता नइखे। अइसना बखत में आपसी सहजोग आदमीयत के तकाजा ह। उदारमन लोग अइसन हाल में आपन 'झँपोली' के कुंडी खोल देले। एहू हाल में समाज बिरोधी खलजन आपन 'पेटी भरे' से बाज ना आवस। विश्वव्यापी संक्रामक बेमारी के हेह माहौल में सरकारी प्रतिबंध आ निर्देश के पालन जरूरी होला बाकी कुछ 'खुला पेहानी' के लोग कवनों कस माने प तइयार नइखन, 'सिकहुती अस पिछाड़ी' लिहले अलबलाइल चलत बाड़न। चलीं अब किस्सा खतम कइल जाव, 'चलनीं का दूसी सूप के जेकरा में खुदहीं सहस्सर छेद'।

टोकरी बदे प्रयुक्त शब्दन के सूची:-

अंटा। अघोड़ी। अन्नपिटक (सं०)। आरसी। उड़ैना। ओका। ओड़। ओड़ा। ओड़िया। ओड़ी। औड़ैसा। ओसवनी। कट्। कण्डोल (सं०)। क्लिजक (सं०)। काण्डोल (स०)। कतना। करण्ड (सं०)। करण्डिका (सं०)। कलसुप। कुन्ना। कुनिया। कुमनी। करुई। खँचिया। खँचोली। खाँचा। खाँची। खैंचा। खोंपा। खोदरी। गरना-गरनी । गाजा। गुबराही। गौताही। चङ्गेरिअ (प्रा०)। चंगेली। चंगेरा। चंगेरी। चंगोर। चिलवन। चेरिया। छँइटा। छँइटी। छकनी। छतनी। छबड़ा। छबरा। छाबा। छाबड़ा। छितनी। छींटा। छीवा। छींकी। छोपा। झपोली। झाँ प। झाँपा। झाँपी। झाड़न। झाबी। झाल। झाल्ला। झौआ। टाप। टापा। टापी। टापरा। टिपारी। टोकनी। टोकरा। टोकरी। ठीचा। ठैंचा। डगरा। डलई। डलउआ। डलकम् (सं०)। डल्ल (दे०)। डल्लक (दे०)। डल्लग (दे०)। डला। डली। डाला। डलिया। डाली। डिठौरी। डिमनी। डीकी। डेली। डोलचा। डोलची। ढकिया। ढाका। तरछा। तरौना। थोक्कडिअ (प्रा०/दे०)। दउरा। दउरी। दमरिया। द्वोपी। नौनिहारी। पउती। पटलम्। पटरी। पथली। पथिया। परभिड। परवे। परात। पर्रा-बिजना पानडलिया। पिट। पिटक। पिटाक। पिटारा। पिट्ठ। पुट्टी। पेटक। पेटा। पेटाढ़ा। पेटारा। पेटारी। पेटी। पेरवा। पेहान। पेहानी। पूटली। पौती। पौतिया। फुलुकी। फूलडाली। बट्टा। बटरी। बाधा। बिजबोअनीं। बोइया। बोगिया। भांडा। भूसही। भौकी। मउनी। मटोर। मनौटा। मासंकम् (सं०)। मांसपिटक (सं०)। मोण् (सं०)। मोन। मोना। मोन्हा। । मौनी। वृक्ष (सं०)। वनस्पति (सं०)। 'वित्तपेटा' (सं०)। साजी। सरैला। सिकहुता। सिकहुती। सूप। सूपा-बेनी। सैमा। सैरा। शिकौथा।

✍**दिनेश पाण्डेय**
पटना, बिहार।

गाँव गिराँव क हाल बेहाल बा

चउपट हो ताटे खेती किसानी।
सभे चउपट करे में लागल बा,
अग्यानी का संगे बड़े बड़े ग्यानी।। 1

गाँव रहे पहिले खाली गाँव ,
त नाहीं रहे एतना परेशानी ।
बने का चक्कर में शहरी,
सभे मिलि के करत बाटे नादानी।।2

पहिले क लोग रहन खेतिहर,
अब होत चलल जाता सभे व्यापारी।
पूँजी क सभे कर ता गुलामी,
लगावत बा एहि क जयकारी।। 3

किसान क शान, अनाज क नाज,
बाजार में जाके दूनों लसराता।
अन्न बिना तरसता किसान,
तबो अन्नदाता कहावल जाता।।4

वोट आ नोट क चोट बड़ा,
बरिआर बा बान्हि रखे अंकवारी।
पूँजी बनल मलिकार बिआ,
अन्नदाता के देखल चाहे दुखारी।।5

खेत में अन्न बोआत रहे तब,
अन्न होखे पैदा खेतवन से।
आज त कर्ज बोआ ताटे खाली,
आराम से मिलि जाता बैंकवन से।।6

सुखो मिले सुविधा भी मिले,
दूनों एके जगह नाहीं जल्दी भेंटालन।
छदाम ना लागेला सुख बदे,
सुविधा बदे खेत क खेत बेचालन।।7

उत्तम खेती कहात रहे,
अब खेती किसानी बेकार कहाता।
केहू पूछे ना बूझे ह का नोकरी,
नोकरी वाला अब होशियार कहाता।8

नोकरी वाला दूर रही घर से,
खेतिहर घरे बाप क गोड़ दबाई,
गोड़ दबावे वाला बा नालायक,
लायक बाप का श्राद्ध में आई।।9

सुनले बानी गाँव क देश ह ई,
सच होखे भले पर झूठ बुझाता ।
गांव में देश बसे भलहीं,
पर देश से गांव ओराइल जाता।।10

गाँव में वोट क बा महिमा,
एसे गाँव क नाँव भी आज लिआता।
ना त गाँव बदे केहू करता का ,
बस बात क रोटी खिआवल जाता।।11

गाँव के बस ओतने सुविधा बा कि,
मरस ना बस प्रान जिआवस।
वोट देबे भर शक्ति रखस,
कुछ सोंचस ना बस वोट गिरावस।12

खेती जो ना बिगड़ी यदि गाँव में,
गाँव से ना खुशहाली पराई ।
एही से खेती बिगारल जाता,
मजदूरी में गांव क गाँव हँकाई।।13

मजदूर किसान सभे के सभे,
अब खेती के मानत बा मज़बूरी।
लइका केहू चाहे खेती जो कइल,
बना शहरी करवावें मजूरी।।14

पहिले चले गाँव से गाँव काम,
गँवे गँवे अब ई भुलाइल जाता।
खाद आ बीआ किनाता बाजार से,
गाँव से गाँव पराइल जाता।।15

गाँव में बाप कहे लइका से कि,
ना पढ़बे त चलइबे कुदारी ।
यानी खेती बेकार बतावल जाता,
बतावत बा खुदे बाप मतारी।।16

खेत रहे पर खेती करे नाहीं,
लइकी बदे अस लइका खोजाता।
गाँव में खेती भी होत रहे,
पर बे नोकरी बर नाहीं सोहाता।।17

लइका जे खेती में लागल बाटे,
बिआह में आवे बड़ा परेशानी ।
नोकरी करे वाला पुछा पहिले,
घहरे खेतिहर का उमंग पर घानी।।18

लोग रहस पहिले बटोरा के,
अब लोग बटोरे में लागल बाड़न।
ढेर बटोरे का चक्कर में,
छिछिआ छिछिआ छितराइल जालन।।19

कहे क ना मतलब बा हमार,
कि बाटे खाली खेतिए सर्वोत्तम।
खाली खेती करीं इहो ठीक ना बा,
बाकी पेट भरी बस खेती में बा दम।।20

जीव जिआवे बदे चाहीं अन्न,
आ अन्न बदे बाटे खेत जरूरी।
खेत बची कइसे खेती ना होखी त,
खेती ही बाटे संजीवनि मूरी ।।21

कहे क ना मतलब बा हमार,
पुरनका जमाना लेआवे के पड़ी।
पर सोंचे के बा यदि खेत ना रही,
अन्नका बदला काखिआवे के पड़ी।।22।

जरूरी बा खेती किसानी बचे,
सबका खातिर बाटे इहे कोलवारी।
फैक्टरी कवनो अन्न ना पैदा करी,
खेतवे आगहूं देइ अन्न 'मुरारी '।।23

✍कृष्ण मुरारी राय,
बलिया, उत्तरप्रदेश

मुक्तक

जिंदगी में बा जरूरी,
बतकही होखत रहे।
बतकही हउए तराजू ,
सबके ई जोखत रहे ।।

*****

सियासी फिजा में जहर घुल रहल बा,
मिटत बा धरोहर जवन कुल रहल बा।
नफ़रत क बीआ बोआताटे फिर से,
कलई शराफत क अब खुल रहल बा।।

*****

दिया अंजोर करे जे डेहरी,
पहिले हिया जरावेला,
धूप छाँव क खेल निराला,
एक जाला एक आवेला,
चादर मिलल बा तोहके जेतने,
ओतने पैर पसार के देख.
कबो कबो मन मार के देख.

ध्रुव प्रहलाद अजामिल मीरा,
गुण जेकर जग गावत बा
राजगुरू सुखदेव भगत सिंह,
अस के देह गलावत बा
भक्त कबीरा भी कहि गइले,
कबो कबो घर जार के देख.
कबो कबो मन मार के देख.

मुशुक देखावत मुसुकी काटत,
जग में आगे बढ़त जा
दुश्मन बाहर नइखे बइठल,
खुद अपने से लड़त जा
कबो ना कबो कइले होखब
खुद से कइल करार के देख
कबो कबो मन मार के देख.

✍कृष्ण मुरारी राय

विशिष्ट विवेचक विप्र जी आ उनकर ' राम काव्य परंपरा में मानस '

आधुनिक भोजपुरी भाषा आ साहित्य के उन्नयन में डॉ. कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' के योगदान अतुलनीय बा। बहुभाषाविद् विप्र जी के मातृभाषा प्रेम आजीवन भोजपुरी साहित्य-संसार के भंडार भरे खातिर प्रेरित करत रहल। बिहार के भोजपुर जिलांतर्गत सोनबरसा गांव के पं. शिवनंदन मिश्र ' नंद ' जइसन सुख्यात बहुभाषाविद् विद्वान ज्योतिष, कवि और नाटककार पिता के घर संवत् १९६५ में जनमल विप्र जी के व्यक्तित्व आ कर्तृत्व बहुआयामी बा। विप्र जी भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के अगुआ महात्मा गांधी के आह्वान पर आपन पढ़ाई-लिखाई छोड़ के सुराज के लड़ाई में खुद के झोंक देले रहस। बिहार आ उत्तर प्रदेश में शराब भट्ठी उन्मूलन, विदेशी वस्त्र बहिष्कार, विप्र जी सन् १९४२ के आंदोलन में बढ़-चढ़के हिस्सा लिहलें।

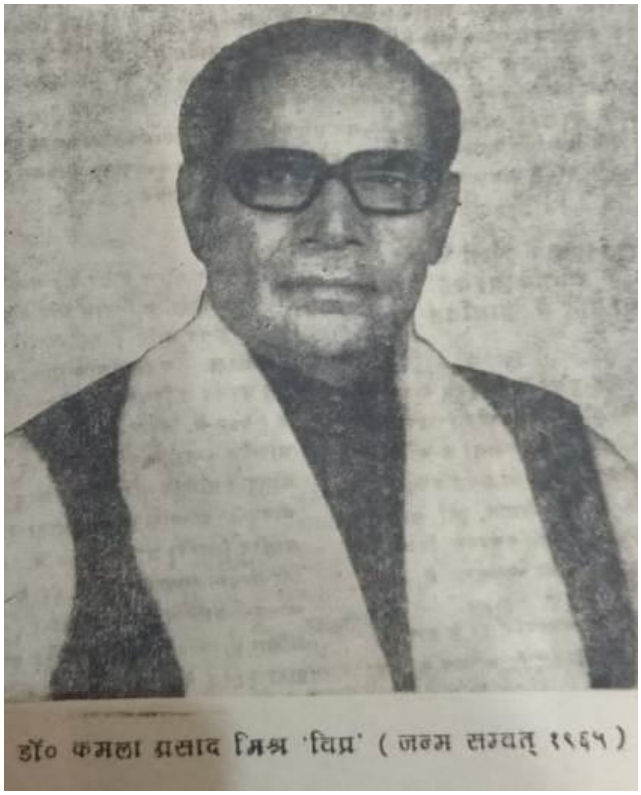
डॉ० कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' (जन्म सम्वत् १९६५)

सन् १९४२ के आंदोलन के बाद उनकर पढ़ाई-लिखाई फिर से शुरू भइल। संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी आदि भाषा-साहित्य के निष्णात विद्वान विप्र जी का बहुआयामी व्यक्तित्व के निर्माण में महामना मदनमोहन मालवीय, आचार्य नरेन्द्र देव, डॉ. सम्पूर्णानंद, लाल बहादुर शास्त्री, डॉ. भगवान दास, पं. लक्ष्मी शंकर ब्यास, बाबू राव विष्णु पराड़कर, सच्चितानंद सिन्हा, खाकी बाबा आदि जइसन विभूतियन के महत्त्वपूर्ण भूमिका रहल। सामाजिक, साहित्यिक, आध्यात्मिक आ पत्रकारिता जगत के मौलिक सेवक, संगठनकर्ता, सर्जक आ साधक विप्र जी के ओजस्विता, निर्भिकता, आशुकवित्व आ वक्तृत्व कला पर लट्टू लोग उनकर एकरस सदाबहार विचार, बाहर-भीतर से एकभावी स्वभाव आ खुद के प्रति निफिकिर-निश्चिंत सुभाव देख के दंग रह जात रहस।

विप्र जी के जीवन पर आध्यात्मिक गुरु खाकी बाबा के विशेष प्रभाव रहे। महर्षि विश्वामित्र कालेज, बक्सर के संस्थापक खाकी बाबा सन् १९५० ई. में विप्र जी का संगे मिल के 'भोजपुरी साहित्य मंडल, बक्सर' के स्थापना कइलें। खुद अपने अध्यक्ष रहलें आ विप्र जी के मंत्री बनवलें। ई संस्था तब से लेके आज तक भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति के विकास-विस्तार खातिर अनवरत लागल बा। विप्र जी खुद अपने सन् १९४० ई. से लेके जीवन के आखिरी छन तक भोजपुरी भाषा आ साहित्य के उन्नयन में लागल रहलें। डॉ. सच्चिदानन्द सिन्हा के प्रेरणा से मातृभाषा भोजपुरी के सेवा में रत विप्र जी के साहित्य-संसार काफी विस्तार लेले बा। उनका प्रकाशित मौलिक पुस्तकन में प्रमुख बा- वीर बाबू कुंवर सिंह (प्रबंध काव्य), वीर मंगल पाण्डेय (नाटक), किसान के बेटा (नाटक), मधुवन (काव्य संग्रह), हीरा के हार (बाल साहित्य), मोती के घवद आदि। एकरा अलावे उनकर अनगिनत कहानी, निबंध आ ललित निबंध भोजपुरी के अनेक पुस्तकन आ पत्र-पत्रिकन में पावल जाला।

बनारस के पत्र ' अग्रदूत ' के सम्पादक विप्र जी बाबू फागू राय के संगे मिल के ' कृषक ' पत्र निकालत रहलें। ऊ शिव पूजन सहाय, केदार मिश्र प्रभात, राहुल सांकृत्यायन, पांडेय नर्मदेश्वर सहाय, पं. गणेश चौबे, राम विचार पांडेय, दुर्गाशंकर सिंह नाथ, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय आदि का संगे मिल के भोजपुरी लेखन आ आंदोलन के दिसाईं कई एक साहित्यिक कार्यक्रम सब के आयोजन करत रहलें। बाकिर जब कुछ भोजपुरी संस्थन आ उन्हन सब के मठाधीश लोग के महंथी आ मठाधीशी बढ़े लागल त आखिर में आजिज आके ऊ अपना के ओह गोल-गरोह

से अलग करके भोजपुरी लेखन तक सीमित कर लिहलें। उनका प्रकाशित रचनन में आयुर्वेद विज्ञान, बक्सर महातीर्थ वर्णन, दुर्गा सप्तशती के भोजपुरी छंदानुवाद, शंकर विवाह (प्रबंध काव्य), राम काव्य परंपरा के मानस आ भारतीय संस्कृति में भगवान शिव आदि त प्रमुख बड़ले बा , उनका अप्रकाशितो रचनन के सूची कम लमहर नइखे ; जइसे - नेता जी सुभाष, भुजा के भोरस, परमाथे फलाहार, भोजपुरी भारती, विश्वामित्र के गुफा से, होनहार बिरवान के लहलह पात, आपन अपने से, खैरातु खलीफा, भोजपुरी लोकगीत में सोहर, भगवान शंकर (महाकाव्य), हनुमन्नाटक, शांति पर्व (महाभारत) आ रामचरितमानस के भोजपुरी छंदानुवाद, कालिदास और तुलसीदास के मधु संचय आदि।

विप्र जी के अनुसार ऊ ' राम काव्य परंपरा में मानस ' जइसन गंभीर समीक्षा ग्रंथ के रचना कविवर केदार मिश्र प्रभात आ अंजोर पत्रिका के संपादक नर्मदेश्वर सहाय के सुझाव पर महाविद्यालय के छात्रन खातिर कइलें। जवन उनका व्यापक अध्ययन-अनुशीलन के प्रमाण बा आ इनका ' विप्र ' उपनाम भा उपाधि के चरितार्थ करऽता। जवन उनका अध्ययन-अनुशीलन आ आचरण के देख के उनका के उनकर गुरुदेव डॉ. सम्पूर्णानंद लिहले रहलें।

मिश्र जी के अनुसार गुरुवर डॉ सम्पूर्णानंद जी का उनका विप्रता के भान विंध्य पर्वत पर भइल रहे आ ऊ मिश्र जी के विप्र उपाधि दिहलें। विप्र एगो स्थिति ह आ ई कवनो वर्ण भा जाति भा कुल के व्यक्ति अर्जित कर सकेला। जे हर तरह के प्रपंच-पाखंड से विलग हो गइल होखे। जे काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ, मस्तर, अहंकार आदि से विलग होके विशेष बन जालें। उहे ज्ञानी-विज्ञानी विप्र कहल जालें। एही से गोस्वामी जी मानस में लिखेलें - 'पूजिए बिप्र सकल गुन हीना।' हर गुन-अवगुन से विलग भइल सामान्य स्थिति ना होखे। अइसे शास्त्र कहेला - ' वेद पाठी भवेत् विप्रः।' भागवत कहता - ' वेदा नारायणः साक्षात्स्वयम्भूरिति।(६.१.४०)। कहे के मतलब कि जेकर वेद अर्थात् प्रगतिशील ज्ञान परम्परा में पइठ होखे। जेकरा सांस-सांस से वेद के ध्वनि निकले। वेद कहेला कि तूं ही ब्रह्म हव। तत्व हव। स्व आत्मा हव। आनंद हव। विप्र गुनातीत हो जालें। तीनों गुन से ऊपर उठ जालें। राग-द्वेष से विलग हो जालें। उसे पूज्य होलें आ जदि वेद के जानकार होइयो जे एह अवस्था के ना पा सके अउर अपना छूद्र स्वार्थ खातिर समय-समाज का हित के नजरअंदाज करे ऊ पूजनीय ना हो सकेला। ऊ वेद के ज्ञाता होइयो के विप्र के समान पूज्य ना हो सके। संस्कार पाके हर शूद्र द्विज, ब्रह्म के ज्ञाता होके ब्राह्मण, क्षात्र धर्म अपना के क्षत्रिय आ लोक कल्याणकारी व्यवसायी होके वैश्य हो सकेला बाकिर ऊ विप्र के स्थिति ना पा सके। जइसे विप्र मनुष्य के सबसे श्रेष्ठ स्थिति ह ओइसहीं शूद्र सबसे सबसे निम्न स्थिति। ई स्थिति में कवनो कुल-जाति के व्यक्ति पहुँच सकऽता। एही से मानस के अरण्य काण्ड में तुलसीदास जी दूर्वासा ऋषि के संदर्भ में कहत लिखलें -' पूजिए बिप्र सकल गुन हीना। सूद्र न गुन गन बेद प्रबीना।।'

मानस में तुलसीदास जी ब्राह्मण वर्ण से इतर कुल में जनमल ऋषि अगस्त्य, अत्रि, बाल्मीकि, जाबालिक, बामदेव, विश्वामित्र आदि खातिर मान सहित सरधा से विप्र सब्द के प्रयोग कइले बाड़न ; जइसे -

' भील जाति करनी कुटिल, धर्म सुना नहीं कान।
सदगुरु के कारन मिला, बिप्र रूप सम्मान।। '

चाहे

' मुनि कहूं राम दंडवत कीन्हा।आसीर्वाद बिप्रवर दीन्हा।। '

चाहे

' नाहीं जन्म देगी मोही साईं। बिप्र पढ़ावत पुत्र की नाई।।'

चाहे

'जहँ तहँ बिप्र बेदधुनि करहीं। बंदी बिरिदावलि उच्चरहीं।।'आदि आदि।

डॉ कमला प्रसाद मिश्र विप्र जी त मानस के अगड़धत विद्वान रहले रहीं। उनका देश-दुनिया के हर भासा में लिखल रामकाव्य परम्परा के ज्ञान रहे। जवना के जानकारी उनका कालजयी समीक्षात्मक कृति ' राम काव्य परम्परा में मानस के अनुशीलन से होता। विप्र जी का एह महान ग्रन्थ के पढ़ला के बाद विप्र जी के अगाध अध्ययन-अनुसंधान आ स्तरीय समीक्षा शैली के त बोध होते बा एकरा संगे-संगे भोजपुरी भासा के अभिव्यंजनो शक्ति के भान हो जाता।

' रचि महेस निज मानस राखा' से लेके ' परम विचित्र एक ते एका ' विषय सूची तक के छतिसो समीक्षात्मक आलेख के अध्ययन मिश्र जी का ज्ञान-विज्ञान भंडार आ अभिव्यक्ति क्षमता के बोधक बा। विप्र जी आदि में ही बानी आ ज्ञानी के मतारी सरस्वती के वंदना करत जवन वर मँगले बाड़न ऊ एह ग्रंथ के लेखन में फलवती नजर आव ता। ऊ माई से इसे माँगत बाड़न -

' बाल्मीकि वाली माई पंतिया पढ़ाईं,
अपढ़ कबीर अस अच्छरि चिन्हाईं।
सूरदास अइसन अन्हपट हटाईं,
दास तुलसी के माई उकुति बताईं।।

विप्र के विनर माई, काई के छोड़ाईं
बुधिया विमल भाई शारदा बनाईं।। '

अद्भुत बा विप्र जी के विमल ज्ञान, बुद्धि आ विवेक। एक ओर त ऊ आपना कथ्य के सिरी गनेस तुलसी के चउपाई से करत बाड़न- ' कवि विवेक एक नहि मोरे ' आ अंत में एह समीक्षात्मक ग्रंथ लिखे खातिर प्रेरित करेवाला मित्रन के प्रति आभार जतावत निराभिमानी विप्रता के स्थिति दरसावत लिखत बाड़न -

' जगत गुरु भारत धन्य, धन्य कथाकारन के
धन्य भोजपुरी, धन्य भोजपुर धाम के।
राम का सनेहिन से पवलीं जे राम तत्व,
सादर समर्पित ई 'राम काव्य' राम के।। '

विप्र जी का एह पांतियन के मोताबिक उनका वैश्विक राम काव्य परम्परा के समहर सेसर ज्ञान सत्संग से ही प्राप्त भइल बा। एकरे के मानस में तुलसीदास जी कहलें - ' सुनि आचरज करें जनि कोई, सत्संगत महिमा नहीं गोई।।' आ ' बिनु सत्संग बिबेक न होई । राम कृपा बिनु सुलभ ना सोई।।'

एही से 'रामायन संत कोटि अपारा ' के परम्परा में मानस के मरमी विद्वान विप्र जी एह पोथी के आकार साकार कर पवलें।

'राम काव्य परम्परा' मतलब ओह कवि-महाकवि लोग के काव्य-महाकाव्य जवन कवनो ना कवनो रूप से राम चरित्र से जुड़ल होखे। आदि कवि बाल्मीकिकृत 'रामायण' आन समस्त राम काव्य कृतियन के मूल स्त्रोत मानल जाला। राम काव्य परम्परा के तीन मुख्य पाद गिनावल-बतावल बा-

'दक्षिणात्य, गौड़ीय आ पश्चिमोत्तरी। जवना के वेद, उपनिषद, पुराण, बौद्ध जातक कथा, जैन ग्रंथ आदि में विविध भाँति से रामकथा के उल्लेख बा। जवना के चर्चा विप्र जी अपना एह समीक्षा ग्रंथ में विस्तार से कइले बाड़न।

श्री सम्प्रदाय के रंगनाथ मुनि, राम मिश्र, यमुनाचार्य, रामानुजाचार्य आदि, ब्रह्म सम्प्रदाय के मध्वाचार्य, के अलावे विमल सूरि के पउमचरियम्, गुणभद्र के उत्तर पुराण, भुवनतुंग के सियारामचरितम्, कालिदास के रघुवंशम्, भवभूति के उत्तर रामचरित, महावीर चरित, कुमार दास के जानकी हरण, जयदेव के प्रसन्न राघव, राजशेखर के बाद रामायण आदि से लेके तुलसीदास के मानस तक के प्राय: अध्ययन के उपरान्त मानस के स्थान तर्कसंगत ढ़ंग से ऊपर स्थापित कइल विप्र जी जइसन विभूतिये का विवेक-बेंवत के बात बा। शक्ति, शील, सौन्दर्य, शौर्य आदि गुनन से सम्पन्न ज्ञान, कर्म आ भक्ति के बीच समन्वित अनुकरणीय महानायक मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के जीवन धर्म-कर्तव्य आ नैतिक जीवन मूल्य के प्रत्यक्ष प्रतीक आ विभिन्न मतन का बीच के भेद-विवाद मिटाके "मानस" राम काव्य परम्परा के सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य बन गइल बा। जवना के सम्यक् सांगोपांग समीक्षा अपना मातृभाषा भोजपुरी में करके विप्र जी बहुत पुनीत काम कइले बानी।

भोजपुरी का एह पहिले समीक्षा ग्रंथ के रचके आ प्रकाशित कराके उहांका भोजपुरी भाषा, समाज आ संस्कृति के पताका वैश्विक स्तर पर फहरवले-लहरवले बानी। विजयानंद तिवारी जी का संपादन में प्रकाशित भोजपुरी पत्रिका 'जगरम' के अंक-६ अगस्त-१९९५ के डा. कमला प्रसाद मिश्र'विप्र' विशेषांक में कई विद्वान लोग से विप्र जी का व्यक्तित्व आ कृतित्व पर विस्तार से लिखवावल बा। एकरा बावजूद अबहीं ले भोजपुरी का एह उन्नायक पर ढंग से शोधकार्य नइखे भइल। विप्र जी के समीक्षा ग्रंथ ' राम काव्य परम्परा में मानस ' पर आपन मंतव्य देत मुक्तेश्वर तिवारी बेसुध जी ठीके कहले बानी - ' राम काव्य परम्परा में मानस ' भोजपुरी में आलोचना के पहिला मानक ग्रन्थ होखी, एह में कवनो सन्देह नइखे। मानस के मरम खाली अवधी लोग नइखे जानत भोजपुरियो लोग जानत बा, ई विप्र जी नीक से जना दिहलीं। '

गुरुदेव डॉ. जितराम पाठक जी के कहनाम अक्षरशः सत्य बा कि ' भोजपुरी भाषा की समर्थता को डॉ. विप्र ने इस रचना के माध्यम से उकेरा है और सिद्ध कर दिया है कि रचनात्मक साहित्य के अलावे आलोचनात्मक साहित्य में भी भोजपुरी पूरी तरह सक्षम एवं समर्थ है।'

✍ **डॉ. जयकान्त सिंह'जय'**
'प्रताप भवन' महाराणा प्रताप नगर
मार्ग सं. - १(सी), भिखनपुरा
मुजफ्फरपुर-८४२००१(बिहार)

किरदार बदलल बा मिता

सूरत उहे, दरपन उहे, किरदार बदलल बा मिता।
कातिल उहे, गर्दन उहे, तलवार बदलल बा मिता।

नदिया चले सागर घरे, खुद के उहाँ पूरन करे,
पानी उहे, पनघट उहे, रसधार बदलल बा मिता।

पूछत रहे जे हाल तब, पीछे परल बनि काल अब,
दुनियाँ उहे, अदिमी उहे, ब्यवहार बदलल बा मिता

सब ब्यस्त जय जयकार में, बुधि-ज्ञान फेंकि इनार में,
नेता उहे, जनता उहे, सरकार बदलल बा मिता।

असवों दियारी ना मनल, निज बाप से बिटवा तनल,
घरवा उहे, दुअरा उहे, परिवार बदलल बा मिता।

उनुका घरे पसरल हँसी, इनका घरे बस बेबसी,
अँखियाँ उहे, अँसुवा उहे बस धार बदलल बा मिता।

रङ में बटाइल लोग बा, कइसन समाइल रोग बा,
काँटा बुवल उद्योग बा, आचार बदलल बा मिता।

अजुवे चललि साजन घरे, अनचीन्ह घर फजिरे खने,
दुलहिन उहे, डोली उहे, ओहार बदलल बा मिता।

✍संगीत सुभाष
प्रधान सम्पादक, सिरिजन।

चइती - कोइलिया, बेध समाइल

तोर गीत लगे रुखराइल,
कोइलिया, बेध समाइल।

शहर- शहर अउ गाँव गलिन के,
उपवन डाढ़िन फूल कलिन के,
तन सहमल मुखड़ा झुराइल
कोइलिया..

अबुझ पहेली समुझ न आवे
गरदन दाबत हँसत रिगावे
रजवो से नाहिं डेराइल
कोइलिया..

असन-बसन तन-तन से दूरी
दरसन परसन में मजबूरी
घरहीं बलकवा हेराइल
कोइलिया..

नागिन डँसति चले बउरा के
आगि लगो एकरा पउरा के
बाप सुत मेहरी बँटाइल
कोइलिया..

के सुनि पाई कहवाँ गइबे
बन्द सजी दरवाजा पइबे
नाक मुँह कनवाँ तोपाइल
कोइलिया..

✍संगीत सुभाष,
प्रधान सम्पादक, सिरिजन।

दोहा-गजल(कोरोना)

कोरोना की भेस में,आइल बा जमराज।
ओकर पत्ता काटि दे,छूवे जेके आज।।१।।

दुनियाँ-दुनियाँ घूमि के,महमारी फइलाइ,
बिन मउगति ऊ मारि दे,बूझे आपन राज।।२।।

लाइलाज ई रोग बा,दावा-बीरो फेल,
चित्ती रहल उपाइ बा,ठप्प भले हो काज।।३।।

बन्दी परलें देश में,लछुमन रेखा खींचि,
घर में घुसरल लोग बा,होखे काज अकाज।।४।।

शहर -गाँव सब सून बा,लउके नाहीं लोग,
ढ़िठई में कुछ लोग बा,जेके डर ना लाज।।५।।

सवधानी के काम बा,मुँह के राखीं ढ़ाँपि,
साबुन से धो हाथ के,क$रीं तेल मसाज।।६।।

छींकल-खाँसल ज$र में,बा एकर पहिचान,
माया ई समुझाइ दें,चेते स$र -समाज।।७।।

✍माया शर्मा
पंचदेवरी,गोपालगंज(बिहार)

श्लेष अलंकार जी के दू गो कविता

नइहरे में .....

नइहरे में रहली
खेलत रहली गोटी
ससुरे में अइली
बेले न आवै रोटी

बाबा के बगियवा
में बूढ़ी कोइलरिया
रोइ रोइ गावै तान
बोलिके बिरहिया

जब जब चढ़ेला
कारे कारे ई बदरवा
लोरवा से भीजि
जाला माई कै अँचरवा ।

सुगना

लाल लाल ठोड़वा
पियर होइ गइलै
पखना गइल अझुराय
सुगनवा...
काहे हो गइला उदास

पिपरा के पतवा
जस उड़ेला सपनवा
मनवा हो जाला गुबार
सुगनवा...
काहे हो गइला उदास

सेमर के भुअवा
जस उड़ि गइलीं मैंना
छोड़ि के जिनिगिया तोहार
सुगनवा...
काहे हो गइला उदास

✍श्लेष अलंकार

नवल भोर

बीस बरीस बाद अचके से मीना एगो रेस्त्रां में अमन के पीछे से ही देख के पहचान लेहली।

"अमन, ए अमन!" - झट से अमन पीछे मुड़ के देखले त मीना के देखते चीन्ह गइले।

गुलाबी बार्डर के उजर साडी में आज भी उहे कोमलता झलकत रहे मीना के चेहरा पर जइसन बीस साल पहिले।

"मीना तूं इहवाँ???" - आश्चर्य भइल मीना के यह

हाल में इहवाँ देख के।

"हँ अमन, बाक़िर तूँ कहाँ चल गइल रहलऽ हमरा के छोड़ के?"

"तूँ अइसन काहे कइलऽ? एको बार ना सोचल हमरा बारे में।" एतना कहते कहत टपटप लोर छुए लागल मीना का आँख से।

"आरे पगली, एहिजे खड़े-खड़े सब पूछ लेबू? चलऽ ओहिजा बइठल जाव।"

एगो कुर्सी खींच के बइठ गइले अमन-

"तुहु बइठऽ मीना, आवऽ।"

दुनो कुर्सी पर आमने-सामने बइठ गइले। मीना के आँख से लोर अभिओ बहत रहे! मीना के मन ना पतियात रहे कि अमन ज़िन्दगी के एह मोड़ पर भेंटा जइहें।

"चुप हो जा मीना, तहरा आँख में एतना आँसू ठीक नइखे लागत। कुछ त बतावऽ मीना, कइसे बाड़ू एह शहर में? का तहार ससुराल बा इहवाँ?"

"का बताईं अमन, हमरा जिनगी में अब बतावे के बचल का बा? जेकरा जिनगी में बस अन्हारे-अन्हार लिखल होखे ऊ ख़ुशी के सवेर के इंतज़ार कैसे करी?"

"अमन, तहरा से बिछड़ला के बाद हमार शादी एगो सेना के बहुत बड़ा अधिकारी से हो गइल बाक़िर हमार दुर्भाग्य इहवों पीछा ना छोड़लस। एक बार फेर बिपत के पहाड़ टूटल हमरा पर। अभी त हाथ के मेहँदी छूटलो ना रहे आउर एगो आतंकी मुठभेड़ में हमार पति शहीद हो गइले।"

एतना सुनते नमन के आँख डबडबा गइल, रुमाल से आपन आँख पोछत अमन बोल उठलें, ई देख मीना परेशान हो गइली।

"मीना,....त फेर तूँ आपन जिनगी के बारे में ना सोचलू कुछ?"

"ना अमन ना, हम त पहिलहीं आपन बिआह समाज के लोक लाज आ आपन बाबूजी के इज्जत बचावे ख़ातिर स्वीकार किनी, दूसर त कबो सोच भी नइखीं सकत। फ़ेर बुजुर्ग सास- ससुर के जिम्मेदारी हम आपन कर्तव्य कइसे छोड़ सक तानी?... खैर छोड़ऽ अमन, हमहू केतना पागल बानी? एतना दिन बाद तूँ भेटइलऽ आ हम आपन दुःख ले के बइठ गइनी।"

"बतावऽ अमन, तूँ अपना बारे में कुछ बतावऽ।"

"मीना, हमार अचानक एक्सीडेंट हो गइल जेमे दुनू पैर फ्रैक्चर हो गइल बाकिर जब ठीक हो के तहरा लगे गइनी त तोहरा बाबूजी के बदली कउनो दूसरा शहर में हो गइल रहे। तोहके हम बहुत खोजनी पर कहीं पता ना लागल।"

मीना नमन के ब्याकुलता पढ़ लेहली।

"फ़ेर का भइल?"

"फ़ेर का मीना, हम जिनगी भर कुँआरे रहे के फ़ैसला क लेहनी।"

"का ,,,,,,,,???? त तूँ शादी ना कइलऽ.....??"

"ना मीना, तोहार जगह केहू ना ले सकेला, आज भी सुरक्षित बा।"

एतना कहके अमन अचानक उदास हो गइले।

मीना के आँख के लोर अब धार में बदल गइल।

मीना खुद के एकर जिम्मेदार माने लगली।

दुनो ओर एकदम सन्नाटा छा गइल।

पानी के गिलास मीना के ओर बढ़ावत अमन कह उठले- "तहरा अगर बुरा ना लागे त एगो बात कहीं???"

प्रश्न के ज़वाब दिहले बिना मीना अमन के मुँह ताके लगली जइसे कि कहत होखस- " बोलऽ अमन।"

"मीना, हम तहरा जिनगी के अन्हरिया मेटा के ख़ुशी के प्रकाश भरे चाह तानी, तोहरा से बिआह क के,.....बोल मीना। ख़ुशी के दीया जरावे चाहऽतानी।"

मीना बिना कुछ बोलले अमन के हाथ थाम लेहली।

दूर सूरज जइसे धीरे-धीरे छितिज़ के आगोश में समाये ख़ातिर आतुर होखे।

✍ **मणि बेन द्विवेदी**
वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

मन अउँजात बा

मन अउँजात तबे, देखि के लिखात बा।
ठेंगा ह विकास तोर, कहवाँ देखात बा?
बिजुरी क तार उहे, अबो करजदार उहे।
चोरी लेखा बरते बा, अबो मजेदार उहे।

छोटका किसान बिल, भरते बुझात बा।
रोज रोज बिल, बढ़े कवन औकात बा?
कहवाँ सुधार भइल, हाकिम अबो खात बा।
तनिको जो हावा बहे, तार टूट जात बा।

गवईं अन्हरिया में अजुओ देखात बा।
डिबरी में तेल नाहीं कहवाँ बँटात बा।

कवन बदलाव कहीं, खाली राम-राम कहीं।
सभहीं त एक्के जइसन, कब घाम-छाँव कहीं।
गाँव क विकास कहीं, झुठवन के आस रहीं।
हेरले हेराय नाहीं, कवने बिसास रहीं।
कागदे पे काम कहीं, सभही के आम कहीं।
ओडीएफ त होय गयल, जेबवे में दाम कहीं।
गाँव परधान कहीं, कवन इनकर काम कहीं।
केहू नाहीं जाँचे इनके, बड़हर दुकान कहीं।

सड़क पर काम देखा, होत निपटान देखा।
झुठहीं क इज्जतघर, ढाँचा बेईमान देखा।
बनल आवास देखा, हाकिम क ईमान देखा।
सिलमिट बालू ईंट, नइखे पुरान देखा।
नया कवनों काम देखा, नवका बिहान देखा।
नाहीं सरकारी बीज, खाद क दूकान देखा।
बतिये में जान देखा, मुँह में किसान देखा।
सुबिधा के नाँव पर, कवनों न काम देखा।

आवा-आवा गाँव देखा, सगरो गिराँव देखा।
गवईं में मनइन के, जिनगी क भाव देखा।
कहाँ अस्पताल बनल, मनई त खूब बढ़ल।
जातिये के नाँव बस, नेता जी के भाव चढ़ल।
दुःख आ शरम बा, बड़हर भरम बा।
जतिये के आगे ई, बिकास त नरम बा।

केहू डेरवावत बा, खूब भरमावत बा।
मूरुखन क मन फेरि, काम के बनावत बा।
हम त निराश बानी, बहुते हताश बानी।
जातिवाद कट्टर देखि, सोझवे उदास बानी।
करनी त देखत बानी, गुनि-गुनि लिखत बानी।
लेकिन एहि पापियन के, बान्हि ओमी फेंकत बानी।
देश क विधान कहीं, कुछ व्यवधान कहीं।
जवन अरक्षण क, रोग प्रवधान कहीं।
तुष्टिकरण मूल इहे, देशवे में शूल इहे।
खण्ड-खण्ड देश करे, असली त रूल इहे।

बड़हर त भूल इहे, झुठहीं क तूल इहे।
लोकतंत्र नाश करे, बंटले क मूल इहे।

✍राकेश कुमार पांडेय
गाज़ीपुर, उत्तरप्रदेश

काजर के कोर से

काजर के कोर से,
खोंच लागल करेजा में!
बात हमार घुसत नइखे
काहे तोहरा भेजा में?
आँख बा तोपाइल तोहार
कुकुर नियन झोंटा से।
मन करे कऽ दीं मरम्मत
तोहार,
सोंटा से।
एड़ी में ठोकाइल बा
घोड़ा नियन नाल ।
ऊरूआ अस भइल बा
पुआ नियन गाल।
ओठ में के लाली
लभेर लिहलू गाली।
जीभी से चाटि-चाटि
बनी गइलू काली।
एही में लुझल बा सारा जमाना ।
केहू के गीत केहू लिखे फ़साना।

✍द्वारिका नाथ तिवारी, बोकारो,झारखंड

मनोहर पोथी

बात लरिकाई के
रहल हमरा पढ़ाई के ।
धुहा फनइती लड़ाई के ।
कांडा के कलम बनाई के ।
टिकिया के सियाही बुकाई के ।
पोथी के सँझवत के देखाई के ।
पिनसिन चबाई के, पीठ पुजाई के ।
आँख मटकाई के, लोटा से पिटाई के ।
मत पूछ हाल भाई, अब हमरा पढ़ाई के ।।

✍द्वारिका नाथ तिवारी, बोकारो,झारखंड

ओका बोका बहुते भईल

ओका-बोका बहुते भइल
अब होता गोड़ धरिया ।
जब अइले धरती पर बबुआ
खूब पिटाइल थरिया।
दिन-दसा पंडिजी देखिके
मनहीं मन मुसुकइले।
जा खिरोधर अइसन लेंढ़ा
तोहरे बंस में अइले?
करिया अक्षर भँइस बरोबर
भाग्य में इनका लिखल बा।
गुन-गरोह ई बबुआ तोहरो
पेटे में के सिखल बा।
नेता बनिके बबुआ एक दिन
करी देश के सेवा ।
हलुआ-पुड़ी, फर-फरहरी
तूँ चभुलइह मेवा ।।
भागी दुख-दलिद्दर तोहरो
लेवा-गुदरी ओढ़ल छुटी ।
रही ना अब लरही बकरी के
रही ना खूँटा-खूँटी।

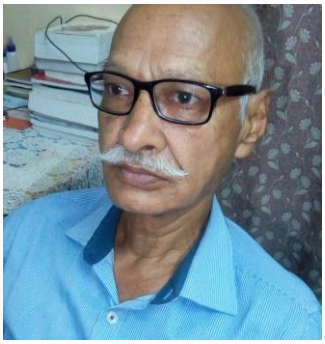

✍द्वारिका नाथ तिवारी, बोकारो,झारखंड

सरस सलिला माँ गंगा

आज हम अपना ओहि माई का बारे में बतावे जा तानी, जे हमनी के जनम त ना देली बाकिर एहि धरती पर के मनुष्य जे भी जाने-अनजाने पाप करम करेला, ओकरा पाप के नाश क के ओकरा के पाप से मुक्ति जरूर दियावेली।

रउआ सब अंदाज़ ज़रूर लगा लेले होखब कि हम कवना माई के महिमा वर्णन करे जा तानी।

जी हाँ, रउआ ठीक जननी ऊ हवी पाप विमोचनी भगवती भागीरथी माई गंगा जी। कहल जाला कि सूर्य वंश के राजा सगर बहुते बलवान धर्मात्मा, कृतज्ञ, गुणवान आ बुद्धिमान रहले। बहुते सुनर आ सुरहुर बुद्धि के रहलें आ बलो बुद्धि ओतने रहे। अपना बल से अपना पिता के सब शत्रुअन के नाश कके सगरे धरती पर आपन राज स्थापित क लेहलें।

कहल जाला कि राजा सगर के साठ हज़ार एक पुत्र रहलें, बाकिर ई राजा सगर के दुर्भाग्य रहे कि उनके सभ पुत्र नालायक, व्यभिचारी आ दुराचारी रहलेंसँ। खाली हर समय ऐशो आराम आ दुराचार में रह सन् आ केहू जे पूजा आराधना, जप-तप करे त जा के ओहमे व्यवधान डाल सन्। साधू सन्यासी लोग के चहेट-चहेट के, दउरा-दउरा के मार सन्। कहे के माने ई कि ऊ एकदमे राछसी प्रवृति के रहलनसँ। अब त चारो ओर त्राहि माम मच गइल। देवलोक आ धरती के सब लोग नकदम भ गइल।

एक बार राजा सगर बहुत बड़ा अश्वमेध जग के अनुष्ठान कइलन। सब देवता लोग सगर के उन्ह दुष्ट पुत्रन से परेशान रहन बाकिर एह अनुष्ठान में ओह राछसन के विनाश के उपाय मिल गइल। फेर का? इंद्रदेव के जवन अश्वमेध जग के घोडा रहे ओकरा के चोरी क के पाताल लोक में तपस्या में लीन महान वीतराग महात्मा कपिल मुनि के कुटिया का लगे बान्ह गइले। एने घोड़ा के ख़ोजत-ख़ोजत सगर पुत्र हार गइले सन बाकिर पृथ्वी पर घोडा कतहीं ना मिलल। ऊ त राक्षस रहलें सन पूरा धरती के कोड़-खन के पाताल तक उहाँ चहुँपि गइलें सन जहवाँ कपिल मुनि का आश्रम रहे। उहाँ जा के ओकनी का हज़ारो सूर्य के

सामान प्रभावशाली महात्मा कपिल मुनि के दर्शन भइल जे अपना तपस्या में पूरी तरह से लीन रहनी आ उनका चारो ओर एगो दिव्य आभा पुंज पसरल रहे। ओइजा आपन घोडा बान्हल देख के ओहनी का आग बबूला हो गइलें सन आ एकदम चिचिया के मुनि जी के गरिआवे लगलें सन- "मारऽ सन्, पकड़ऽ सन्, इहे बूढ़ा हमनीं के घोडा चोरवले बा। ई साधू ना, चोर ह, पापी ह।"

एने तप-ध्यान में लीन कपिल मुनि जी तनिको ना हिलनी। बाकिर ई त आतातायी राक्षस रहलें सन्, जब मुनि जी ना बोलनी त जाके आ उनकर हाँथ-गोड़ बान्ह के मारल शुरू कइलें सन्। बहुत देर बाद कपिल मुनि जी के ध्यान भंग भइल। कहल जाला कि कवनो संत पुरुष के बोलल एको गो अपशब्द ओह वंश के विनाश अकेले क सकेला। संत महात्मा अगर एक बार भी खीस में केहू के घूर के देख देवे त ओकर भसम भइल निश्चित बा, कहल जाला कि भगवान् संत के अपमान करे वाला के कबो ना माफ़ करेलें। संत-महात्मा सदैव मंगल करे वाला ही होला!

बस इतने पर त सगर पुत्र लोग जल के भस्म हो गइल । कहल जाला कि धन आ जवानी के साथ अगर अविवेकता बा त ओकर विनाश भी निश्चित बा। देखते-देखत कपिल मुनि जी के आँख से आगि बरसे लागल ओमे दुष्ट सगर पुत्र तुरंत भसम हो गइलें। एने जब राजा सगर के ई सब पता चलल त दुःख से बेसी उनका ख़ुशी भइल कि उनकर सब नालायक पुत्रन के नाश हो चुकल रहे।

अब राजा सगर कपिल मुनि जी के अपमान जानके बहुते ते दुखी भइलें आ अपना पोता अंशुमान के उँहा का लगे भेजले कि जा के चिरौरी मिंन्ति क के मुनि जी से माफ़ी मांगऽ आ मनावऽ । राजा सगर के पौत्र ''अंशुमान'' बहुते बड़का विद्वान्, चरित्रवान आ भक्त रहलें। अंशुमान खोजते-खोजते पाताल लोक में मुनि कपिल जी के गुफ़ा में पहुँचले आ आदरभाव से साष्टांग नमन किले। हाँथ जोड़ के कहलें कि हे मुनिवर, हमरा बाबूजी के ई दुष्ट भाई रउआ के एतना सतवलें। हे मुनिवर, अब रउआ ओह दुष्टन के माफ़ करीं। रउआ बारे में ओकनी का कवनो ज्ञान ना रहल ह। राउर महिमा अपरमपार बा अब रउआ हमरा पितरन के क्षमा के साथे उद्धार करीं।

अंशुमान के चिरौरी मिनती कइला पर कपिल मुनि जी प्रसन्न भइनी आ उनका के इहे आशीर्वाद दिहनि कि हे अंशुमान, तूँ जा जवन तहार पौत्र होई ऊ भगवान् के आराधना क के सबसे पुण्य सलिला गंगा माई के यह धरती पर ले आयी, तब तहार पितरन के उद्धार हो पायी आ एकनी के पाप कटी।

ओकरा बाद अंशुमान ई आशीर्वाद आ संगे- संगे आपन घोडा ले के राजा सगर का लगे पहुँच गइले। राजा सगर आपन जग पूरा कइले आ विष्णु जी के आराधना क के बैकुंठ धाम के प्राप्त कइलें।

अंशुमान के दिलीप नाम के एगो पुत्र भइले आ दिलीप के भागीरथ। उहे भागीरथ हिमालय पर जा के बहुत ही कठिन तपस्या क के भगवान् ब्रह्मा, विष्णु आ शंकर जी के आराधना कइलें। उनका तपस्या से तीनो देव लोग प्रसन्न भइल आ वरदान मांगे के कहल लोग। भागीरथ हाँथ जोड़ के कहनी कि हे देव लोग हम आपन पितरन के उद्धार खातिर पावन पवित्र मोक्षदायिनी पाप विमोचनी सलिला गंगा मैया के यह धरा पर ले आवे के चाहतानी। तीनों देव लोग आशीर्वाद दिहलें तब जा के त भागीरथ जी गंगा मैया के एह धरती पर ले के अइनी आ आपन पितृ लोग के उद्धार कइनी। इहे जगत पावनी गंगा सगरी जग के पवित्र करत भागीरथ के पीछे पीछे चल देहली आ सगर पुत्रन के भसम के बहवावत अपनों बहे लगली। ओकरा बाद ऊ राक्छस गंगा जी के स्पर्श से वैकुण्ठ धाम चल गइलें सन।

तब से ई मैया गंगा धरती के पाप के नाश कर तानी। तबसे गंगो जी के एगो नाम भागीरथी ह।

जय गंगा मैया।

✍ **मणि बेन द्विवेदी**
वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

(ई लघु उपन्यास राष्ट्रीयता, समाजिक सदभाव के पोषक आ संकीर्णता से दूर आ अश्लीलता से अलग बा, बर्तमान परिवेश में जहाँ क्षुद्र मानसिकता के तांडव हो रहल बा - बिशुद्ध मानवता के ज्योति बिछावे के एगो प्रयास बा । रुचेला उहे पचेला । रुचे त स्वीकार करीं, पढ़ी, सोची आ आपन आशीर्वाद दीहीं । भोजपुरी साहित्य के जोगावे आ पाठक के सोझा लियावे के कड़ी में सिरिजन के ए प्रयास के दुसरका कड़ी रउरा सोझा बा राधा मोहन चौबे "अंजन" जी के लिखल लघु उपन्यास "अतवरिया")

(चारि)

कई बेरि फागुन आइल आ फगुवा के राग, रंग अबीर चमकत दमकत समय का सागर में दहत-बिलात चलि गइल । कमो बेश सगरो महीना साल के, आ, आ के आपन खेल देखावत गुजरि गइल, ना साल बिलमल, ना महीना, ना सप्ताह, ना दिन ना घण्टा । कवनो दिन ओइसन ना भइल जेइसन पहिलका हो गइल, जे लरिका रहे, ऊ जवान हो गइल । जे जवान रहे बुढ़ हो गइल आ जे बूढ़ रहे उ प्रस्थान क गइल । ई समय-चक्र हवे, रोज बदलि जाला । अपना साथे सगरो संसार के बहवावत ले जाला ।

जब सभे बदलि गइल त अतवारो के रुप, रंग,उमिर आ देहि में बदलाव आ गइल, कवना में केतना हेर-फेर हो गइल एकर हिसाब लगावल बड़ा कठिन बा । अतवारो के जवानी आ रूप अइसन लागे सोना फुलाइल होखे । बुझा जे पुआ पर चीनी के चासनी होखे। अगर गाँव भरि के लरिकनी फूल छाप रहरि के दाल होखे सनि त अतवारो दाल में के घीव होखे । जे एक बेरि ताकि दे उ पलक ना गिरावे नीमन चीज सभे देखे चाहेला । नीयत खाम होखे चाहे नेक । सुंदरता देखे के चीज ह आ सुगंध सूंघे के ।

रुप का साथ समझदारी अइसन जइसे धानी रंग का लहंगा में सोना के पाढ मोती के झालर । विचार में ऊंचाई एतना कि

जइसे टाटी के घर मे संगमरमर के सतह, स्वाभिमान एतना कि केहू का हिम्मत ना रहे जे केहू नीमन बाउर बोलि दे । घर के काम, सिलाई-कढ़ाई के काम आ पढ़ाई के काम आ पढ़ाई के काम से फुर्सत कहाँ रहे ।

बड़ा बाबू टटके बी. ए. पास क के घरे आइल रहले । छोटका बाबू अवही मैट्रिक क के कवलेज में भरती भइल रहले । दुनूँ भाई सचहूँ के राम लछुमन की जोड़ी लेखा रहले । अतवरिया के बाप सिबरन बड़का बाबू का बाबू जी के कनफूँकवा चेला रहले । बड़का बाबू के पूरा नाम चिरंजीव पाण्डेय आ छोटका बाबू के पूरा नाम शतजीव पाण्डेय रहे ।

बड़का बाबू बचपने से देश-भक्ति आ समाज-सेवा में बढ़ी-चढ़ि के मन लगावे । देश-विदेश के समाचार गांव-भरि के बतावे । देश खातीर का करे के चाही अपना संगी-साथी लोग के प्रेरणा दें । जब जब बड़का बाबू घरे आवे । गाँव के लरिका, सेयान-बुढ़ सभे जुटी जा , बिहान से साँझी ले मेला लागल रहे ।

पांडे जी के जांगर थाकि गइल रहे । एह से बड़का बाबू घरे रहि के महतारी-बाप के सेवा आ घर गृहस्थी के काम करे चाहत रहले । एको छन बइठि के गप्प-सप्प ना करे ।

आसाढ़ के महीना बादर के बरियाति सजल । हवा की पालकी में सवार होके मेघ देवता जब गाँव के सिवान पर चंवरा में लउकते, त परिछावन करे ख़ातिर एके साथे लाखों आँखि के पपनी के पाँखि उठि गइल, खेत-खेत मे दुआर पूजा कर तइयारी होखे लागल धरती रूपी दुलहन के सिंगार-पटार होखे लागल, बीड़ार में धान के बिया गिरे लागल । जल देवता, उसर-खासर, परती-पसार सबमे धुरछक के पानी छिटले । पियरी पहिरले, बेंग दादुर आपन बेदोच्चार कइले, बेंगुची झींगुर जोड़ी, सारंगी आ तबला पर थाप सुनावल ।

चारु ओरी हरियरी पसरि गइल, दस दिन पहिले जहां धुरा भरल उदासी रहे, उहवे धानी रंग चुनरी लहराए लागल । बेंग लोग के बैंड बाजा सावन के कजरी खातिर अगुवानी करत रहे । जब सगरो तइयारी हो गइल त सावन साजन आ गइले ।

बड़का बाबू छाता लगवले बिड़ार में बिया उखरवावत रहले । अबे अबे पाम्मिह आइल रहे । देहिं में कही आलस के भाव ना रहे । चँवरा में लेव लागल रहे । बिया उखरवा के घरे आवत में चेला सिबरन का दुआर पर बइठि गइले ।

घर मे से लोटा में पानी आ गुड़ (मीठा) लेके जब अतवारो दुआर पर महाराज जी के पानी पीये के ले अइली त बड़का बाबू के आँखि फरफरा के अतवारो का आँखि में जाके सटि गइल । छन में उड़े, छन में जाके सटि जा ।

बड़का बाबू पुछले, "का तूं सिबरन के बेटी हऊ ? कवना क्लास में पढ़त बाड़ू ।"

अतवारो कुछू बोले ओकरा पहिलही अतवारो के माई बता दिहली-कि महराज जी इहे एगो महतारी-बाप की आँखि के पुतरी बाड़ी आ असो इंटर के दोसरका साल हवे । दोसर के बा इनिके जेइसन रु-रंग आ पढनहारी बा इनिका बड़हन घर मे जाए के चाही-बाकी इहे अभागि बा कि हमनी अइसन गरीब का घर मे जनम ले-ले बाड़ी ।

बड़का बाबू समझवले "जे जाति आ धन से केहू बड़हन ना होला । बड़हन ऊ होला जेकर विचार बड़हन होला जेकरा लगे गुन, विद्या आ विवेक होला-उहे बड़हन होला । केहू जनम से बड़ा ना होला ऊ अपना कर्म, करनी आ ब्यवहार से बड़ा होला । "

राउर बेटी, देखि लेबि एक दिन कुल खानदान का साथे-साथे समाज आ देश के नाँव रोशन करी । जवन काम बेटा ना करित ऊ काम अतवारो बेटी होके पूरा करीहें ।

"रउरे लोगिन के आशीर्वाद चाहि । सब लोग आपन आपन बिया कर बोझा महाराज का घोठा पर राखि दिहल । एने अतवरिया आ बड़का बाबू के मन एक दोसर के हो गइल । बरखा के बाद बिछि लहरि ढ़ेर हो गइल रहे ।

एक त पातर डांड़ के रास्ता ओ ओहु में बिछली । अतवारो कहली-जे महाराज पहिलका बरखा में ढेर बिछिली के डर होला ।

महाराज जी कहनी-सचहुँ के रास्ता में ढेर बिछिलहरि बा, जो सइहारि के डेग ना बढ़ावल जाई त गिरि जाए के डर रही ।

दुनूँ ओरी एके तरे लहरि चलत रहे । प्रेम की नगरी में जे घर बना लेला । ओकरा ख़ातिर समाज के कवनो छान-बान्ह काम ना करे । ओह दिन अतवारो गाँव का बाहर आपन खेत देखे निकलल रहली । तले बादर में झमाझम पानी बरिसे लागल । एड़ी से कपार ले भींजि गइली । बड़का बाबू धड़फड़ाइले धान रोपवा के आवत रहले । दुनूँ जाना से बरखे में भेंट भइल रहे । गतर-गतर कपड़ा का भीतर साफ़ लउकत रहे ।

"हमरा से भगिमान त तहार कपड़वा भगिमान बा जे तहरा में सटि गइल बा । जवाब मिलल -

"कपड़वा क घरी सुख भोगी असली सुख त केहू आपने बना के भोगी ए बड़का बाबू । बीछिली के डर ओकरा ढेर होला जे ऊँचे-ऊँचे चलेला ओकरा ना बिछिलइला के डर होला, ना गिरला के ।"

गिरे के चाहे बिछलाए के डर ओकरा जरूर होला जे कनई से बँचे ख़ातिर जूता ना उतारेला जे सुँकुवार होला । हमनी का त हराठी-मराठी हई जा । गिरवो करबि जा त झारि-झुरि के उठि जाइबि जा । बाकी बड़का लोग जब गिरि जाला त ओ में टाइम लागेला, आ ओकरा के उठावे परेला ।

अब उ डाढि पकड़ा गइल रहे जहाँ से फल के झोंप भेंटे में कवनो कठिनाई ना रहे । बड़का बाबू खेलल गोईयां रहले ।

"से त ठीक बा । बाकी रस्तवा का जानत बा जे ई गोड़ सुँकुवार के हवे कि हर वाह चरवाह के ह । ओकरा गोड़ चाही । ऊ का जानत बा जे छोट बड़ का कहाला । ई जरूर बा जे सभे गिरेला ।

"ना ए महाराज जी बड़का लोग का गोड़ में जूता होला, जूता में काँट होला, जवन रास्ता की छाती में हलत जाला । बिछिलाई कइसे । उ बिछिलइवो करी त पक्का वाला जमीन पर । धूरा माँटी वाला डगर में ना बिछिलाई ।

"कहीं ना कहीं त बिछीलाई नूं । "

"आ बिछिलाई त ओके उठावेला बड़की-बड़की बाँहि बाड़ी सनि । हमनी का बिछलइला पर केहू घुमियो के ना ताकी । हमनी के बिछिली बड़का लोग के खेलवाड़ हो जाला ।

अब त बड़का बाबू तनिका देर ख़ातिर असमंजस में परि गइल । बाकी तुरते कहले -

समय आ रहल बा जे बड़का-छोटका दुनूँ का मिलि के डेग उठावे के चाहीं । दुनूँ साथे-साथे चली, बाँहि में बाँहि जोरा के चली त बिछिलइला गिरला के डर ना रही ।

कंठ-कंठ से जीनिगी के रस्ता कुछु साफ बुझाए लागल । जवन दीवार बीच मे खाढ़ रहे-भरभरा के ढहि गइले । अतवारो कहली -

"अइसनो होला जे बड़का हाथ छोटका हाथ के पकड़ि लेला, आ जब नीमन ना लागेला त छोड़ी के दोसरा ओर लपकि जाला ।

बड़का बाबू अतवारो के ओ जगह पर पहुँचि गइले जहाँ बहुत जल्दी सुख-दुख के भाव हो जाला । कहले -

"अइसन नइखे हो सकत अतवारो । ऊ हाथ जवन छोड़ी देत होई । ऊ हाथ ना होके कवनो स्वार्थ आ मतलब होत होई । साँचों के हाथ होई त जीनिगी भरि ना छूटी, बड़का बाबू के पूरा बात सुनहूँ ना पवली आ झटकि के घरे चलली कि गोड़ बिछिला गईल । गिरत कहीं कि बड़का बाबू बाहिं पकड़ी के उठा दिहलें ।

जब बाहिं में बाहिं धराईल त अइसन बुझाइल जे एक छन के मिलन जिनगी भर के पावन गठबंधन हो गइल ।

ई ना पता चलल कि कब दुनूँ पंछी अपना-अपना खोता में पहुँची गइल लोग, घर मे पहुँचला के बादो अइसने बुझा जे अबहिंयो दुनु के हथवा आहीं ते एक मे एक धराइल बा,

सावन के मेह नेह के फुहार बाँटत रहे । जेतने झमर-झमर पानी के टाप सुना ओतने ऊ दुनूँ हाथ कसात जा जईसे सुतरी के रसरी पानी पावते कसा जाला, कड़ा हो जाला आ ओकर गाँठ केतने खोलल जाला, ना खुलेला ।

सावन भरि धान के रोपनी भइल आ एने जिनगी से जिनगी के गाँठ जोड़ात-कसात रहल ।

बड़का बाबू कवनों काँच माटी के मूरति ना रहले ऊ पकिया इस्पात के चमकत-दमकत सरूप रहले । कवनो हवा-पानी उनुके डोला ना सकत रहे । अडिग राष्ट्र प्रेमी, देश भक्त, समाज सुधारक आ धुन के पक्का ।

मार्च 1969 से बंगला-देश (व बेरा के पूर्वी पाकिस्तान) पर पाकिस्तान के बर्बर अत्याचार के दमन चक्र शुरू भईल, रोज़ो रेडियो से जवन समाचार आवे, गाँव भरि के जुटाके साँझी कहा सुनावे ।

ओ बइठकी में अतवारो शामिल होखे । औरतन पर जेतना जुल्म होखे सुनि-सुनि के आँख भरिजा । अतवारो त कवो-कवो कांपे लागे, अतवारो आ बड़का बाबू में जवन अलौकिक सम्बन्ध रहे ओइमे वासना के कहीं स्थान ना रहे-शुद्ध सात्विक-भावना के प्रेम रहे । स्वार्थ के गंध ना रहे खाली परस्पर समर्पण के भाव रहे ।

बड़का बाबू का घोठा से सटले लीची के बगान बा । लीची के डाढि धरती पर ले सोहरत रहेली सनि-गरमी में एतना शीतल छाँह कि बुझाला जे दार्जिलिंग में बनल शीत-गृह के रूप में

कवनो पर्ण कुटीर बनल होखे, जब-जब हवा लहरे त लीची के फल से झुकल डाढि केहू का अगुवानी में बेनिया डोलावत होखे सनि ओही बगान में दू गो प्रान आगे के जीनिगी के रस्ता तय करे के बात बतियावत रहे।

"ए बड़का बाबू रउआ लोगी के मकान के देवाल बहुत ऊँच बा जवना के लाँघ के ताकत हमनी का लगे नइखे-रउआ चाही त लाँघि सकी ले। बाकी तब, जब लवटे के ना होखे।"

"ऊ देवाल पूरन का जुग के जवन मकान होई तवने में बा ए घरी त जेतना मकान बनत बा सब एके हिसाब से बनत बा। चाहे आदमी के होखे चाहे छोट आदमी के, मड़ई पलानी उठि के महल की ओर जा रहल बा, आ महल अटारी झुकि के मड़ई-पलानी की ओर आ रहल बा।

"अइसन होखबो करी त खाली शहरे में देहात में त अइसनो घर बा जवना में जंगला नइखे, केहू झकवो करी त भीतर का बुझाई। जवना में खिड़की आ जंगला नइखे ओहि में ढेर -ढेर रोग आ बियाधि होता। जब बाहर के शुद्ध हवा भीतर ना जाई त भीतर सड़ाध होइबे करी।"

"रउआ पर हमरा पूरा विश्वास बा राउर डेग जेने बढ़ी, हमरो डेग पीछे-पीछे ओहि रस्ता पर चली।"

अतवारो हम तहरा के ओ मन-मंदिर में बइठावे चाहत बानी जहाँ कवनो छल-कपट के घन्टा ना बाजत होखे। तहरा कवल गाटा अइसन रूप के कदर कवनों घस कट्टा नइखे कर सकत, तहार मोल कवनो जौहरिए करी।"

"बड़का बाबू बात ठीके कहत बानी, बाकी जौहरी होखे तब, ओकर कसौटी पक्का होखे तब। ए घरी का ? पहिलहू का जुग से चलि आवत बा-जे रावन अइसन पंडित भीख मांगत माँगत सीता अइसन सती के अपहरन क लीहलसि त कवन ठिक बा जे कवना रूप में के बा ?

रावन के पापे रावण के कुल समेत नाश क दिहलसि, ओह छली कपटी, मायावी, जालसाज के करनी के भरनी मिलबे कइल। रावन आ राम कवनों शरीर ना हवे। एगो सुभाव हवे, एगो विचार हवे जवन साथे-साथे आवत रहेला, जात रहेला। राम सात्विक, परोपकारी, जगहितकारी सदाचारी, धर्म-रक्षक विचार के नाँव हवे, आ रावन, धूर्त, छली, कपटी, मायावी, दुराचारी, अभक्ष्य भक्षक, जालसाज जेइसन विचारके नाव हवे। शरीर त सबके पाँचे तत्व से बनेला-एही में कवनों रावण हो जाला, कवनो राम हो जाला, कवनो राम हो जाला।

"रूप से कइसे चीन्हाई जे के राम बा के रावन बा ?""

बाटे पहचान। असली के रंग पकिया होला आ नकली कलई चढ़ावल रूप धीरे-धीरे उड़ी जाला आ चिन्हा जाला।

"अच्छा त रउआ समाज मे एगो अइसन घर बनाई जवना में ऊंच नीच, छोट-बड़ के भेद ना होखे।"

"जब आदमी डेग उठा देला ता रास्ता अपने आप बनत चलि जाला।"

"ठीक बा रउरा डेग का साथे हमार डेग"।

"एने बतकही खतम भइल आ जवन बादर ढेर देर से घेरले रहे पीटि-पीटि के बरिसे लागल दुन्नु जाना एक छाता का नीचे दूर ले चलत चलि गइल लोग। आकाश में बिजुरी चमके त रास्ता साफ लउके, फेरू अन्हार ओइपर आपन चादर ओढा के चुपा गइल।"

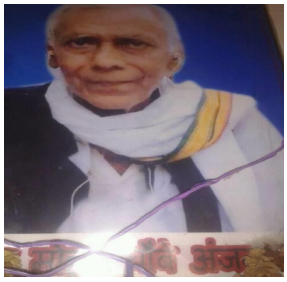

✍राधा मोहन चौबे "अंजन"

(शेष अगिला अंक में)

मुठी में लोक के सम्हारे क निठाह कोशिस-'एक मुठी सरसो'

सद्य: प्रकाशित भोजपुरी निबंध संग्रह 'एक मुठी सरसो' भोजपुरी के युवा तुर्क, कहानीकार, लेखक, कवि के संगे सर्वभाषा पत्रिका के सम्पादक केशव मोहन पाण्डेय जी के कृति ह। आजु जहाँ भाषा के खाति गोल, गोलबन्दी, टाँग खिंचउवल, लंगड़ी मारल सब चल रहल बा, उहवें केशव मोहन पाण्डेय जी देश भर के 42 गो भाषा-बोली के संगे सर्वभाषा त्रैमासिक पत्रिका के सम्पादन कर रहल बाड़ें, ऊ बेगर कवनों अंदेशा के सराहे जोग बा। अपना देश में हिन्दी के बाद सभेले ढेर क्षेत्रफल आ लोगन द्वारा बोले जाये वाली भाषा भोजपुरी में आपन निबन्ध संग्रह 'एक मुठी सरसो' लेके उपस्थित भइल बाड़ें। केशव मोहन पाण्डेय मने भोजपुरी गद्य लेखन के एगो बरियार कंधा जवना का ऊपरी हर हाल में भरोसा कइल जा सकेला। भोजपुरी गद्य क प्रांजल रूप युवा लेखन में कतों लउकत बा त ओहमें केशव जी के लेखन अग्रणी बा।

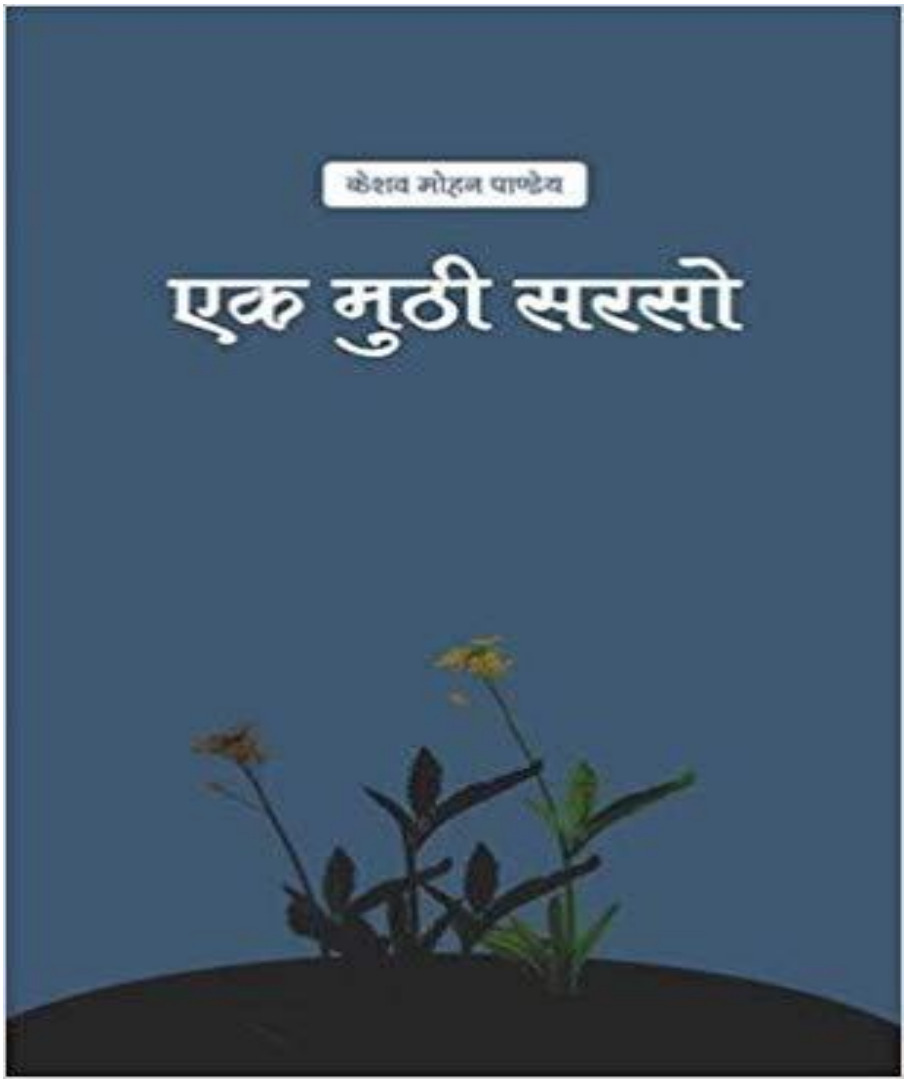

कहानी संग्रह भा उपन्यास के लोग एकसुरिये जरूर पढ़ि जाला अगर ओहमें पढ़निहार लोग के थाम्हे के तागत होला। 'एक मुठी सरसो' निबन्ध संग्रह होखला का बादो अपना भीतरि ई जोगता राखत बा, काहें से कि हमरा नियन असकतियाह मनई एकसुरिये किताबि के ओरिया के साँस लिहलस।

अब आईं इहो जान लिहल जाव कि 'एक मुठी सरसो' में का का बा जवन पढ़निहार के बान्ह के राखे क तागत रखले बा। ओकरा पहिले दू-तीन गो बाति एह किताब के मथैला पर कइल अनुचित ना होखी। पहिलकी बाति जवन बा ऊ 'सरसो' के लेके बा। लेखक आपन पक्ष अपने कहानगी 'एक मुठी सरसो के बहाने' में खोल-खाल के परोस देले बाड़न, तबो कुछ लोग 'सरसो' आ 'सरसों' में अभियो अझुराइल बा। ई उहे लोग ह, जे किताबियन के पढ़ले बेगर गलचउर करेला। अगर एह लोगन के कबों किताब सेतिहे में मिलियो जाला त ओकरा के आलमारी में सजा देवेला। अइसन लोगन के आजु ले इहो ना बुझाइल कि भोजपुरी में जवन बोलल जाला उहे लिखलो जाला। एह बाति के जनले का बादो कुछ लोग अपने आदत से लचार बा। अइसन लोगन के उपचार न लेखक के भीरी बा, ना त हमरे भीरी।

दोसरकी बाति उठावे का पहिले एह निबन्ध संग्रह का झपोलीमें राखल चिजुइयन का देखल बहुते जरूरी बुझाता।

फेर देर कवना बाति के- एह किताबि में लोक संस्कृति आ संस्कारन के सहेजत आठ गो आलेख, नारी विमर्श पर एगो आलेख, पर्यावरण के लेके चेतावत एगो आलेख, स्वतन्त्रता संग्राम आउर धार्मिक चेतना पर एगो आलेख त हइये बा, एकरा संगही भोजपुरी के पहिलका आचार्य कवि पंडित धरीक्षण मिश्र पर एगो सूचना परक आलेख बा। एह चिजुइयन के देखला का बाद इहे बुझाता कि जइसे लोग मुठी में सरसो के सम्हारे के परयास करेला, ओही लेखा लेखक अपना लोक संस्कृति, लोक धर्मिता, संस्कार आ लोक उत्सव के सम्हारे क परयास करत देखात बा। एह विचार से त किताबि के मथेला हर हिसाब से सराहे जोग बा।

तीसरकी बाति हमरा विचार से एह किताबि के भूमिका लिखे वाला विद्वान लोगन के कुछ बातिन के जिकिर इहवाँ जरूरी लागता। डॉ अशोक लव के कहानगी कि "लेखक के मन अपना सांस्कृतिक माटी से गहनता से सम्बद्ध बा।" एह किताबि के पढ़ला पर सार्थक बुझाता। संगही डॉ ब्रजभूषण मिश्र के एह कहानगी से सभे सहमत होखी कि-"केशव मोहन पाण्डेय जी का भाषा में रवानी बा आ पढ़े में मन लागत बा। विषय के प्रस्तुत करत रोचकता बरकरार राखे के उनका में हुनर बा। भोजपुरी का गद्य लेखन का क्षेत्र में केशव मोहन पाण्डेय एगो उमेद जगावत बाड़न।" डॉ ब्रजभूषण मिश्र जी के आकलन क एक-एक आखर हमरा साँच बुझाता। इहो लागता कि पढ़निहार लोगन के साँच जरूर बुझाई।

भोजपुरी के दशा आ दिशा क परख करावत 'एक मुठी सरसो' लेखक के लेखनी के चोखगर धार के आभास सहजे दे रहल बा। पढ़त का बेरा मन अचके ओही धरातल पर चहुँप जात बा जहवाँ के बाति हो रहल बा। संग्रह के पहिलका आलेख 'समुन्दर में समाधि लेत एगो देश' जहाँ लेखक के पर्यावरण के लेके जागृत चेतना क उदाहरण बा, उहवें वैज्ञानिक दृष्टि से सगरी संसार खातिर एगो चेतावनी बा। जवना के नजरंदाज कइल एह सभ्यता के सिरे लटकत आफत के पाहिल सूचना का रूप में देखल जा सकेला।

'आचार्य कवि- पंडित धरीक्षण मिश्र' मथेला के आलेख भोजपुरी के पहिलका आचार्य कवि भा भोजपुरी के केशवदास पर केन्द्रित बा। पंडित धरीक्षण मिश्र के लेखन, कृतित्व आ व्यक्तित्व के एगो आलेख में बान्हल संभव नइखे बाकि ई आलेख आचार्य कवि का जाने आ पढ़े के उत्कंठा जरूर जागा रहल बा। भोजपुरी क्षेत्र में मनावे जाये वाला परब जिउतिया, छठ आ खिचड़ी क उछाह आ ओकर महातिम बतावत आलेख- 'सामाजिक व्यवस्था में छठ के महातम', 'ए अरिआर का बरियार' आ 'खिचड़ी के खिंचखाँच' बा। भोजपुरी संस्कृति आउर नारी लोगन के कंठ आ अपने लोक के बचावे के जुगत के सराहत 'मांगलिक गीतन में प्रकृति वर्णन', 'जनम के उछाह में सोहर के सरसता' आ 'भोजपुरी लोकगीतन में नारी' आलेख रसगर आ मजगर बाड़ें सन। उहवें 'कजरी: लोकगीतन के रानी', 'सदा आनंद रहे एही दुआरे' आ 'भोजपुरिया स्वर में चइता के लहर' बिला रहल भोजपुरिया उत्सव धर्मिता आ त्योहारन के जोगावे के जुगत में लिखाइल पढ़नउग आलेख बाड़ें सन। भोजपुरिया लोगन के जाँगर आ जुझारूपने के स्थापित करत आलेख 'धरम के कोख से जनमल स्वतन्त्रता संग्राम' बा।

ई कुल्हि आलेख तथ्य परक त बड़ले बाड़न सन संगवें भोजपुरिया क्षेत्र के मेहरारून के कंठ में रचल-बसल गीतन के उदाहरण से रसगर आ बेर-बेर पढ़े जोग बनि गइल बाड़ें सन। एह किताबि के पढ़ि के भोजपुरी गद्य के अइसन उजियार पक्ष पर गरब करे क मन बनल आश्चर्य के बाति नइखे। किताबि के सुघर छपाई खाति सर्वभाषा प्रकाशन बधाई के पात्र बा। केशव मोहन पाण्डेय जी के एह दमगर निबन्ध संग्रह के भोजपुरी माई के अँचरा में डाले खातिर अनघा बधाई आ शुभकामना बा। उमेद बा कि भविस में आउर दमगर किताब पढ़निहार लोगन का सोझा जरूर आई।

पुस्तक का नाम-'एक मुठी सरसो'
लेखक-केशव मोहन पाण्डेय
प्रकाशक-सर्वभाषा प्रकाशन, नई दिल्ली
मुल्य- रु 140.00 मात्र

✍जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
सम्पादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

आइ हो दादा, बिदेश से आइल बाड़ऽ का?

समय के साथ चीझन के मतलब बदल जाला । फिलिमी दुनियाँ के बात ले लीहिं । कबो फिलिम वाला लोगन के समाज बहुत सम्मान के नजर से ना देखत रहे गवइया-नचनियाँ भाँड़ के पदवी से नवाजल जात रहलें । मंच प तऽ खूबे थपरी बाजे बाकी मंच से उतरते ऊ सम्मान ना भेटाव समाज मे बाकी आज-काल्हु त उनुकर भगवान नियन पूजा होता। उनके छूअल आ साथे सेल्फी लिहल भगवान के सानिध्य के सुख दे जाता । उचित भा अनुचित के तर्क-बितर्क में फँसला के काम नइखे । आपन जिनिगी आपन शौक । एजा अभिब्यक्ति के बेतरहे आजादी बा ।

एगो जमाना उहो रहे जब आदमी बिदेश से लौटे त ओकर इज्जत आ भौकाल के का कहे के ? चाल में एगो अलगे अलमस्ती दिखत रहे, मतवाला पन के अंदाज दूरे से धुँधराहो लउके वाला के साफ लउके । चेहरा के रौब आ अकड़ बहुत कुछ सरकारी बड़ा बाबू के चेहरा से मेल खात रहे जवन जरूरी मंजूरी खातिर उनकरा लगे अटकल फाइल वाला के देखी के आवेला ।

बिदेश से लौटल साहब लोग के तनी अधिके सम्मान दिहल जाव कुछ अइसने इज्जत जवन पासपोर्ट खातिर दरखास कइला पर जाँच करें आइल पुलिस वाला के दिहल जाला । परिवार के एको सवांग के पासपोर्ट पर अगर बिदेशी बीजा के ठप्पा लाग जाव त पूरा परिवारे के इज्जत आ अकड़ के सूचकांक में जबरदस्त उछाल देखल जात रहे आ गोतिया-देयाद के छाती पर साँप लोट जात रहे ।

बिदेश क मतलब बिदेश रहे, चाहे नाइजीरिया से लौटे चाहे बीजिंग से, चाहे कांगो से, चाहे अमेरिका जापान से, फॉरेन रिटर्न विशेष व्यक्ति के तगमा त लागी जात रहे । अमेरिका में अदिमी भलहीं गाड़ी में गैस भरत होखे, दोकानी पर सहायक के काम करत होखे, लेकिन देश मे अवते ओके एगो पढ़ल लिखल जानकार समझदार नागरिक त मानिए लीहल जात रहे । आपन देश ओके पिछड़ल ही नजर आवत रहे लेकिन ऊ कुल अब पुराना जमाना के बात हो गइल । जब से क्रय क्षमता के बिस्तार भइल बा हवाई यात्रा सस्ता भइल आईटी सेक्टर में नवका पीढ़ी के महारत मिलल तबसे फॉरेन रिटर्न वाला ऊ भौकाल ना रहल । अब हर चौथा घर के लोग बिदेश में बा चाहे ऊ पढ़ल लिखल होखे मिस्त्री होखे मजदुर तबका होखे । अपना गुण हुनर के चलते पूरा बिश्वास काम के जगहा के रूप ध लेले बा । सस्ता टिकट के त ई हाल बा कि सिंगापुर के टिकट अंडमान से भी सस्ता बा । आदिमि सिंगापुर त अइसन घूमे चल जा तान जइसे ऊ इलाहाबाद आ बनारस जइसन निगिचे होखे ।

बिदेश से आइल कमासुत लोग के भौकाल अइसन खत्म हो गइल बा जइसन हिन्दी साहित्य में नामवर सिंह के।
एक दु हफ्ता से फॉरेन रिटर्न फेरु अचके सुर्खी बन गइल बान। खास चर्चा के विषय ई बा कि कवनो बिदेश से आइल आदमी कवनो सोसायटी मोहल्ला शहर गाँव में वापिस आ जाता त दहशत फइल जाता । पूरा समाज उनके चीन्ह जाता, उनकर नाँव जान जाता, उनका से मिले खातिर ना बलु उनका से दूर भागे खातिर अगुता जाता । अइसन लो के देखते हलक सूखा जाता आ रास्ता बदल देता समाज, जइसे अदबद के कवनो बिलारी सामने से रहता काट गइल होखे ।

कुछ दिन पहिले तक फॉरेन रिटर्न कवनो चिन्हकार जब घरे आवे के सूचना दे तो लोग एह लालच से भी ढेर आवाभगत करे कि एहि बहाने बिदेश के कुछ उपहार भेंटा जाई बाकी अब फॉरेन रिटर्न से लोग अइसन मुँह छुपावता जइसे चुनाव जीतला के बाद विधायक जी भोटर से मुहँ छुपावेलन ।

आजु "अतिथि देवो भव वाला मंत्र" बेमानी हो गइल बा । आजकाल ई ठंढा बस्ता में सुस्ता रहल बिया जइसे कवनो सरकारी योजना सुस्ताले । हाय रे कोरोना, ई कोरोना फॉरेन रिटर्न के भौकाल के बाजार के गिरा के धूर में मेरा देले बा । उनकर इज्ज़त के सेंसेक्स मुँहें के भरे लोंघड़ाइल बा जइसे एह महामारी के चलते आपन देश के त छोड़ी पूरा संसार के शेयर मार्केट गिरल बा ।

रउआ साहसी जरूर बनीं लेकिन रउए खाली बुद्धिमान बानी ई गलतफहमी मत पाली । अपना खातिर ना त अपनन ख़ातिर सावधानी बरती । कुछ दिन के बात बा साफ-सफाई आ अपना के समाज से अलग क के रहला के काम बा जेतना कम हो सके बाहर निकलला के काम बा समय के जरूरत इहे बा । आपन समस्या के समाधान त अपने पास रहेला गैर त खाली सुझावे दे सकऽता, मानी न मानी, राउर मरजी, बाकी कहे के मजबूरी ए से बनऽता कि बाँड़ा त जइबे करी नौ हाथ के पगहो ले ले जाई।

✍**तारकेश्वर राय "तारक"**
ग्राम : सोंनहरियाँ, पोस्ट : भुवालचक्क
जिला : गाज़ीपुर, उत्तरप्रदेश

उड़ल जाला दूर सुगनवा

उड़ल जाला दूर सुगनवा, आँखी का देखाईं हो
छूटल जाला हीरा रतनवा, आँखी का देखाईं हो
साथे नाहीं जाला रतनवा, हाथे नाहीं पाई हो...।

रही गइल हरदम मनवा धनवा के फेर में
साथ नाहीं देला ओह सपनवा के फेर में
शीशा रहे टूटल दरपनवा, आँखी का देखाईं हो
छूटल जाला हीरा रतनवा, आँखी का देखाईं हो...।

मरम नाहीं जनलस मनवा साँझ सबेर के
पंछी जइसे अंडा सेवे धनवा सेवलस घेर के
छूटल जाला अंडा जहनवा, आँखी का देखाईं हो
छूटल जाला हीरा रतनवा, आँखी का देखाईं हो...।

धनवा के ढेर पर छतर आज कढ़ले नाग बा
उड़ल परदेस सुगनवा बादी बा ना लाग बा
लिअवले जाला विद्या पवनवा, आँखी का देखाईं हो
छूटल जाला हीरा रतनवा, आँखी का देखाईं हो...।

✍विद्या शंकर विद्यार्थी

फइलल कोरोना

फइलल कोरोना के डर भइया,
अबे घरे जनि अइहऽ।

केकरा के भितरा ई रोग बा समाइल,
चेहरा से ओकरे ना इचिको बुझाइल।
रहता में बरपे कहर भइया,
अबे घरे जनि अइह्ऽ।

घरवा जे अइब संगे रोग लिहे अइब,
डर बा बेमारी के जोग लिहे अइब।
बोउब बिसरवा सगर भइया,
अबे घरे जनि अइह्ऽ।

सच पूछी हमरा बा आउर के चिंता,
राखी, कलाई भाई राउर के चिंता।
रइह्ऽ तूँ घर के भितर भइया,
अबे घरे जनि अइह्ऽ।

बिपदा बा गाँवउ में एकर बा खतरा,
माई अउर बाबू ना आवेलें बहरा।
बीति जाये दुख के पहर भइया,
अबे घरे जनि अइह्ऽ।

✍पंकज तिवारी

प्रीत - मन के भाव

प्रीत मन के भाव ह,
एकर वेयपार ना होला !
दिल के नगदी सउदा हऽ,
कबो उधार ना होला !!

कवनो प्रीत कबहूँ,
चेहरा ना चाहेला चीकन !
ई तऽ बस हो जाला,
एगो दिल देख के नीमन !!

केहू बेमारी कहेला,
केहू दवाई कहे दिल के !
केहू होशवो भूला जाला,
अपना प्रीत से मिल के !!

प्रीत जब हो जाला,
जग के रीत कहाँ सूझेला !
प्रीत के रीत ए जग में,
भला सभे कहाँ बूझेला !!

प्रीत दूगो दिल में भइल,
जब - जब बा आबाद!
अमर भइल उ नाँव तब,
हीर-राँझा भा सीरी-फरहाद !!

प्रीत के रीत बूझल तऽ,
प्रीत के समझदारी ह !
ई रीत निभावल 'संजय',
प्रीत के वफादारी ह !!

✍संजय कुमार ओझा
ग्राम + पो - धनगड़हां, जिला - छपरा , बिहार

कोरोना कर्फ्यू काशी

मस्त शहर अलमस्त नगर अब मस्ती बिन कंगाल भइल हव।
भांग ठंडई छोड़ा मरदे खैनी के हड़ताल भइल हव ।

आइल कोरोना मरकिरौना जान परल हव साँसत में
मुँह तोप के बइठल मनई हिले करेजा खाँसत में
माँड़ भात से काम चले बस कइ दिन देखले दाल भइल हव।

अस्सी वाली अड़ी बंद ह चना चबेना चाय नदारद
घचर-घचर बतिआवे वाला गायब राजनीति के नारद
गुरु बनारसी फोन पे कहलें जिनगी अब जंजाल भइल हव।

सुबह के नश्ता पुड़ी जिलेबी खातिर मन अँउजाइल बा
चाट समोसा लस्सी अब त शहरे छोड़ पराइल बा
मगही पान घुलवले जइसे लागे केतना साल भइल हव।

टीवी पर भी एके बतिया कर्फ्यू और कोरोना के बा
एके रोगवा दुनियाँभर में धइले कोना कोना के बा
खून के आँसू हवे रोववले अइसन चीन चंडाल भइल हव।

दरशन पूजन पर गरहन ह घाट सबे सुनसान परल
चौक गोदौलिया मैदागिन ले लहुराबीर बीरान पड़ल
डीएलडब्ल्यू सुंदरपुर अउ लंका तक बेहाल भइल हव।

आन्ही आवे बइठ गँवावे इहे सूत्र अपनावा जा
जइसे तइसे घर में बइठल एक-एक दिन बितावा जा
खोल केवाड़ी घर से बहरी निकलल अब त काल भइल ह।

✍रत्नेश चंचल
वाराणसी

ओ माय गॉड

कइसन आइल बा जमनवा ओ माय गॉड
थर-थर काँपेला बदनवा ओ माय गॉड।
गुरुकुल से सब चेला गायब गुरु लेत खर्राटा
संबंधन के बोलल जाता रोजे बाय-बाय टाटा
खतम बाएन आ पेहनवा ओ माय गॉड।

कुल्ही शिखंडी घूमत बाड़े बनके बड़का भूप
लोटा आ बलटी के छोड़ीं भंग घोराइल कूप
भिड़िया पागल गज समनवा ओ माय गॉड।
आग लगावे में लोगन के आवत बाटे माजा
चारू देने बाजत बड़ुए जियत चाम के बाजा
लुक्कड़ बहे अगहनवा ओ माय गॉड।

बिलरा के जिम्मे दिहल बा दही के रखवारी
दिने दुपहरे मारल जाले बेचारे बनवारी
तुरला खातीर बैंगनवा ओ माय गॉड।
बोली पर गोली मारे के नया चलन बा चालू
ओकर मान बढ़ल बा सगरो जे निपटे बा भालू
आइल नयका पयमनवा ओ माय गॉड।

✍हरेश्वर राय
सतना, मध्यप्रदेश

छव गो मुक्तक

आईं अब चइत के तइयारी कइल जाव
मारे के करइत के तइयारी कइल जाव
फागुन में ना सूँघलस तबो भय बा भारी
रगर करऽता लठइत के तइयारी कइल । 1।

भाई से बिछोह नीमन ना ह
भाई से बिद्रोह नीमन ना ह
ठेन से रथ के टूट जाला धूरी
ठेन के गिरोह नीमन ना ह। 2।

समय जब ना चाहीं त आदमी पिसाई ना
अंहकार के हाथ से भी आदमी मिसाई ना
रह जाला किल त के दाना सुबहित देख ल
चहिओ के भी केहू के सुख केहू मिटाई ना। 3।

ठेस लाग जाई ए बाबू अँगुरी बिधुना जाई
चेतऽ कोशिश करऽ ना त ऊ दिन आ जाई
घइला से घइला लड़ेला नासमझी में इहाँ
लोग बउए कि पाई मवका तऽ लड़ा जाई ।4।

छूँछे कतना दिन कटी ए साहेब
लइका कतना खरकटी ए साहेब
महँगी बा कि गेंड़ुर मारके बइठल
चिल्हबाजी चली कि हटी ए साहेब ।5।

राउर कमीज के इतर इतराता
हमार पसेना भीतर छितराता
आईं तबो चइत के चोन्हाये दीं
माँजी ना लोटा बा पितरियाता । 6।

✍विद्या शंकर विद्यार्थी

परिवर्तन

निर्देश - सुमेसर आइल अतिथि के स्वागत करताइन। आ पुछताइन।

सुमेसर - (बइठत) भाई साहेब, लइकी देखलीं, अब हिरदय के बात बतायीं कइसन लागल रउरा ?

धनेसर - हमरा त राउर सेवा सत्कार नीमन लागल आ लइकियो राउर ठीके बिया, बाकि...।

सुमेसर -(चिहा के) बाकि..तब बाकि कवन बात के भाई साहेब ?

धनेसर - लइकी जात के प्रति राउर सोच ऊ नइखे जवन आज के समय में एगो बाप के होखे के चाहीं, अब सेयान भइल त भार टारे के फेर में परल बानीं।

सुमेसर - हमरा अइसन बेटी के बाप के अइसन चोट ?

हमरा सोच में का कमी नजर आ गइल रउरा। बाप के बेटी जहमत ना होली। का बात लेके रउरा कह दिहलीं कि हम भार टारे के फेर में परल बानीं?

धनेसर - ढेर आदमी बा कि साँच बरदास ना करे।

सुमेसर - हम राउर साँच बात बरदास करब, करब दूर आपन कमी। हमार कमी बतायीं, भाई साहेब।

धनेसर - त सुनीं, राउर दूगो लइका आइल हवनसँ, दूनो के चेहरा हम बरत पवलीं आ हाथ गोड़ चिकन-चिकन। एगो बाप के बेटिओ के प्रति त इहे धेयान होखे चाहीं जवन लइकन के प्रति बा आ कि....।

सुमेसर - हम राउर इसारा समझलीं ना।

चतुर - समझीं, जमाना कहाँ से कहाँ चल गइल। बेटी के बाप बानीं रवाँ। अब धेयान के नु जुग आ गइल बा।

सुमेसर - हँ आ गइल । हम ई बात नहकारत कहाँ बानीं।

धनेसर - रउरा अपना पानी प बानीं ? से हमरा से बतायीं।
सुमेसर - हम हर बखत अपना पानी पर रहीला आ अबो अपना पानी पर रहब । बचन देत हईं ।
चतुर - इहाँ के बंद आँख खोल द धनेसर भाई कि बेटी जात के भलाई हो सके आ लोग भी बेटी जात में बेटा के भावना ले आ सके।
धनेसर - रउरा दुनो बेटन के गोड़ पर कवनो घाव के दाग ना रहे आ बेटी के रहे, ई काहे ?
सुमेसर - फोरा फुँसरी में बाप के कवन, का दोस बा?
धनेसर - त कवनो खासियतो त नइखे कि बेटी जात घाव से सरे, आ घाव बजबजा के ढेर दिन पर अपने आप नीमन होखे आ भरे। भाई साहेब, घाव के दाग बतावेला केतना तत्परता देखावल गइल बा इलाज में। केतना समझल गइल बा बेटी खून के तकलीफ। तकलीफ ओह घाव के राउर बेटी झेलले बिया कि रउआ ? सुमेसर - क्षमा करीं भाई साहेब, हमार गलती माफ करीं। ई हमरा से बहुत बड़हन गलती बा। हम बाप होके एहिजा चुक गइल बानीं, भुला गइल बानीं आपन दायित्व ।
चतुर - अइसन चूक स्वीकार करे ओला कवनो इंसान अब भभिस में चूक ना करिहें आ बेटी जात के घाव सर के ना बजबजायी। जवन बाप अइसन खेआल करी तवन कसाई में गिनाई ।
धनेसर - बेटी जात के परिवर्तन के धरातल चाहीं आ बाप के हिरदय में बेटा माफिक जगह।
चतुर - जब भाई साहेब तइयार बानीं त सनसार के हर बाप तइयार रहिहें। ना केहू सतायी आ ना केहू दहेज मांगी।
(परदा गिरत बा)

✍विद्या शंकर विद्यार्थी

बिरहिन के हूक

अमवाँ की डरिया प बोले कोइलरिया,
चिहुँकि उठे ना -
धनी सजलि सेजरिया चिहुँकि उठे ना ।।

दिनवा में चैन नाहिं निन्दिया ना रतिया ।
हियरा हहरि जाला धड़केला छतिया ।
चेहरा बेरंग भइलि परलि फेफरिया,
छलकि उठे ना -
नैना सँझिया के बेरिया छलकि उठे ना ।।

सोरहो सिंगार करे सजे धजे गोरिया ।
मेहदी महावर लाली लावे पोर पोरिया ।
भूलले भूलाये नाहिं पिया के सुरतिया
कसकि उठे ना -
हूक उठेला करेजवा कसकि उठे ना ।।

झुमका झुलार मारे हिले सीता हरवा
नथियाँ गुलेल करे बिन्दिया लिलरवा
कमर करधनिया आ पग के पयलिया
झमकि उठे ना-
हाथें कनक कँगनवा झनकि उठे ना।।

पूनम के रात लागे झक-झक इँजोरिया
मास मधुमास में उदास बा सेजरिया
केस में हजरवा चमेली के गजरवा
महकि उठे ना-
दूनो आँखि से कजरवा ढ़रकि उठे ना।।

✍अमरेन्द्र सिंह
आरा, बिहार

मोह मे भुलाइल बाड़ू कहँवाँ

मोह मे भुलाइल बाड़ू कहँवाँ
मोह मे भुलाइल बाड़ू कहँवाँ
कइसन उत्सहवा बाटे ए राम
एक त में बर बउरहवा
दुसरे दोअहवा बाड़न ए राम
एक त,,,,,,,

गरे अजगरवा कटहवा
साधन बसहवा बाड़न ए राम
पथले पर सुतेलें सनकहवा
पागल ई जटहवा बाड़न ए राम
एक त,,,,,,

खान-पान सगरो मतहवा
जबर जर्तुअहवा बाड़न ए राम
सेवे मुर्दा घटिया के जहवा
अवँघड़ भुतहवा बाड़न ए राम
एक त,,,,,,,

चिन्हऽ गउरा हमहीं सतहवा
काटहीं बियहवा अइनी ए राम
हृदया विशाल के सलहवा
सहिये जगहवा शोभे ए राम
एक त मे,,,,,
एक त,,,,,,

✍कवि हृदयानंद बिशाल

मुँहवा खोलत नइखी

काहे दु तS रुसल बारी धनिया हमार
कुछुओ बोलत नइखी।
पुआ नियन गाल आँख कइले बाड़ी लाल
मुँहवा खोलत नइखी।

हाथ-गोर पिटS तारी लागता कि लड़ लिहे,
खोजत बारी रार मार बाची नाहीं कर लिहे।
कतनो मनावत बानी धइले बारी जिद,
तनिको डोलत नइखी।

खाली फुफुकारत बाड़ी, ममिला बिगारत बारी,
लागत बाटे डर हमके अइसन निहारत बारी।
माटी में मिलवली हमर कइल धइल सारा
दिल के तोलत नइखी।

जाने कवन चूक भइल कहती त जान जइती,
करतीं उपाय कवनों धनी हमर मान जइती।
सुने खातिर बोल इनकर तरसत बा कान,
मिसरी घोलत नइखी,

हमर फुलगेना कइसन बदला सधावत बाड़ी,
रहत बारू दूरे-दूर नियरा ना आवत बाड़ी।
भइली निरमोही नाही नेहिया लगावस
तनिको मोलत नइखी।

बुझस नाहीं बात, दिन कइसे हमर कटत बाटे,
बोले बतियावे खातिर जिया हमर रटत बाटे।
चान नियन रूप इनकर बिसरे ना मन
धन टटोलत नइखी,

✍सुजीत सिंह
ग्राम:-सलखुआँ,पोस्ट:-अपहर,जिला:-सारण, बिहार

सनातनी नववर्ष

सनातनी नववर्ष
अग्र सुमिरन गणेश के
मन में राखी राम,
नेत-धरम के मारीं जन
बनी बिगड़ल काम ।

नव-दूर्गा के पूजन होता
जई सगरो रोपाइल,
पख हS अंजोरा के
रामनवमियो नगिचाकाइल ।

कंठे सुरवे बसिहें सारदा
चइता खूब गवाई,
कोइल के मधुर गीत सुन
झूमी झबदल अमराई ।

बइसाखी बिहू मनी
कहीं मनी सतुआन,
खल-खल के नृत्य होई
नचिहें बूढ़ जवान ।

जय बोलीं सनातन के
घड़ी घंटा बजाईं,
भेद मेटा गले मिलीं
सनातनी नववर्ष मनाईं ।

✍दिलीप पैनाली
सैखोवाघाट
तिनसुकिया, असम ।

ए फुलेसर भाई ई कोरोना जनानी हवे कि मरदानी?

भगबऽ कि ना! सारा दुनिया जान बचावे में लागल बा आ तूं जनानी मरदानी में लागल बारऽ।

कुछ वायरसन के सीसी में बंद करके राख देले बानी, स्थिति समान्य होखते जाँच करेम जे का हऽ--जा अबहीं एगो कहानी लिखऽ--

✍दिलीप पैनाली, आसाम

भुवर के भोजन के मात्रा फुलेसर के परसान क दिहले रहे। जइसे टेक्टर पर लागल थरेसर बोझा के बोझा डाँठ तनिका देर में भूसा बना देला, ओसहीं भुवर एक्के पंघित कतना सरपोट जइहें ठेकान ना रहे। एकदिन फुलेसर कहलें- 'ए भुवर! दवाई करावऽ, दवाई। बीसन-तीसन अदिमी के राशन एक्के अदिमी खिंच लेउ आ डकार ले ना लेउ, अइसन हम कहीं नइखीं देखले। चलऽ, डगदर किहाँ।'

भुवर के ले के फुलेसर डगदर किहाँ गइलें। डगदर साहेब सब बात सुनला का बाद पूछलें- 'अच्छा, ई बतावऽ भात केतना ले खा जात बाड़ऽ ?'

भुवर- 'कवनो ढेर ना, इहे लगभग पाँच किलो।'

डगदर- 'देखऽ, तुरते ढेर कम कइल ठीक ना रही। लेकिन आजु से अढ़ाइए किलो खइहऽ आ ओही हिसाब से दालियो तरकारी आधा खइहऽ। कुछ दवाई ले लऽ। कम्पोटर दवा खाए के तरीका बता दिहें।'

सलाह आ दवा ले के फुलेसर आ भुवर लवटल लोग। कुछ दूर अइला पर भुवर अचके कहलें-'जा, डगदर साहेब से एगो बात पूछल त भुलाइए गइनीं। चलऽ, पूछि लीं।'

लवटि के डगदर साहेब का लग गइल लो। भुवर कहलें- 'ए डगदर साहेब! बेरिबेरि पूछले त रउरो रिसियाते होखबि, लेकिन एगो बात अउर बता दीं।'

डगदर साहेब- 'आरे, रिसिआइबि काहें? पूछऽ, का पूछे के बा?'

भुवर- 'कवनो बड़हन बात नइखे पूछे के। सब त समुझाइए दिहले बानीं। बस, एतने बता दीं कि जवन आधा खोराकी बतवनीं हँ ऊ खइला का पहिले कि खइला का बाद खाए के बा?'

डगदर के दिमाग झनझना गइल। फुलेसर माथा पिटे लगलें।

✍संगीत सुभाष, मुसहरी, गोपालगंज, बिहार

ओझा जी- 'हँ त, दिलीप जी! रउरा का करीले?'

दिलीप जी- 'आसाम सरकार में मास्टर हईं।'

ओझा जी- 'त ई बताईं, रउरा कहाँ के हईं?'

दिलीप जी- 'बिआह भइला का बाद कहीं के नइखीं।'

✍संजय ओझा, छपरा, बिहार

रसिक भइया कविसम्मेलन में कविता सुनावत रहनीं-

बड़ी जोर के आन्ही आइल उड़ा ले गइल छप्पर।

बड़ी जोर के.....

आगे के लाइन बिसभोर हो गइल। कतनो मन पारीं, मने ना परे। स्रोता नीचे से कहे लगलें कि कवि जी! आगे सुनाईं, आगे सुनाईं। एने मन परे तब नु।

अन्त में कवनोडा पूरा कइनीं-

बड़ी जोर के आन्ही आइल उड़ा ले गइल छप्पर,

पचहत्तर, छिहत्तर, सतहत्तर, अठहत्तर।

✍संगीत सुभाष, मुसहरी, गोपालगंज, बिहार

नेपाल में नारी के अवस्था

बदलत परिवेश में आजु के जुग में पुरूष आ महिला के बीच कौनो खास फरक नइखे रह गइल।बाकिर आजु भी महिला लोग के कुछ अइसन पक्ष सब बा ,अवस्था सब बा जेकर स्थिति जस के तस बा।

नेपाल के जनसंख्या२,९४,६४,५०४(वि.स.२०६८साल के तथ्यांक के अनुसार)बा। एहकर आधा संख्या नेपाल के महिला लोग के ही बा।५१.५%जनसंख्या महिला सभन के बा। लेकिन अभी भी शिक्षा के क्षेत्र आ रोजगार के क्षेत्र में पुरूष सभन की अपेक्षा महिला लोग के पहुँच बहुत कम बा।संस्कृति आ परम्परा के नाम पर खाली महिला लोग के ही दोहन भइल बा आ अभी भी होला।नेपाली समाज में से पहिले के बहुते कुप्रथा के अंत भइल बा, बाकिर कुछ प्रथा सामाजिक मूल्य मान्यता के नाम पर अभी भी बरकरार ही बा।बहुते समस्या मध्ये कुछ समस्या रखे के चाहेम...

*दहेज-नेपाल के तीन भाग हिमाल,पहाड़, तराई में से खासकर तराई क्षेत्र में दहेज लेवे देवे के कुप्रथा आज भी आगी जइसन धधकता।बियाह के समय दुलहिन के पक्ष से दुलहा पक्ष के लोग राजी खुशी,सहमति भा दबाव से नगद धन संपत्ति, सामान, गर गहना देवे के प्रचलन बा। ई सब चलन प्राचीन समय से बा ।बाकिर अब एहकर रूप बहते कुरुप हो गइल बा। दहेज लेवल आ देवल प्रतिष्ठा आ इज्ज़त के बात हो गइल बा साथे प्रतिस्पर्धा (दाजाहिस्का) कइला के कारण भी ई समस्या विकराल बन गइल बा।एह कारण से तराई भाग के सामाजिक संतुलन आ सद्भाव कायम राखल मुश्किल हो गइल बा। ऐह कारण से दहेज के विषय के आधार बना के महिला हिंसा, घरेलू हिंसा ,पारिवारिक विखंडन, आत्महत्या जइसन घटना घटत रहेला। ई प्रचलन तराई क्षेत्र में बा आ एह कारण से दहेज ना देवे सकेवाला परिवार की बेटियन के बियाह में दिक्कत होला औरी बिना दहेज लेके गइल पतोह पर पारिवारिक हिंसा के क्रम में कमी नइखे आइल। एह समस्या के जड़ से हटावे खातिर शिक्षा आ चेतना जागरण संगठित सोच आ कार्यक्रम संचालन, कड़ा कानूनी प्रबंध के माध्यम से दहेज विरुद्ध के अभियान सशक्त बनावल जरूरी बा।

*बेटा के अनिवार्यता-समाज में व्याप्त अंधविश्वास, सामाजिक मूल्य मान्यता के नाम पर सदियों से महिला लोग के उपर ही शोषण आ हिंसा होखेला।"वंश चलावे खातिर बेटा ही चाही"ए सोच से तराई, पहाड़,

हिमाल तीनों क्षेत्र ग्रस्त बा। हालाँकि शहरी भाग आ शिक्षित परिवार में एह सोच में तनका कमी आइल बा बाकिर बहुत ज्यादा लोग इहे सोच से ग्रसित बा।इहे सोच के कारण एगो महिला के बेटा के रास्ता ताकते ताकते सात गो आठ गो बेटी जन्मावे के पड़ेला। अंत तक बेटा ना होई त पुरूष के दोसर बियाह भी करल बहुत प्रचलन में बा।कानून में लिंग के आधार पर भेदभाव कइल दंडनीय बा लेकिन नेपाल के पहाड़, हिमाल लगायत लगभग तराई क्षेत्र में भी महिला के गर्भावस्था के समय लिंग परीक्षण के चलन चलती बाटे। डिजिटल प्रविधि के सहयोग से भ्रूण परीक्षण कराके ,यदि गर्भ में बेटी बा त भ्रूणहत्या करावल बहुत सामान्य बात मानल जाला।

*चेलीबेटी बेच बिखन(लड़कियन के किन बेच करे व्यापार)-ई भी नेपाल के घातक समस्या के रूप में देखे के मिलेला। वैदेशिक रोजगार, ,शहर घुमावे,बियाह के प्रलोभन देके महिला सभन के नेपाल से दोसर देश में ले जाके बेचे के करोबार खूब होखेला। हालाँकि नेपाल के विभिन्न संघ ,संगठन एह समस्या निवारण खातिर जी तोड़ मेहनत करेला ।बाकिर प्रशासन के कड़ाई भइला के बावजूद भी ई बेच बिखन के धंधा होते रहता। यौन काम में लगाके ,श्रम शोषण करे खातिर कम उमिर के लड़कियन आ युवती सब के किन-बेच के काम होखेला।हिमाल के विकट क्षेत्र जहाँ गरीबी बा अभाव बा,खाये के आफत बा,चेतना के कमी बा, अभिभावक विहीनता बा, पारिवारिक हिंसा बा ई सब कारण ही लड़कियन आ युवती सब के बिक्री के काम होखेला। भारत में ज्यादा ही नेपाली महिला सब के किन बेच के रोजगार होला साथ ही चीन,कोरिया, खाड़ी मुल्क तथा दक्षिणी पूर्वी एसियाली देश में भी नेपाल के लड़की सभन के किन बेच होला।साथे साथे अमेरिका, अफ्रीका यूरोप में भी दलाल के मार्फत रोजगारी के प्रलोभन देके नेपाल के युवती सब के बेचल जाला।

हालांकि नेपाल के प्रशासन ,संघ संस्था एह समस्या पर लागातार कडाई के साथ काम करत रहेला। नेपाल प्रहरी,महिला तथा बालविकास मंत्रालय, राष्ट्रीय महिला आयोग, स्थानीय निकाय ,गुप्तचर विभाग, सरकारी निकाय ए विकृति का विरुद्ध लड़ाई लड़ता।माइती नेपाल,दीदी बहिनी(सामाजिक संस्था) जइसन संस्था भी "चेलीबेटी बेचबिखन" के जड़ से मिटावे खातिर ऐड़ी चोटी कइले रहेला। ए सब के प्रयास से ई समस्या कम त भइल बा।लेकिन ऐकरा के जड़ से हटावे खातिर एह अपराधिक क्रियाकलाप में लागल व्यक्ति सब के उपर कड़ा कारवाई के जरूरत बा। ऐह समस्या के रोके खातिर सरकारी प्रयास के साथे विभिन्न सामुदायिक तथा गैरसरकारी संस्था सबके समन्वय आ सहकार्य के बहुते जरूरी त बड़ले बा संगे संगे चेतना मूलक कार्यक्रम के भी जरूरत बाटे। सुरक्षा निकाय के चाहीं कि ऊ खूब मुस्तैदी से अपराधी सब के कड़ा से कड़ा दंड आ सजाय के निर्धारण करो।

नेपाल में महिला के आ महिला के हक अधिकार के संरक्षण सम्बरद्धन के बहुते ऐन,नियम ,कानुन बा।सरकारी आ निजी क्षेत्र में महिला लोग के आरक्षण के सुविधा बा।नेपाल के महिला कमजोर नइखे । अवसर आ मौका मिले त इहो लोग बड़धका बड़का उदाहरणीय काम कर सकेला लोग।विगत में एहकर बहुत उदाहरण बा।नेपाल के पूर्व महिला महा न्यायधीश"सुशीला कार्की" अपना कार्यकाल में बहुते प्रभावशाली कानूनी काम कइले रहली।ओहीं तरह "सुशीला कोईराला" जे चेलीबेटी बेच बिखन समस्या के जूझत लड़की सब खातिर उद्धार के काम कइली। हुनकर प्रशंसनीय काम आ योगदान खातिर भारत सरकार उहाँ के "पद्म श्री"उपाधि से विभूषित कइले बा। अइसे ही हिमालय पर चढ़ेवाली पहिली महिला "पासांग लामू शेर्पा" ही रहली जे हिमालय की चोटी पर चढ़े साहस कइली। नेपाल में महिला लोग खातिर बहुत कानून बा बाकिर,महिला के अधिकार मात्र कानून में ही सीमित बा। कानून के उचित कार्यान्वयन आ परिचालन ना भइला से सब समस्या मुँह खोल के खड़ा बा।आज भी नेपाली महिला हर हक अधिकार से वंचित बा।

वि.सं.२०७२ साल के संविधान द्वारा हरेक क्षेत्र में महिला सहभागिता ३३% राखल बा, लेकिन लागू करे वाला पक्ष अभी भी कमजोर ही बा।अइसहीं महिला धन,अंश संबंधी कानून भी मात्र नाम में सीमित बा।वि. सं. २०५४साल के कानून में महिला यदि ३५ बरिस तक बियाह ना करी ,नैहर में रह जाई त हुनकरो पैतृक संपत्ति में से हक मिले के कानून बनल। फेरू वि. सं. २०७२ साल के संविधान में महिला लोग के स्थिति सुधार करे के उद्देश्य से पहल भइल कि बेटी के भी बेटा जइसन ही बाप के सम्पत्ति में हक रही।यदि महिला के तलाक होई त श्रीमान के संपत्ति में से ५०% अधिकार श्रीमती के होखे के प्रावधान बा।

लेकिन महिला सशक्तिकरण खातिरा महिला सब के हरेक क्षेत्र में प्रयास भइला के बावजूद भी"पितृसत्तात्मक"सोच के वर्चस्व कायम भइला के चलते जौन अधिकार आ सम्मान मिले के चाहीं ओह से महिला लोग अभी भी वंचित बा लोग। लैंगिक भेदभाव, शोषण, हिंसा के घटनाक्रम घटल नइखे। समतामूलक आ लंबा विकास खातिरा महिला लोग के हर क्षेत्र में पहुँचावल जरूरी बा।

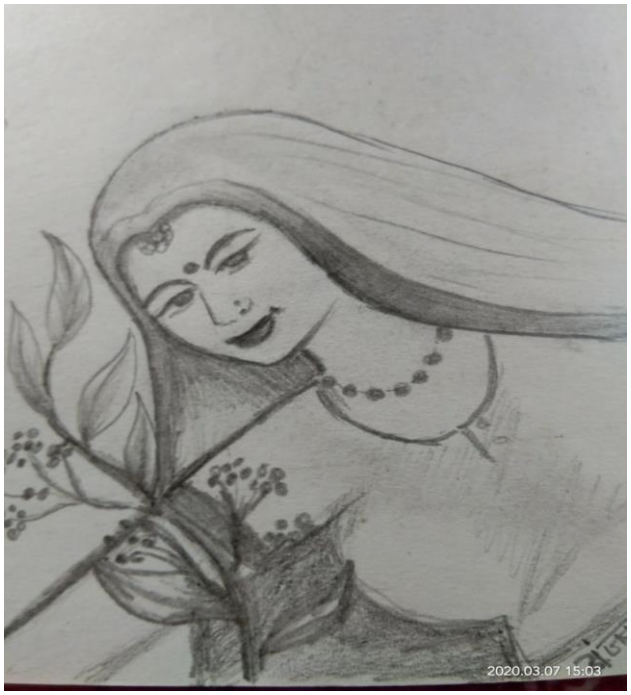

नेपाल के संविधान के धारा २५२ में "राष्ट्रीय महिला आयोग" के व्यवस्था कइल बा। ई आयोग महिला के हक हित से संबंधित नीति तथा कार्यक्रम बनावेला,अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धता कार्यान्वयन के अवस्था अउरी ओकर प्रभावकारी कार्यान्वयन के उपाय के सिफारिश करेला। ई आयोग महिला सशक्तिकरण,लैंगिक समानता औरी महिला से संबंधित कानूनी व्यवस्था के अध्ययन अनुसंधान क के कानून में सुधार करे खातिर संबंधित निकाय के सिफारिश करेला। सिफारिश कइला के बावजूद भी सुधार ना होला त अनुगमन आ पूछताछ करे के काम भी इहे आयोग के हवे। ई आयोग महिला हिंसा आ सामाजिक कुरीति से पीड़ित महिला सब के कानून उपचार के पक्ष में वकालत करेला। राष्ट्रीय महिला आयोग में एगो अध्यक्ष आ चार जने सदस्य लोग रहेनीं।

सब कुछ होते हुए भी ई बात के ध्यान रखल जरूरी बा कि खाली महिला विकास के कानून बना दिहला से आ नारा लगा दिहला से परिवर्तन संभव नइखे । एकरा खतिरा सरकार के संगे संगे स्थानीय स्तर ,घर परिवार सबके सकारात्मक सोच के साथे चले के जरूरत बा। कौनो कानून कागजाती बन के जब ले रही ओ कानून के कौनो फायदा ना होई ।त ओकरा खातिर महिला अधिकार संबंधित जे भी ऐन ,नियम ,कानून बा ओहकर लागू कइल आ कार्यान्वयन कइल जरूरी बा। समाज आ घर में सकारात्मक सोच के सृजना कइल भी जरूरी बा।

सचेतना वृद्धि, कानून के कड़ाई से कार्यान्वयन से ही महिला लोग के हर समस्या के निदान होई। चेतना जागरण, शिक्षा के प्रचार प्रसार, कड़ा कानून प्रबंध ,सहकार्य, सहयोग ,सद्भाव, समाजिक समावेशिता जइसन कारगर कदम से ही नेपाल की महिला लोग के स्थिति में संभवतः सुधार हो सकता।

✍**अनीता शाह, वीरगंज, नेपाल।**

वसंत उहाँ कबो ना आवे

शहर का ओह छोर पर
झाड़-झंखार नियर
उग आइल बा झुग्गी-झोपड़ी
चारो तरफ फइलल बा पथराइल गन्दगी के ढेर
धूल भरल तंग गली
बजबजात बदबूदार नाली
सरकारी नल पर पानी खातिर
लड़त-झगड़त मेहरारुअन के दल
वसंत उहाँ कबो ना आवे।

जहाँ सकेत अन्हार कोठरी में
घामो ना आवे हाल-चाल पूछे
ओह कोठरियन में रहे वाला
रह रहल बा जिंदा लाश लेखा
ओ लोगन के सपना टूट के बिखर गइल बा
टूटल जल-बिम्ब अइसन
ओ लोगन के भावना पथरा गइल
आ इच्छा में भुअरी लाग गइल
सगरी उमिर बीत गइल
लेकिन आस के हाथ पियर ना हो सकल
वसंत उहाँ कबो ना आवे।

जहवाँ भूख से अँतड़ी कुलबुलात रहेला
जहवाँ बच्चन के हाथ में कभी खेलौना आ
गुड्डी ना मिलल
उनकर उजड़त सपना से परियो
निकल के भाग गइल
जहवाँ बच्चन के कान्ह पर स्कूल बैग का जगहा
कचरा के बोरा लटकत रहेला
वसंत उहाँ कभी ना आवे।

जहवाँ न्याय के गोहार लगावत-लगावत
लोगन के आवाज बइठ गइल
चीख भाप बन के उड़ गइल हवा में
जहवाँ के लोग के भीतर
ई एहसास भी मर चुकल कि
उहो लोग एही दुनिया के आदमी बा
वसंत उहाँ कबो न आवे।

कोई आई उनकर लोर पोंछी
ई बाट जोहत-जोहत
उहाँ के लोग के आँख पथरा गइल
टकटकी लगवले देख रहल बा लोग
आसमान में बनत-बिगड़त इंद्रधनुष
शायद लोग का बुझा रहल बा कि
कइसे सामर्थवान लोग के इशारा पर
गरीब के मजबूरी नाचेला।

✍**निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव।**
राँची-झारखण्ड।

घरहीं में रहीं

दूर-दूर रहे के बा इहे बात कहीं
हमार पिया घरहीं में रहीं,
एकइस दिन दुख सहीं
हमार पिया--------में रहीं।टेक।

एक मीटर दूर सभे दोसरा से रहे
घरी-घरी हाथ धोइ इहे सभे कहे
इहे ह उपाय एकर सही।
हमार पिया-------में रहीं।टेक।

कबहूँ अगर रउरा बहरा में जाईं
मुँहवा प मास्क के जरुरे लगाईं
भीड़-भाड़ में न कतो रहीं
हमार पिया-------में रहीं।टेक।

हमरा जिनीगिया के रउरे सिंगार जी
घरहीं में रहिके करीं ना खुब प्यार जी
का का बनाईं रउरा कहीं
हमार पिया-------में रहीं।टेक।

चीन के कोरोना कइल कारिस्तानी
धन-जन मानवता के कइले बा हानी
दुनिया के बन्द होइ लागता खाता बही
हमार पिया--------में रहीं।टेक।

राय के कहल बात गाँठ बान्हि लीहीं
सभका के रउरो सलाह इहे दीहीं
भोगी उहे जे घुमि-घुमि माठा महीं
हमार पिया--------में रहीं।टेक।

✍देवेन्द्र कुमार राय
ग्राम+पो०-जमुआँव, थाना-पीरो,जिला-भोजपुर, बिहार

फइलेला कोरोनवा

कच्छ-मच्छ भछे चाइना जाता सभके जनवाँ राम,
जइसे छुवे लोगवा वइसे फइलेला कोरोनवा राम

छुआछुत से फइलल बाटे दुनिया सभर में,
एकहीं उपाय, रहीं रउरा अपना घर में।
छोडल न गते-गते सगरी जहँनवा राम,
जइसे छुवे लोगवा वइसे फइलेला कोरोनवा राम।

घरबन्दी होके लोग काटे दिन-रतिया
फुटपाथी गरीबा के रामेजी सँघतिया।
दुनिया में बरपल बा कहर तुफनवाँ राम,
जइसे छुवे लोगवा वइसे फइलेला कोरोनवा राम।

आला-आला देसवन के टूटल गुमानी,
जिनपिंग आ किम जोंग करेले मनमानी।
सत्ता के नशा में गइले मानुस धरमवा राम,
जइसे छुवे लोगवा वइसे फइलेला कोरोनवा राम।

बिनन्ती बा कर जोरी अल्ला भगवान से,
अबकी उबारीं ई करोना शैतान से।
ई गणेश दुनिया ला करे सुमिरनवा राम
जइसे छुवे लोगवा वइसे फइलेला कोरोनवा राम

✍गणेश नाथ तिवारी"विनायक"

इनोवेटिव भोजपुरी

महामारी के मारऽल, सगरो जहान....!!!

गत ११ मार्च के विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) आधिकारिक रूप से विश्व के हर महाद्वीप के अपना जाल में जकड़े वाला नोबल कोरोना वायरस के महामारी घोषित क दिहलऽस। अइसे तऽ कवनो बीमारी के महामारी घोषित करे खातिर कवनो तय पैमाना ना होला। इहाँ ले कि बीमारी से जाए वाला जान भा ओह से अधिका से अधिका लोगन में होखे वाला संक्रमण भा ओह से प्रभावित होखे वाला देशन के संख्या भी कवनो बीमारी के महामारी घोषित करे के फैसला के निर्धारित नाऽ करे लाऽ। सन् २००३ में आइल सार्स कोरोना वायरस २६ गो देशन में फैलला के बावजूद भी महामारी के श्रेणी में ना आवेला। हालांकि ई फैसला विश्व स्वास्थ्य संगठन के लेबे के रहेला तऽ ऊ ई आकलन करेला कि एह से जन मानस में अनावश्यक डर भा खौफ के स्थिति मत उत्पन्न होखे जइसन कि सन् २००९ में "स्वाईन फ्लू" के महामारी घोषित कइला पऽ सगरो भइल रहे। वइसे वैज्ञानिक भाषा में जब कवनो बीमारी दुनिया भर में फैल जाला तब ओकरा के पैन्डेमिक (महामारी) कहल जाला जबकि एपिडेमिक (स्थानीय महामारी) कवनो एगो देश, राज्य, क्षेत्र भा सीमा तक सीमित रहेला। सन् २००९ के H1N1 स्वाईन फ्लू के बाद पहिला बेर महामारी घोषित भइल कोरोना वायरस आज समूचा दुनिया के आपन चपेट में ले चुकल बा। ई लेख लिखाये के समय ले COVID १९ से सभ मिला के लगभग १६,५०० लोगन के जान जा चुकल बा आ ऐकर दुनिया में लगभग ३,७५,००० कन्फर्म केस रिपोर्ट हो चुकल बा। १६३ देशन के अभी ले संक्रमित करें वाला एह वायरस से आज पूरा दुनिया दहशत में बिया।

संक्रमित रोगन के इतिहास मनुष्य के विकास के साथ हमेशा से जुड़ल रहब बा। आदमी अपना उत्पत्ति के समय से जतना-जतना सभ्य बनत गइल, दुनिया के हर क्षेत्र में शहर आ व्यापार के विकास होत चल गइल। परिवहन के साधन विकसित भइले सऽ आ शहर भा देश एक दूसरा से जुड़त चल गइले सऽ। ओकरा साथे कवनो महामारी के

पनपे आ फैले के संभावना भी बढ़त चल गइल। चिकित्सा आ विज्ञान के क्षेत्र में विकास भी ओही गति के साथ होत चल गइल लेकिन प्रकृति के भी आपन अलग चाल आ गति होखेला। जवना विज्ञान के माध्यम से मनुष्य आपन समस्या के समाधान करत गइल, हर अवसर पे प्रकृति ओह विज्ञान के कवनो ना कवनो नया समस्या के माध्यम से चैलेंज करत चल गइल। एह सभ के बीच में अइसन बहुत महामारी रहल बाड़ी सऽ जवन अपना प्रभाव से संसार के दिशा अउर दशा निर्धारित करे में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभवले बाड़ी सऽ। आगे एह लेख में ओही में से कुछ सबसे बेसी घातक महामारियन पे बात कइल जाई।

४३० ई.पू. - टाईफाइड फीवर (मियादी बुखार):-
दुनिया के पहिलका रिकॉर्डेड महामारी जवन लिबिया, इथोपिया आ मिश्र से होके एथेंस ले चहुँचल रहे। यूनान के दू गो बहुचर्चित शहर एथेंस आ स्पार्टा के बीच भइल पेलोपोनेसियन युद्ध में एथेंस के हार खातिर एही महामारी के जिम्मेदार मानल जाला। एगो अनुमान के तहत एथेंस के दू-तिहाई जनसंख्या एह महामारी से खत्म हो गइल रहे।

१६५ ईस्वी - एंटोनिन प्लेग:-
चेचक नियन शुरुआती लक्षण के साथ आवे वाली एह महामारी के उत्पत्ति यूरोप के हूण साम्राज्य में मानल जाला। जर्मनी होत ई महामारी रोमन साम्राज्य तक फैलल रहे। १५ साल के आपन संक्रमण अवधि में एह प्लेग से लगभग ५० लाख लोग के मुअला के अनुमान रहे।

५४१ ईस्वी - जस्टिनीयन प्लेग:-
फिलिस्तीन अउर बीजान्टिन साम्राज्य से भू-मध्य सागर तक फैले वाली एह महामारी के इतिहास में सर्वनाशक के रूप में जानल जाला। यूरोप आ मध्य एशिया में ईसाई धर्म के आधिपत्य स्थापित करें में योगदान देबे खातिर एह महामारी के जानल जाला। दू सदी तक एह महामारी के कई हाली पुनरागमन होखला से दुनिया के लगभग २६% आबादी खतम होखें के अनुमान रहे।

१३५० ईस्वी - ब्लैक डेथ:-
अपना समय अवधि में दुनिया के एक तिहाई आबादी के मुअला के कारण बने वाला एह महामारी के प्रकोप से यूरोप, अफ्रीका आ एशिया तबाह हो गइल रहे। बीमारी फैलावे के सबसे बड़हन श्रोत व्यापारी जहाज पे रहे वाला चूहा रहलन सऽ। ब्लैक डेथ के सबसे घातक बात ई रहे कि ८०% मामला में संक्रमित व्यक्ति ३-५ दिन में मर जात रहे।

१९१८ ईस्वी - स्पैनिश फ्लू:-
स्पैनिश फ्लू के इतिहास के सबसे ख़तरनाक महामारी के रूप में जानल जाला। दुनिया भर में लगभग ५० करोड़ लोग के प्रभावित करे वाला एह महामारी से ५ करोड़ लोग के जान गइल रहे। अकेले अमेरिका में ७ लाख लोग एकरा चपेट में आइल रहे। इलाज खातिर कवनो प्रभावी दवा भा टीका उपलब्ध ना रहला के कारण, एहतियात बरऽतला पे जोड़ दीहल गइल। पहिला हाली लोगन के मास्क पहिने के निर्देश दीहल गइल, हर तरह के स्कूल, थियेटर आ व्यवसाय बन्द करें के आदेश दीहल गइल रहे। इहे पहिला महामारी रहे जवन अपना प्रभाव से वैश्विक अर्थव्यवस्था के हिला देले रहे।

१९५७ ईस्वी - एशियन फ्लू:-
H2N2 उप प्रकार के इन्फ्लुएंजा A वायरस से फैलल एह महामारी के शुरुआत हांग-कांग से भइल रहे। बहुत कम समय में ई चीन, अमेरिका आ समूचा यूरोप में फैल गइल रहे। एह महामारी से आधिकारिक आंकड़ा के अनुसार लगभग ११ लाख लोगन के मौत भइल रहे। खलसा अमेरिका में १ लाख से अधिका लोग एह से मुअल रहले।

१९८१ ईस्वी - HIV एड्स:-
आधुनिक काल के सबसे घातक बीमारी के रुप में जाने जाए वाला एड्स के उत्पत्ति वैसे तऽ १९२० के दशक में पश्चिमी अफ्रीका के चिंपांजी वायरस से भइल रहे लेकिन पहिला बेर ऐकर रिपोर्टिंग १९८१ में अमेरिका के एगो समलैंगिक समुदाय में भइल रहे। आज भी जानकारी के ही ऐकर ठोस उपचार बतावल जाला। हालांकि बीमारी के धीमें करें खातिर कुछ उपचार भी विकसित भइल बा, तबहूँ आज ले लगभग ३.५ करोड़ लोग एह से मर चुकल बाड़े।

२००३ ईस्वी - SARS :-
चमगादड़ से शुरू हो के मनुष्य के संक्रमित करें वाला "सीवियर एक्यूट रेस्पिरेट्री सिंड्रोम" पहिला हाली चीन में

रिपोर्ट भइल रहे। करीब २६ गो देशन के प्रभावित करे वाला एह बीमारी से दुनिया भर में लगभग ८ हजार लोग प्रभावित भइले, जवना में से लगभग ८०० लोग के जान गइल।
बीमारी के कंट्रोल करें में Quarantine के उपयोगिता एही समय में सिद्ध भइल रहे। एकरा प्रबंधन से सीखल गइल पाठ से आगे चल के H1N1, इबोला आ जीका वायरस जइसन बीमारियन के कंट्रोल करे में मदद मिलल।

२००९ ईस्वी - स्वाईन फ्लू:-
H1N1 इन्फ्लुएंजा वायरस से होखे वाली दूसरकी महामारी स्वाईन फ्लू से विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़ा के अनुसार लगभग १८ हजार लोगन के जान गइल रहे। एगो अउर आँकड़ा के अनुसार, मैक्सिको में पहिला हाली रिपोर्ट कइल एह महामारी से विश्व के लगभग २०% आबादी संक्रमित भइल रहे।

२०१९ ईस्वी. - कोरोना वायरस (COVID-19):-
पहिला हाली १७ नवंबर २०१९ के चीन के हुंबेई प्रांत में रिपोर्ट कइल कोरोना भा COVID-19 वायरस से आज दुनिया के हर महाद्वीप संक्रमित हो चुकल बा। संक्रमित होखे वाला अउर मरे वाला लोगन के संख्या दिन प दिन बढ़त चल जा रहल बा। एह वायरस के प्रभाव से आज विश्व के अर्थव्यवस्था चरमरा के गिरत जात बिया। चीन, अमेरिका, इटली, स्पेन, ईरान, जर्मनी आ ब्राजील जइसन देश में स्थिति अउर भयावह होत चल जात बिया। हालांकि एह वायरस के टीका भा उपचार विकसित होखे में कुछ अउर समय लाऽगी सकेऽला, अभी ई कहल मुश्किल बा कि एह महामारी के प्रभाव कतऽना होई आ कंट्रोल कब ले होई?

महामारी प्रबंधन में समयोचित जानकारी के बहुत महत्त्व होला। लक्षण के जब सही-सही पहचान होला तबे ओकरा इलाज भी विकसित होला। प्रकृति अलग-अलग रुप में चुनौती पेश करत रहेऽले आ मनुष्य भी तरह-तरह के साधना से समाधान खोजत रहेला, चुनौती के सामना करत रहेला। आज के परिवेश में जब कवनो बीमारी के फैले के क्षमता पहिले से कई गुना ढ़ेर हो गइल बा तऽ विश्व के वैज्ञानिक समुदाय के इहे मानल बा कि रोकथाम इलाज से अधिका कारगर होला। आज सोशल डिस्टैंसिंग, समयोचित संचार अउर वैश्विक सहयोग ही अइसन प्रभावी तरीका बा जवना से एह महामारी के फैले से रोकल जा सकेला। प्रधानमंत्री जी के निहोरा पे आज जब समूचा देश २१ दिन के लॉक-डाउन में बा तऽ रउआ सभ लोग से भी निवेदन बा - जानकार बनीं, बचाव करीं, सावधान रहीं आ निरोग रहीं।

साभार:
कवर फोटो- www.covidvisualizer.com अउर लेख आंकड़ा- www.who.int

✍**त्रिपुरारी पान्डेय**
ग्राम: भोजापुर, पो: सावन छपरा, बैरिया, बलिया (यूपी)

शक्ति के ही त नाम नारी ह

ए धरती पर सब इन्सान चाहे पुरुष होखे, चाहे ऊ महिला होखे अपना जन्म के अधिकार के साथे अपना आप के विकास करे के, आपन सपना पूरा करे के सबके बराबर के समानाधिकार त होए के ही चाहीं। 21वी शताब्दी जहवाँ इन्सान चाँद पर पहुँच गइल बा बाकी औरत के प्रति सोच समाज के आजो संकीर्ण बा ।आजो ए पुरुष प्रधान समाज में नारी के साथ ओकरा लैंगिक आधार पर भेदभाव करल जाला औरी ओकरा के शारीरिक रुप से कमजोर समझ के हेय दृष्टि से देखल जाला। हर क्षेत्र में ओकरा साथे शारीरिक अउरी मानसिक शोषण करल जाला ।काहे से त ऊ नारी हिय, ऊ पुरूष से कबो बराबरी ना कर सकेले ।

आजो ई संकुचित धारणा हमरा नयका समाज में भी कायम बा । जबकि ई बात सय प्रतिशत गलत बा। काहे से कि बिना नारी के ए संसार में कुछु सम्भव नइखे ।हर रुप में, हर फील्ड में नारी पुरुष के कदम- कदम से मिलाके आगे बढ़ रहल बिया तबो बहुते क्षेत्र बा जहाँ नारी के साथ आजो भेदभाव होखेला ।चाहे नारी कतनो सबल होखे ,सक्षम होखे, चाहे क्षमतावान काहे न होखे ओकरा के 'ख ' वर्ग के ही बुझल -समझल जाला ।दुनिया में अइसन ढेर जगह बा औरी ढेर क्षेत्र बा जहाँ ओकरा भूमिका के लोग नजरअंदाज करेला ।आजो औरत के खाली एेहिलें ना बढ़ल दियल जाला काहे से कि ऊ औरत हिय ।पुरनका जमाना के समाज में नारी के महत्वपूर्ण अउरी सम्मानजनक स्थान रहल। सामाजिक धार्मिक आ राजनीतिक कार्यन में नारी पुरुष के समान सहभागी रहे। तबे नारी के देवी अउरी गृह लक्ष्मी के उपाधि दिहल जात रहे। लेकिन मध्यकालीन समय में कुछ अइसन अव्यवस्था भइल कि नारी प तरह -तरह के शोषण, अपराध अउरी अन्याय होखे लागल अउरी ओहिजे पर्दा प्रथा के शुरुवात भइल ।अभियो वर्तमान समय में नारी के का स्थिति बा ऊ केहू से छिपल नइखे ।अब समय आ गइल बा जब नारी के लक्ष्मी रूप छोड़ के दुर्गा धरे पड़ी । संतोषी, अहिल्या बनल छोड़के काली कपालनि बने पड़ी अउरी अपना भीतर में छिपल शक्ति के प्रतिभा के याद करे पड़ी ।

अब ढेर भयल इंतज़ार कि कवनो मसीहा आई औरी नारी के सही मायने में संरक्षक बनी !हम नारी लोगन के आपन भीतर की छिपल शक्ति के अपने पहचाने पड़ी औरी अपना अस्तित्व के रक्षा अपने करे के पड़ी ।

अगर नारी के सब क्षेत्र में आगे बढ़ना बा त ओकरा अपना के शत प्रतिशत साबित करे के पड़ी । दोसरा से चाहे पुरूष से आस करे के बजाये अपना बदौलत आगे बढ़के प्रयत्न करे चाही।सबसे नीमन बात तब होई जब नारी -नारी मिल जाए त शक्ति बन सकेले। संगठन बनाके अपनी मुट्ठी में ई दुनिया के कैद कर सकेले ।

"नारी "

श्रृष्टी के जन्म देवे वाली नारी ,
देवता -बीर यौद्धा के जननी नारी,
मौतो हमरा से हारल बा ,
त्याग की मूर्ति, वात्सल्य की प्रतिमा ,
हमर बलिदान के गवाही ई दुनिया सारी बा ।
सती के नाम पर जरायल गयल ,
मीरा के नाम पर ज़हर पिलायल गयल ,
सीता के नाम पर अग्निपरीक्षा लिहल गयल ,
कबो द्रौपदी बनके त कबो अहिल्या बन आजो हमरा पर हर जुल्मो सितम जारी बा !
हम चाह ली त हवा के मुख मोड़ सकेनीं ,
अगर जिद्द पर उतर जाईं त धरती के नभ से जोड़ सकेनीं, लक्ष्मी ,सरस्वती चंडिके ,भद्रकाली ,कपालिनी ,
लाख रुप ह हमार, चलेला हमरे दम पर ई सब जग ..संसार, जाने तबो काहे कहेला हमरा के जग सारा अबला लचारी बा ।

✍पूजा 'बहार'
दुहबी(नेपाल)

रहमत के रमजान

जेठ के आधा महीना बितला का बाद रमजान के पहिला अजानन भइल। अबहीं ब्रम्हबेला के सुरुआत होत रहे, सभ केहू अपनी-अपनी छत प सुतल रहे। सिरसिरात मंद पुरवा बयार में एक अजीब सिहरन अस रहे, अइसन सिहरन जे सभ केहू के केहुनी आ ठेहुना सटा के सुते प बिबस कर देले रहे।

गाँव के ऐन बीचोबीच वाली मस्जिद के हाफिज जी (मौलबी,मौलाना) के नीनि कहाँ? मस्जिद के बुर्ज प लागल भोम्हाँ के कुरकुरात आवाज सुनि के हिना के आँख खुल गइल। हिना अपना घर भर के लाड़ली रहली। ए से उनकर हर ख्वाहिश, हर तमन्ना मुँह से निकले में भलहीं देर होखे, पूरा होखे में ना। एकर एगो अउ कारन रहे, ऊ घर में सबसे सुंदर अउर दू भाई के परिवार मधे एकहीं लइकी रहली। हिना से बड़ एगो भाई, फिरोज शेख रहे जेकर उम्र अबहीं अठारह बरिस रहे। हिना फिरोज से चार साल छोट रहली, उनुका से तीन साल छोट भाई रहमत शेख रहलें, एही से हिना के मान जादे रहे।

हिना के अब्बा सीबू अब्दुल शेख के अपना गाँव के पास वाला बाजार में साइकिल रिपेयरिंग के दूकान रहे। ओही दूकान से ऊ आपन घर-गिरहस्थी के भार ढोअस। हिना के अम्मी रजिया फातिमा पुरहथ गृहिनी रहली। अम्मी-अब्बू के एके बात के चिंता बनल रहे। ऊ ई कि हिना आपन जिनिगी के पहिलका रोजा करे वाला रही।

साइद कवनो धार्मिक नियम होई कि लइका होखे भा लइकी चउदह-पनरह बरिस के भइला पर रोजा रख सकत बा भा रखवावल जात होखी कि आवे वाला समय में, अभ्यास होखे से कवनो दिक्कत ना होखे। इस्लाम में रमजान के महीना सबसे पाक मानल जाला। हिना के अम्मी उनका अब्बू से हमेसा कहस- " हिना दूज के चाँद के सही-सलामत दीदार कर लेवे त हम ईदे के दिन मिलाद कराएम। ई ओकर पहिलका रमजान ह जवना में ऊ रोजा राखी।" बात काट के सीबु बोल पड़ले- " हूँ, तू ठीक कहत बारू। हम ए बारे में मौलाना साहब से दरयाफ्त कर लेत बानीं। ई नीमनो रही, अल्लाह चहियन त हिना के कवनो तकलीफ ना होई।"

एक त रमज़ान में अनगुतहीं उठ के सहरी करे परेला, ओने ठीक साँझे खने रोजा खोले के नियम ह, तेकरा बाद नमाज अदा कइल जाला। सहरी के समय सीमित रहेला, ओतने मुंधियारे में जे जवन बना-खा लेव। अहले सुबह मस्जिद से मौलाना साहब हिदायत देवेलें- "सहरी का वक्त हो गया है, आप सब उठें और सहरी करें। आज का वक्त तीन बजे से तीन पच्चीस तक का है।" तेकरा बाद फिजाँ में गूँजत मौलाना साहब के सधल सुर में 'नात' के आवाज बहुते नीक लागेला। नात के पहिला बोल- "या नवी सलाम अलैका या रसूल सलाम अलैका" - के आवाज सुन के हिना उठ गइल रही। हिना के साथे घर के सब केहू उठ गइल रहे। नित काज से

निबट के सभे सहरी करे खातिर बइठल, रहमत सङहीं बइठले। ना जाने काहे सभे हँसे लागल त रहमत पूछि लिहले "अम्मी, आप सब काहे हँसत बानीं लोग?"

रजिया मुस्कुरा के बोललीं- "अरे रहमत, तू काहे हमनीं सङ्हे सहरी करत बाड़ऽ तुहूँ रोजा रहबऽ का?"

रहमत मासूमी से कहलें- " हँ अम्मी, हमूँ रोजा रहबि। काहें, हम काहे नइखी रह सकत? बुबू त आज से रोजा करिहें नु, त हमहूँ बुबू के साथ में रोजा करबि।"

बीचे में बात काट के फिरोज बोलले- " अरे रहमत, तुहूँ अपना बुबू जइसन हो जइहऽ त क लिहऽ, तहरा से अबहीं ना होई बाबू।"

रहमत केहू के बात माने वाला ना रहन- " ना, हम बुबू के साथे अभिए से रोजा करेम।"

सीबू अब्दुल, रहमत के अपना कोरा में लेके समुझावे लगले- "अरे बेटा, जिद ना करे के चाहीं, तू अबहीं छोट बाड़ऽ। बुबू तहरा से बड़ बाड़ी।" लेकिन रहमत कहाँ मानेवाला रहन। सब केहू के समझवला के बावजूद ना मनलें अउर सब के साथ सहरी क के सुत गइलें।

रहमत जब सुबह आठ बजे उठले त उनुका भूख लाग आइल रहे। अब करस त का? ऊ अपना बुबू के नगीच खिसक अइलें। ऊ हिना से कवनो बात ना छिपावस काहें कि हिना उनुका के बहुत मानत रही। रहमत हिना से धीमा आवाज में, कान भिर मुँह सटा के फुसफुसइलें- " बुबू, हमरा भूख लागल बा।" हिना ई सुन के पहिले त मुस्कइली बाकि रहमत नाराज हो जइहें एह वजह से ऊ आपन हँसी रोक लिहली। हिना गँवे बोललीं- " अच्छा ठीक बा, तू रुक हम खाना देत बानी।"

रहमत हिना के बात काट के बोल पड़ले- " अगर अम्मी के मालूम होखी त का होइ? ऊ हमरा के रोजा ना रहे दिहें।

हिना के चेहरा प मंद मुस्कान रहे- " अरे हम बानी नु, अम्मी के मालूम ना होई।"

हिना रहमत खातिर खाना लेवे चल गइली। ओह समय रजिया घर मे ना रहली, कवनो काम से बहरी गइल रही। फिरोज अपना अब्बू के साथ साइकिल दुकान पर चल गइल रहन। हिना खाना ले आ के रहमत के खिया देहली। खाना खाली रहमत खातिर बनल रहे काहे कि रजिया के मालूम रहे रहमत के भूख जरूर लागी। जब रजिया बाहर से अइली त समझ गइली की रहमत खाना खा लेले बाड़ें।

कुछ दिन त एहि तरी बीतल सब केहू जान के अनजान बन रहे। रहमत के भनको ना लागल कि उनुकर खाएवाला बात सभे जानता। रहमत हर सुबह सहरी के बेरा सहरी करस अउ धीरे से अपना बुबू से मांग के खाना खा लेस।

धीरे-धीरे समय बीतत गइल अउर ऊ दिन आइल जहिया दूज के चाँद के दीदार करे के रहे।

सब केहू दूज के चाँद देखलस, ओकरा सुबह उठ के नया-नया कपड़ा पहिन के मस्जिद में दुपहर के अजान के वक्त नमाज अदा कइलस। तेकरा बाद रस्म सुरु भइल सेवई पिए के। रहमत आज बहुत खुश रहन काहे कि उनुका देखे से सब के मालूम रहे कि रहमत रमजान में सब नियम पालन कइले बाड़ें।

सब से ढेर खुशी के बात त हिना के रहे कि ओकर ई पहिलका रमजान अच्छा से बीत गइल। सीबू अउर रजिया के खुशी के ठिकाना ना रहे। रहमत अउर फिरोज अपना संघतिया सब के बोला के सेवई पिये के दावत देले रहलें। साँझ के मिलाद के बेवस्था रहे।

जब रहमत अउर फिरोज के संघतिया शाम के सेवई पिए अइले त ऊ लोग के रजिया सेवई देके कहली कि बाबू लोग ई रहमत के रमजान ह, काहे कि उहो तीनो बेरा खा के रोजा कइले बाड़ें।

सब केहू ठठा के हँस दिहल। रहमतो के हँसी छूट गइल। उनका समझ में आ गइल रहे कि अम्मी अउर अब्बू हमार मन राखे खातिर ई सब कुछ कइले बाड़े।

✍**विवेक सिंह,सिवान**

योग अउर योगी-7

नमस्कार। योग गुरु शशि प्रकाश तिवारी के रउरा सभे के प्रणाम। हमनीं 'सिरिजन' के पाछिल अंक में 'योग अउर योगी' में सर्वांगासन का बारे में पढ़नी। चलींजा, योग पथ पर आगे बढ़त, अब 'शीर्षासन' का बारे में जानल जाई। हमनी के सबसे पहिले ई जानल जरूरी बा कि एकरा के 'शीर्षासन' काहे कहल जाला ।

आसन परिचय

योग के एगो बहुत पुराना नियम ह कि यदि हमनी के अपना हाथ का बले कवनो आसन कर रहल बानी त ओकरे नाम का पहिले 'हस्त', गोड का बले कर रहल बानी त 'पाद्ध', पूरा शरीर (पीठ)से आसन के जोर लाग रहल बा त 'सर्व', पेट से त उदर आ जब अपना सिर से जोर लाग रहल बा त 'शीर्ष' जोड़ दिहल जाला।

शीर्षासन के अर्थ भइल अपना सिर का बले खाडा होकर के समूचा शरीर एकदम सीधा , दुनू गोड उपर का तरफ। जइसे फल के राजा आम, ऋतु के राजा बसंत ह ओसही शीर्षासन एगो प्रमुख ही ना अपितु आसन के राजा भी ह। एह आसन के योगी आ गृहस्थ अपना जीवन में संयम आ शरीर का साथ साथ अपना मन के स्वस्थ राखे खातिर कइल जा सऽकता। हठयोग में शीर्षासन के विपरीतकरणी मुद्रा का रुप में स्थान दीहल गइल बा। कतना लोग त एके कपाली आसन भी कहेला। माने की अपना अपना हिसाब से एकर नाम रखा चुकल बा, बाकिर एकर प्रसिद्ध नाम शीर्षासन ही ह। एह आसन के सबसे बड़का काम ह कि जब हमनी के अपना समूचा शरीर के भार अपना सिर पर अपना हथेली का सहारे डाल करके जमीन पर एक मुद्रा में स्थिर कइल जाऽला तब हमनी के ब्रह्मरंध्र में स्थित सहस्रार से द्रवित अमृत के नाभिदेश में स्थित सूर्य के गर्मी से शोषण जन होऽखे।

विधि

सबसे पहिले वज्रासन में बइठकर दुनु केहुनी के तनिक अंतर पर जमीन पर टिकाईं, अब दूनु हथेली के आपस में गूँथ के जमीन पर टीकाईं। ध्यान रहे कि दूनू केहुनी का बीच में कम से कम एक फूट के अंतर रहे। दू तरह से अपना भौंह का ऊपर पहिले चार अँगुरी, फेर तीन अँगुरी आ फेरु ओकरा ऊपर दू अँगुरी नाप के दुनू हथेली अपना माथा के उपरी भाग में बान्ह लीहीं। आपन सिर के हथेली का उपर सटवले जमीन पर हथेली के लगा दीही आ अपना ठेहुना के जमीन से उपर उठा दीहीं।

अब धीरे-धीरे गोड़ के अपना छाती का तरफ ले आईं, ठेहुना के मोड़ि आ पीठ के सीधा कइके तान दीहीं , अब धीरे-धीरे आपन दुनू गोड जमीन पर से उपर उठाईं आ आपन शरीर के भार अपना कपार आ हाथ पर डाल दीहीं। जब राउर दुनू गोड जमीन से ऊपर हो जाओ तब अपना नितम्ब के टाईट कइके ऊपर का ओरि सीधा करीं आ आपन गोड़ आकाश का तरफ सीधे कर दीहीं।

इहे एह आसन के सम्पूर्ण मुद्रा ह।शुरुआत में यदि चाहीं त देवार के सहारे भी एह आसन के कर सऽकीले।

लाभ

एह आसन का कइला से मस्तिष्क में पर्याप्त रक्त चहुँपेला , जवना से मस्तिष्क के सूक्ष्म सेल, तंतु इत्यादि पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्व के ग्रहण करे में सक्षम, सक्रिय आ स्वस्थ होखेला। हमनी के कार्य करे के शक्ति बढ़ेला। शरीर में रक्त संचार सुचारू रूप से रहेला, जवना से रोग प्रतिरोधक शक्ति में बढ़ोतरी होऽला।

महिला लोग के गर्भाशय के विकार, मासिक चक्र के गड़बड़ी इत्यादि रोग से इजात दियावेला ।

मेरुदंड का भीतरी नीचा का तरफ सुषुम्णा के प्रवाह मस्तिष्क का तरफ हो जाला, जेहसे वीर्य ऊर्ध्वगामी हो जाएऽला।

काम शक्ति बढ़ावेला, घबराहट, उत्कंठा आदि जड़ से समाप्त करे में सक्षम बा।

अस्थमा, Hay Fever, मधुमेह, menopause आदि से लडे के क्षमता प्राप्त होखेला ।

नाड़ी तथा नस के रुकावट दूर करे में सक्षम बा, पीठ गोड के रक्त संचार सुचारू बनावेला।

दिर्घवास सरल करके, श्वास्कोश के carbondioxide, बैक्टेरिया,toxin इत्यादि के निष्कासित करेला।

सावधानी

सामान्य रूप से त योग केहू योग चिकित्सक का देख रेख में ही करे के चाही बाकी थायरॉइड का अति विकास भइला पर , कमजोर दिल वाला , ढेर चर्बी वाला, मस्तिष्क से संबंधित कवनो रोग भइल होखे, चक्कर आवत होखे, आ भा जेकर कवनो प्रकार के आपरेशन भइल होखे ऊ विशेष रूप से केहू के परामर्श लिहला का बाद जानकार के सम्मुख ही करो त जादे नीमन रही।

उच्च रक्तचाप,हृदय रोग, Thrombosis,Anterio Salerosis,Cronic,Catarrah,मलबंध,किडनी, नेत्र,कान का रोगी खातिर शीर्षासन बहुत हानिकारक साबित हो जाऽला।

विशेष रूप से ध्यान राखे के बा कि शीर्षासन कइला के बाद ताड़ासन आ शवासन जरूर करे के चाहीं।

एह संस्करण में एतना ही रहे देवे के, शेष अगिला पुस्तक में रही। योग से संबंधित कवनों प्रकार के सहायता आ भा कुछऊ पूछे के होई त हमरा से shashiprakashtiwari640@gmail.com पर आ भा 9599114308 पर हमरा के फोन/वॉट्सएप कर के हमरा से संपर्क कर सकत बानी। यदि रउरा चाही त यूट्यूब पर भी हमके yogguru shashi prakash tiwari का नाम से खोज सकतानि जाहवा रउरा योग से संबंधित नाया नाया जानकारी लगातार मिलत रही।

रउरा सभे के एक बार फेरु से हमरा प्रणाम का संघे संगे दूनु हाथ जोड़ के जय श्री राम |

✍योगगुरु शशि प्रकाश तिवारी

गँउआ के बसिया शहरिया में जाला

फगुआ एही मार्च के महीना में बीतल ह। फागुन के नशा सराबोर होके जब चढ़ जाए तब ओकरा के उतारे के एकहीं उपाय बा कि अपना आप के ओकरा हवाले कर दीं। ऊ नशा रउआ से जवन करवावे तवन करीं। केहू तनिको बाउर ना मानी। जवन भउजाई हमेशा गोड़ लगवावत होखस उनका पर टिभोली कसे के अधिकार ई फगुए देला आ जब ओने से ऊ मुस्की मारत कहस कि "साफ छिनरई पर उतर गइल बानीं ए बबूआ" तब मन करेला कि करेजा निकाल के उनका गोड़ पर ध दिहल जाओ।

फागुन के साथे बहुत याद जुड़ल बा। हमरा अपना भारतीय संस्किरिती के परब तेवहारन में होली आ छठ विशेष रूप से पसंद ह। कारण इहे बा कि एह दुनु परब में पूरा गाँव लउकेला। गाँव के ऊ हर आदमी लउकेला जे रोजी रोटी खातिर परदेश त चल गइलें बाकिर परब तेवहार पर गाँव आ जालन। फागुन आ छठ हमरा के इहे त देला। ए दुनु परब के बीच जवन पनछुछुर दिन होला तवना के रसगर बनावे खातिर एही दुनु परब के मेल-मिलाप रस भरेला। फगुआ के दिने जब हुड़दंगियन के टोली धूरा आ रंग से सनाइल गाँव में घुमक्कड़ई करे निकले आ पर्दा के ओट से झाँकत भउजाई लउक जास त लइका सब दउड़ जालें उनका के रंग लगावे। मन उनको रंग खेले के होला लेकिन नाकुर-नुकुर जरूर करेली। हाथ गोड़ जोड़ेली आ जब अपना पर आवेली त नीमन नीमन जाना के उघार क देबेली। फगुआ के इहे प्रेम त ह जहाँ सबकुछ खुला हो जाला तबो मर्यादा ना टूटे।

बड़का बाबा आ बाबा, दुनु आदमी अब ना रहनीं। बाबा नीमन गावत रहनीं ह आ बड़का बाबा खूब नीमन झाल बजावत रहनीं। फगुआ के दिने जब माथ पर लाल पगड़ी, उज्जर धोती आ हाफ बाँही के लाल कुर्ता पहिन के दुनु भाई चउक में पहुँचीं लोग त राह निहारत लोग कह उठे कि फगुआ जम गइल अब। जुगुल जोड़ी आ गइल। दल बइठ जाए। आमने सामने बाबा आ रामनाथ बाबा होखीं। बड़का बाबा के झाल के जवाब देत रहीं पंचा बाबा आ ढोलक पर जब थाप गिरे त फगुआ जम जात रहे। बाबा जब कढ़ाईं कि "जेकरा कर में धनुष बिराजे खेलत फिरत हरि होरी" त ओही पर रामनाथ बाबा पीछे से बोलीं "कि बाल सखा बहु संग लियो हैं-२ गावें ताने खगोरी, कहे सिया

जनक किशोरी। रघुवर जी से कहिहऽ मोरी।" राम जानकी के सुमिरत ई फगुआ दिन के दू बजे से शुरू होके अगिला सबेर तक चलत रहे। सभका दुआर पर लटका, जेकरा घरे नया लइका जनम लेले होखे ओकरा दुआर पर मरदाना लोग सोहर गावे, जवना घरे बियाह भइल होखे ओह दुआर पर बधाई गवाए आ गीत कढ़ावे वाला के बगली ओह घर से गरम होखे।

हमरा मन परेला साल २०१२, जब गाँव के गिरीश बाबा, बड़का बाबा से अझुराइल रहनी आ ओह दुनु आदमी में जम के मारपीट भइल रहे। दुनु बगले से लाठी डंटा निकलल रहे लेकिन दुनु जोद्धा केहु के आवे से मना कइले रहलें। बात कुछ रहें न बस आन-शान वाली रहे। बड़का बाबा के आदत रहे कि केहू सामने से अकड़ के जाई त ओकर खैर नइखे। गिरीश बाबा केहू से अझुराइल रहनीं त बड़का बाबा रोके गइल रहनीं। गीरीश बाबा ओह आदमी के छोड़ बड़का बाबा से अझुरा गइनीं आ भिड़ंत शुरू हो गइल। अगिला दिने फगुआ रहे। जब बड़का बाबा के दुआर पर गीरीश बाबा लटका शुरू कइनी कि"असरेसवा में चुवेला हमार बांगला" त भीतरी से इआ अबीर फेंकले रहली। गीरीश बाबा तब फगुआ कढ़वले रहनीं"सोने सी लंका जराइ दिए कपि अब कोई बाच सके ना" त पीछे से लोग सुर मिलइलस कि "तुलसीयदास कहे धीर धरू माता पावक प्रबल बूझे ना, काहु के जुक्ति लहे ना। रघुवर जी से बैर करो ना।" तब लोग कह उठल कि फगुआ इहे ह। काल्ह के मारपीट आज पतो नइखे चलत कि कुछ भइलो रहे।

फागुन के ई गाढ़ मीठ रस बदलत समय के संगे पनछुछुर हो गइल। फगुआ आजो गवाला बाकिर आज केहु के लगे समय नइखे। मोबाइल के इंटरनेट आज सभका के मनोरंजन करा रहल बा। फगुओ अब डीजे बजावे वाला तेवहार बन के रह गइल। भउजाई से टिभोली करेवाला जुग खतम हो गइल आ ओ जगह पर डीजे बाज के कह रहल बा कि भतीजवा के माई जिन्दाबाद। हम ई बात बस कह सकतानीं, रोके गइला पर बात बहुत आगे बढ़ जात बा। थाना पुलिस के नौबत हो जाता आ बेमतलब के फसाद खड़ा हो जाता। परब अब परब ना होके भड़ैंती के पर्याय बन गइल बा। तबो अभी गाँव में कुछ लोग बा जे अपना संस्कार के जीया के रखले बा। ऊ भड़ैंती से लड़ रहल बा, बहुत हद तक समझा बुझा के भटकल लोग के अपना संस्कार का ओर लवटवले बा। हम प्रणाम करतानी ओइसनका लोग के जे बिना कवनो सवारथ के एह धेह से लागल बा कि ओकर संस्किरिती मत छूटो।

फागुन प्रेम बोये के परब ह। जतने एह साल बोएब अगिला साले ऊ लहलहा के रऊआ के खुश करी। हर परब में गाँवे आईं। शहर रोटी दे सकेला, गाँव प्यार देबेला। शहर आराम दे सकेला, गाँव सुख देला। शहर रऊआ के बुद्धिजीवी बना सकेला, गाँव बुद्धि जगावेला। शहर जवन परोसेला, गाँव खातिर ऊ चीज बसिया हो गइल रहेला। कबो सोचब, का रउआ टटका आ साफ चीज ले रहल बानी? का रउआ बसिया नइखीं लेत? सोच के देखब, जवाब ना में मिली। जौहर शाफ़ियाबादी जी एगो गज़ल लिखले रहनीं-------

गँउआ के बसिया शहरिया में जाला
बोल ना टाटका भेंटाला
रहरी मटरवा आ चनवा के कचरी
ताजा ताजा अमरित बूझाला
तोहरा कइसे शहरिया सोहाला ?

✍**प्रीतम पाण्डेय सांकृत**
छपरा, बिहार

सारण सम्मान समारोह
2020

2020
सारण प्रगति सम्मान
भोजपुरी
जय भोजपुरी जय भोजपुरिया

रामनाथ पांडेय स्मृति
सारण गौरव सम्मान
2020

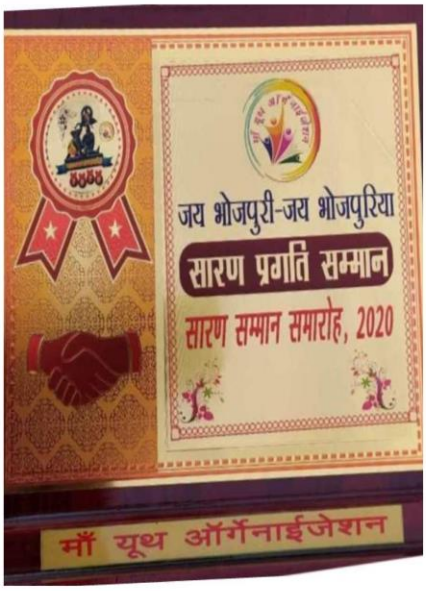
जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया
सारण प्रगति सम्मान
सारण सम्मान समारोह, 2020
माँ यूथ ऑर्गेनाईजेशन

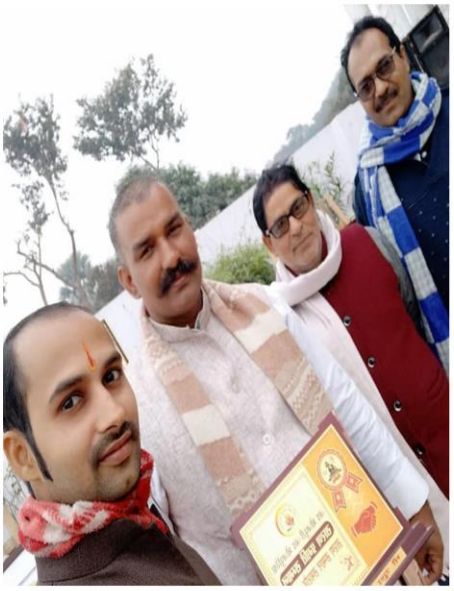

नवकी कलम

हम भाषा भोजपुरी हईं

हँ, हम भाषा भोजपुरी हईं
आवऽ एगो बात बताईं
गाथा तोहके अपन सुनाईं
मिश्री से मीठ मिठाई हईं
दुल्हिन के हाथ के चूड़ी हईं
भोज में के पूड़ी हईं
हँ, हम भाषा भोजपुरी हईं !!

अहिल्या के तारण हईं
राजेन्द्र के सारण हईं
जेपी के आंदोलन हईं
गांधी के चम्पारण हईं
राजनीति के धूरी हईं
हँ, हम भाषा भोजपुरी हईं !!

कुँवर सिंह के हूंकार हईं !
मंगल पांडे के यलगार हईं
अब्दुल हमीद के कुर्बानी हईं
हरदम उफनत जवानी हईं
देशप्रेम से परिपूरी हईं
हँ हम भाषा भोजपुरी हईं !!

अंजन-प्रदीप के गीत हईं
चित्रगुप्त के संगीत हईं
बिस्मिल्लाह के तान हईं
महेंद्र के पूर्वी गान हईं
रंगमंच के भिखारी हईं
हँ, हम भाषा भोजपुरी हईं !!

बनारस के घाट हईं
सोनपुर के हाट हईं
गंगा-सरयू के पाट हईं
राष्ट्र के उन्नत ललाट हईं
मस्त ठाट फकीरी हईं
हँ, हम भाषा भोजपुरी हईं !!

सोहर झूमर खेलवना हईं
बोली भाखा के गहना हईं
होरी चइता आ कजरी हईं
आरा छपरा मिर्जापुरी हईं
ठेठबिहारी के माई भोजपुरी हईं
हँ, हम भाषा भोजपुरी हईं !!

✍**राम प्रकाश तिवारी "ठेठबिहारी"**
ग्राम पोस्ट: भटकेसरी
जिला: छपरा

आँसू इ जुदाई के

आँसू ई जुदाई के ह देखावल ना जाला।
टुटल दिल मे फेर केहु के बसावल ना जाला।
अँखिया में प्यार के सपना रहल,
पागल दिल केहु के दीवाना रहल,

प्रेम के गीतिया अब त गावल ना जाला,
टुटल दिल मे फेर केहु के बसावल ना जाला।
सपना मे मन के मीत बसल रहे,
होठवा प प्रेम के गीत सजल रहे,

झरत आँसू अब त छुपावल ना जाला,
टुटल दिल मे फेर केहु के बसावल ना जाला।
"चंचल" रहे मन उनकर जान ना पइनीं,
बेवफा रहे यार हम पहचान ना पइनीं,

हाले दिल हमसे अब सुनावल ना जाला,
टुटल दिल मे फेर केहु के बसावल ना जाला।।

✍श्रद्धानंद "चंचल"
ग्राम-कसाप, भोजपुर (आरा)

खरहर देह रहे चिकनाइल

खरहर देह रहे चिकनाइल
घर घरनी के अइला पर।
चानी प के बाल नोचाइल,
घर घरनी के अइला पर।

नया-नया में नीमन लागस,
हमरो से शरमा के भागस।
बोली में रस रहे लपेटल,
सभसे पहिले ऊहे जागस।

हम जननी मय कष्ट पराइल
एक से दुगो भइला पर ।। खरहर ..... ।।

छप्पन भोग खियावत रहली,
पाछे सभके माठा महली।
भेंटत बा अब रोज करइला,
अंतरजाल धार में बहली।

नागिन जस फुँफकासर रानी
नेट पैक ओरइला पर ।। खरहर.....।।

अब त हमहीं काम करेनी,
हरदम उनुकर पाँव धरेनी।
नैना चार लडावल दूभर,
हिरन घात लगावे शेरनी।

नर से बानर बनके नाचीं,
ड़मरू धून सुनइला पर।। खरहर.....।।

✍विवेक पाण्डे, आरा, बिहार

फौजी बनाइब

बलमु आपन लइका के फौजी बनाइब
फौजी बनाइब हो फौजी बनाइब
बलमु आपन लइका के फौजी बनाइब

माई बाबू के रोशन करी नाम हो,
चलत डहरिया, लोग करिहें सलाम हो
कइसे कटवले सर कहनी सुनाइब,
बलमु अपन लइका के फौजी बनाइब।

सीमा पर ठाढ़ होई बनके सिपहिया,
देश दुश्मनवा के, गोली मारी जहिया
ताही दिन गरव से छतिया फूलाइब।
बलमु आपन लइका के फौजी बनाइब

गिलवा शिकायत रही नाही मन में ,
चमकत रही चांद बनके गगन में
अब्दुल हमीद ,भगत ,आजाद सा बनाइब
बलमु आपन लइका के फौजी बनाइब ।

✍राना रंजीत बासु,
ढढ़नी भानमल राय, गाजीपुर

पहीला मोहब्बत

अनगिनत लोग
आवेले जाले जिन्दगी में
लेकिन पहिला मोहब्बत,
एक बेर ही हो सकेला;
बहुत बेर माई के घरे ना रहला पर
मोटे-मोटे रोटी अउरी;
खूब तित तरकारी में ढेर सारा
घिउ डाल के थरिया में;
परोस के देबे वाला से भी
हो सकेला पहिला मोहब्बत;
कही कवनों मेला में,
बिना कवनों गिलास या बोतल के
दूसर कवनों नल से;
हथेली के कटोरी बना के
हमार पियास मिटा देबे वाला से भी;
हो सकेला पहिला मोहब्बत।
दिन भर के कड़ी मेहनत के बाद
अपना पेट पर औधा सुता के;
हमार कम अकल के हिसाब से
हर सवाल के जवाब देबे वाला से भी;
हो सकेला पहिला मोहब्बत।
हँ एक बार ही;
हो सकेला पहिला मोहब्बत।

✍भरत तिवारी
ग्राम-बभनौली,पोस्ट-छितौना
थाना-विजयीपुर,जिला-गोपालगंज
(बिहार)

जा ए कोरोना

जा ए कोरोना, गज़ब के रोआ देल रोना
तू चीन में जनमल
आ एक सौ बाइस देशवन में पसरल
रोअस महारथी फ्रांस जर्मनी
रोअस अमेरिका अलगे आपन रोना
जा ए कोरोना .....
बोखार पहिले भी होत रहे
इ नया केहू ना ढासेला
बनलऽ तु बड़ा नाशक
बढ़ल मय लोगन के झमेला
डरल लोग सब तोहरा से, कहे घर में लुकोना
जा ए .....
ना बात बुझाता
ना कुछु सुझाता
ना केहू गला लगावे
ना हाथ पर हाथ पिटाता
तोहार भूत घुस गयल बा
तन के हर कोना-कोना
जा ए कोरोना, तु गज़ब के रोआ देल रोना
जे ने देखी ओने
लोग बात बाटे एके गो गिजऽत
तोहार परिचय बतावे में अपना में रिझत
कुछ लोग कहे तोहरा के
रे कलमुँहाँ अब भाग जो ना
जा ए कोरोना, तु गज़ब के रोआ देल रोना

✍रविकांत शास्त्री
ग्राम+पोस्ट- मंगोलापुर
छपरा

सरसो

सरसो फुलाई गइले, मन हरसाई गइले
नाहि अइले हमरो, सजनवा ऐ राम जी,
नाहि अइले हमरो, बलमवा ऐ राम जी।

सरसो के देखी देखी, तन पियराई गइले
बिरहा में तड़पता, जियरा ऐ राम जी,
बिरहा में तड़पता, जियरा ऐ राम जी।

गवना कराई सइयाँ, घर बइठाई गइले
रात दिन सिसकेला, हियरा ऐ राम जी,
रात दिन सिसकेला, हियरा ऐ राम जी।

सखिया ननद रोज, हँसी-हँसी बिहसेली
नाहिं भेजे चिठिया, ना सन्देशवा ऐ राम जी,
नाहिं भेजे चिठियाँ, ना सन्देशवा ऐ राम जी।

राम जी के ध्यान धरी, रोये बिरहिनिया हो
सइयाँ के बुलाई दिही, घरवा ऐ राम जी,
बलम के बुलाई दिही, घरवा ऐ राम जी।

✍संजीव कुमार रंजन
राजेन्द्र नगर, गोपालगंज, बिहार।

बंशी

दीपक बड़ी देर से एगो पेड़ के नीचे खड़ा रहलन। रिक्शावाला के इंतजार करत रहलन। बहुत बरिस पहिले जब ऊ आफिस जास त ओहि पेड़वा की छाँव में खड़ा होके रिक्शा के इंतजार करस। बंशी नाम के एगो रिक्शा वाला आपन रिक्शा लेके तुरन्त पहुँच जाव, उनके ऑफिस पहुँचा देउ। रोज बंशी से उनकर मुलाकात होखे, रोज बंशी उनके ऑफिस पहुचावस,

"बाबूजी जौन बुझाई तउन दे देहब", मुरझाइल मन से बंशी जवाब दिहलन।

"ठीक बा त तनी जल्दिये पहुचा द"।

दीपक ऑफिस आ गइलन। बंशी के कहलन शाम के 5 बजे एहिजा आ जइब, त फेर हमरा के लेले चलतS..।

"ठीक बा, हम 5 बजे आ जाइब"।

ठीक 5 बजे बंशी ऑफिस के सामने रहलन।

छुट्टी होखे त दीपक साहब के घरे उनकरा रूम पर पहुँचा देस। बात भी खूब होखे। बंशी ओ घड़ी अपना घर में अकेले रहस, माई बाबूजी के सेवा करस अउरी रिक्शा चलावस, अपना परिवार के देखस। ओ बंशी रिक्शावाला से आत्मीय लगाव भ गइल रहे।आज फिर से ए शहर में दीपक के ट्रांसफर हो गइल रहे। आज पहिला दिन रहे, उनका समय से ज्वाइन भी करे के रहे। आज त हद भ गइल, खाली टो टो ई रिक्शा लउके, रिक्शा ना लउके। तले अचानक एगो बूढ़ा रिक्शा वाला लगे आइल।

"बाबूजी कहाँ चलब"?

"हमरा ऑफिस चले के बा, क रुपया लागी"?

दीपक ऑफिस से बाहर अइलन त रिक्शा देख के बड़ा खुश भइलन। दीपक रिक्शा पर बइठलन त पूछलन कि ई बताव, तहार का नाम हवे? बंशी आपन नाम बतवलन। नाम सुनल जान के दीपक फिर से ई बात पूछलन कि रिक्शा केतना दिन से चलावे ल..?

"हजूर, रउआ हमरा के नइखी चिन्हत, हम रउआ के पहचान गइनीं हँ.. रउआ आज से बीसन बरिस पहिले एही ऑफिसवा में काम करत रहनीं। हम रउआ के रोज ऑफिस ले आईं औरि घरे ले जाईं। फेरु रउआ पता ना कहाँ चल गइनी.."?

"कहीं तू उहे...बंशी त ना हउअ..."?

"जी साहब, हम उहे हई"।

बड़ी आत्मीयता के अनुभव भइल दीपक के। बीसन बरिस पहिले के इयाद ताजा भ गइल। बुझाइल कि केहू बड़ा दिन के बाद मिलल बा।

बात चीत होखे लागल। दीपक पुछलन कि ई बतावS.... कि ए शहरिया में बड़ी कम रिक्शा लउकत बा, का बात बा?

"साहब, हमनीं रिक्शा चलावे वाला के आफत आ गइल बा। सरकार ई रिक्शा के परमिट दे दिहले बिया, जेकरा से शहर में खाली ई रिक्शा चलत बा। हमनी के संख्या धीरे धीरे घटत जात बा",।

"सरकार प्रदूषण घटावत बिया, एहीसे ई रिक्शा के परमिट देहले बिया, ई बैटरी से चलेला और धुंआ ना निकलेला"।

बंशी एगो लम्बा साँस खींच के फेर से कहे लगलन...

" हजूर, हमरो रिक्शवा से भी प्रदूषण ना होखेला, लेकिन का करब, हमनी पर सरकार मेहरबान नइखे। जब सरकार के प्रदूषण खत्मे करे के बा त गाड़ी के अनावश्यक बिक्री पर रोक लगावे के चाहीं, जेकरा जरूरत नइखे उहो गाड़ी खरीद लेले बा झुठहूँ शान खातिर दिन भर धुँआ निकल रहल बा।"

" ई बात त सही कहले बाड़S। सरकारी बस के बढ़ावा देवे के चाहीं। जापान में लोग पब्लिक ट्रांसपोर्ट ज्यादा उपयोग करेला, एहीसे ओहजा प्रदूषण कम बा। ओहजा लोग मोटरसायकल, कार,बहुत कम चलावेला, साइकल ज्यादा लोग उपयोग करेला.....लोग ओहजा समझदार भी बा, एहीसे उहवाँ प्रदूषण एकदम कम बा। एगो औरि बात बा रिक्शा चलावत बाड़, तहार शरीर भी स्वस्थ ही रही, कौनो बीमारी नजदीक नाहीं आई " दीपक कहलन।

बतियावत- बतियावत समइया कट गइल, घर आ गइल।

साहब उतर के बंशी के भाड़ा देइके कहलन, काल सबेरे आ जइहS... अब रोज तहरे ले जाए के बा, ले आवे के बा।

बंशी बड़ी खुश भइलन कि एगो फिक्स सवारी हो गइल।

अगिला दिने बंशी टाइम से आ गइलन..

बातचीत होखत गइल...

बंशी बड़ी खुश रहलन।

शाम के बंशी 5 बजे ऑफिस पहुँच गइलन। साहब में 10 मिनट लेट रहे, त गाना गुनगुनाए लगलन...

"जब से ई रिक्शा आइल बाजार में,
तब से हमरो रिकशवा बेकार हो गइल।
दिन भर खड़े खड़े बीते बाजार में,
मिले न एकहूँ सवरिया इंतजार में।
गिनती के हमनीं बचल बानीं संसार में,
आमदनी बिना जिनगिया बीतत बा अंधकार में।
जब से ई रिक्शा आइल बाजार में,
तब से हमरो रिकशवा बेकार हो गइल।"

साहब ऑफिस से बाहर अइनीं। रिक्शा पर बइठनीं... धीरे धीरे रिक्शा बढ़े लागल...समय के चक्र खानि पहिया घुमे लागल....।

✍संजीव कुमार रंजन
राजेन्द्र नगर, गोपालगंज(बिहार)।

मानव जाति खातिर नया खतरा : कोरोना वायरस

घर से ले के दुआर तक, गाँव से ले के शहर तक आ देश से ले के बिदेश तक पूरा दुनिया में आज-काल्ह एकहीं चर्चा के बिषय बा- कोरोना वायरस। चीन से निकल के आइल ई वायरस ए घरी पूरा दुनिया के अपना चपेटा में ले लेले बाटे। आज केहू ई नइखे बता पावत कि ई कोरोना-काल कबले चली, कब ई वायरस खतम होई आ कब दुनिया ए से मुक्ति पाई? इटली जेइसन देश में एक दिन में लगभग 1000 लोग ए वायरस क वजह से दुनिया छोड़ देहलन। अमेरिका में भी ए से एक दिन में लगभग 400 तक मौत भइल बा जबकि ई कुल देश हर तरह से संपन्न देश बाड़न स। फिर भी कोरोना से लड़ाई में दुनिया क हर बरियार से बरियार देश हारत नजर आवता।

भारत जेइसन देश में जहाँ पर स्वास्थ्य सुविधा बहुत सीमित बा ओइजा देखल जाव त अब तक स्थिति नियंत्रण में बा लेकिन हर रोज एतना तेजी से आँकड़ा बढ़ रहल बा कि आगे का होई कुछ कहल नइखे जा सकत। देश के 21 दिन के खातिर पूरा तरह से लाकडाउन कर देहल गइल बा लेकिन ई उपाय भी केतना सफल होई का कहल जा सकेला। देश में सवा सौ करोड़ क आबादी घर में एकदम से बंद हो पाई कि ना हो पाई एकरो का अंदाजा लगावल जाव?

टीबी में आ अखबार में रोज हमनीं क देखतानीं जा कि फलाना जगह के अदमी लाकडाउन में बेवजह घूम ताड़न त कहियो ई देखे के मिलेला कि कहीं पर पुलिस जनता पर जरूरत से ज्यादा सख्ती करे लागल त कहियो ई देखे के मिलेला कि फलाना जगह पर हई दोकानदार जमाखोरी करत पकड़ा गइल बा। कहे क मतलब कि चुनौती बहुत ढेर सारा बा आ शासन-प्रशासन कइसे ए कुल से निपटी ई देखे वाली बात बा?

शासन-प्रशासन आपन बिबेक से आपन काम करत रही लेकिन हमनी के भी, आम जनता के भी देश क एगो जिमवार नागरिक होखे के बद कुछ फर्ज बनता। पहिला बात कि ई बेमारी एक-दूसरा के सम्पर्क में अइले से ही त फइलता। चूँकि एकर इलाजो अबही तक नइखे,

एहीसे जेतना हो सके एकंता में रहला के काम बा। काहें से कि आपन बात रही त आपन, एमा त एगो इहो खतरा बा कि अगर अपना के कोरना ध लेहलस त अपने शरीर से होके ऊ केतना सौ आ केतना हजार लोगन तक फइली कवनो ठेकाना नइखे। एही से हमनी के जिमवारी और बढ़ जाता।

देश में लाकडाउन बा मानल जाता कि हमनी के सबके एसे कुछ समस्या होई अरे कुछ का बहुते समस्या होई लेकिन अगर समस्या ना होखे के रहित त ई रोगवे काहें के आइल रहित आ अब ई आ गइल बा त हमनी क ए समस्या से सामना न कइल जाई कि ई आफत में भी आपन सुख-सुविधा आ आपन सुतार देखल जाई आ अगर हमनी क एहू में सुतार खोजे लागल जाई त कायरे न कहाइल जाई। लाकडाउन में सबसे ढेर धियान एही बात क रखे के बा कि घर से बहरा एकदम निकलबे मत करे। अगर घर में कवनो चीज ओराइयो गइल बा त ओकरा बिना कुछ दिन हमनी क काम ना चला लेहल जाई? जेवन बा ओही में काम चलावऽ आ ओही में संतुष्ट हो जा ई कुल त हमनी क छोटे से सीखत-पढ़त आइल बानी जा फिर अब एकर पालन करे में काहे के पीछे हटल जाव। याद रखे के बा कि ई बीमारी अगर कंट्रोल से बहरा जाए लागल त केहू क जीव ना बाची काहें कि हेतना बड़ आबादी वाला देश में मरीजन क संख्या ज्यादा बढ़े लागी तऽ न ओतना अस्पताल बा आ न ही इलाज करे वाला ओतना ढेर डाकटर। एही से बस कुछ दिन तक तनकी कष्ट उठा लेहल जाई त आगे सुखे सुख बा।

आखिर में फिर से इहे कहे के बा कि घर पर ही हमनी क चऊबीसो घंटा बितावल जाव। अच्छा-अच्छा किताब पढ़ल जाव, गाना सुनल जाव, खेल खेलल जाव आ अपना परिवार क संगे समय बितावे के मोका मिलल बा त परिवार क संगे समय बितावल जाव। बहरा अदमी ना जइहें त प्रशासन पर भी कम दबाव रही आ उहो लोग आपन जरूरी काम बढ़िया से कर पइहन जा। हमनी क पुरनिया लोग एसे बड़-बड़ महामारी आ एसे बड़-बड़ मुसीबत से लड़ के जीत गइलन जा त हमनियो क ई कोरोना-मोरोना से जीत के निकलल जाई। एसे हमनी क घर में बइठ के लड़ल जाई आ जीतल जाई। कोरोना हारी आ भारत जीती आ जीत के ही रही।

✍**समीर कुमार राय**
सेमरा(शेरपुर)
गाजीपुर, उप्र

ज़िनिगी जियल कबो एतना मुहाल हो जाला

ज़िनिगी जियल कबो एतना मुहाल हो जाला।
कहिया भेंट होई मौत से सवाल हो जाला।

जिये-मरे के परेला बाजार के हर दाव पर
अदिमी के गुरबत में अइसन हाल हो जाला।

जवानी हमरा जवार में कहाँ केहू के मिलल
हाड़ गल जाला पुरनिया जस चाल हो जाला।

आख़िर भरलो से भी न भरेला दिल के दरद
प्यार में जब विश्वास ढेर खाल हो जाला।

✍**दीपक सिंह**
कोलकाता

कइसे होई पिया से मिलनवाँ

कइसे होई पिया से मिलनवाँ
हो रामा पिया नाहीं अइलें।

एक त रतिया अगिया लगावे ,
दूसरे ई पुरुआ बेयरिया
हो रामा पिया नाहीं अइलें ।

रहिया देखत मोरा फागुन बितल ,
आ गइले चइत के महिनवाँ
हो रामा पिया नाहीं अइलें ।

पिया के वियोगे मोरा देह पियरइली,
आसरा में छुटेला परानवाँ
हो रामा पिया नाहीं अइलें।

मोर निर्मोही सइयाँ बतियो ना बुझे,
पेठा दS शैलेन्दर खबरिया हो रामा
पिया नाहीं अइलें।

✍**शैलेन्द्र कुमार तिवारी,**
श्रीनाथजी पार्क सोसाइटी,
सिंगरवा, अहमदाबाद।

निर्भया के चिट्ठी आपना माई के नावें

आदरनीया माई,

गोड़ लागतानीं।

हम स्वर्ग से ई चिट्ठी लिखतानीं, काहें कि आजुए हमार पोस्टिंग एहिजा भइल ह। धरती से हमरा इंसाफ के फाइल क्लियर हो के यमराज जी का पास भेजा गइल। उहाँ का हमार एन0 ओ0 सी0 जइसहीं मिलल, हमरा के स्वर्ग की केबिन में नियुक्त क देहनीं। का करीं माई, सात बरिस से हम एकर रस्ता देखत (वेटिंग फार पोस्टिंग) रहीं।

माई! हम आज बहुत खुश बानीं कि तोहार मेहनत रंग ले अइलस। साँचे कहल बा कि देर भले हो जाई बाकी अंधेर ना रही। आज मतारी फेन से जीत गइल। हमरा तहरा प बड़ा गर्व बा माई आ एहिजा हम ठाकुर जी से एके पराथना करतानीं कि जब हमरा के धरती प भेजस त हम तोहरे कोख से जन्म लीहीं।

माई! तू कइसन बाड़ू? हमरा चलते तहरा कतना कष्ट भोगे के परल। हमरा के माफ क दिहS माई। बाबूजी कइसन बानीं? अपना भारत देश के का हाल बा? सुनतानींं कि एगो मुँहझौंसी बिदेसी बेमारी लखेदले बिया?

माई हो तोहनीं सब जानी ध्यान से रहिहS, साफ-सफाई प जादे ध्यान दिहS। ओहिजा के परधानमंतरी जी के निहोरा के पालन करिहS। एह बेमारी के जवन-जवन बचाव बा ऊ सब करिहS आ दोसरो से करवइहS।

हमार चिंता मत करिहS, हम खूब खुस बानीं। बाकी कबो-कबो तोहरा लोग के बड़ी इयाद आवेला। अब लिखल बन्न करतानीं।

सभका के हमार परनाम कहिहS।

तोहार स्वर्गवासी धिया,

निर्भया

✍गीता चौबे "गूँज
राँची झारखंड

भुख रोटी के

ई घटना दस बारह साल पहिले के ह, जब हम दिल्ली रहत रहीं । बदरपुर से एम्स की तरफ जाएवाली बस भीड़ से खचाखच भरल रहे । भीड़ से बचे खातिर हम एगो कोना में दुबक के अपना के सुरक्षित करत रहनीं आ बहुते सारा खेयाल में खो जात रहीं। साँच पूछीं त दिल्ली में जेकर आपन रहे के घर आ आवे जाये के गाड़ी बा नु, ऊहे राजा बा। पढ़ाई पूरा भइला के बाद रोजगार की तलाश में हमहूँ दिल्ली आइल रहीं आ हमरो आवे जाये के साधन ई बसे रहे । बस अभी आधा घंटा चलल रहे । तबले चोर - चोर, पकड़ीं लोग, हमार बटुवा उड़ा के भागत बा .....के आवाज सुनाई पड़ल । हम बस की खिड़की से देखे के कोशिस करे लगनीं ।

तेइस- चौबीस साल के एगो जवान लइका बस से उतरि के भागत रहे । कुछ लोग पीछे - पीछे पकड़े खातिर दउड़त रहे। थोड़े देर बाद ऊ गली में भाग गइल आ आँख से ओझल हो गइल । दिल्ली में पॉकिट मराइल आम बात ह । कुछ दिन बाद हम बस के गेट के लगे खाड़ हो के बस में एम्स के तरफ जात रहीं । बस एम्स के आस पास रहे आ स्टॉप पर रुकेवाली रहे तबले आवाज आइल- चोर, पर्स खींच ले गइल । हउहे ह, पकड़ीं सारे के । कुछ लोग जोश में पकड़े खातिर दउर गइल । साथ में हमहूँ हो गइनीं । नवजवान चार से पाँच लइकन ले टोली रहे चोरन के । कुछ देर ले पीछा कइला का बादो ऊ चोर ना पकड़ पवनीं बाकी गली में भागत ओकर चेहरा एक झलक जरूर लउक गइल रहे ।

हम वापिस आ के दोसरा बस में बइठ गइनीं आ सोचे लगनीं कि हो ना हो ई समीरवे ह जवन दिल्ली में भाग के चार साल

पहिले आइल रहे । असल में समीर हमरा बगल गाँव के हमार स्कूल के संघतिया रहे । समीर पढ़ाई में भा कवनो काम में शार्टकट तरीका अपनावत रहे । फिल्मी जीवन जीयेवाला ख्वाब देखत रहे । खैर, हमार स्टॉप आ गइल आ हम उतर गइनीं ।

कुछ दिन बाद अचानाक ऊ हमरा से कालका जी मंदिर के लगे मिल गइल । अब एकरा के चमत्कार कहीं कि इत्तफाक । हाल खबर पुछला के बाद ऊ हमरा के अपना रूम के पता देहलस आ चल गइल । हम बहुत सोच विचार करे लगनीं । एक दिन अचानक हम समीर के रूम पर चल दिहनीं । रूम में रोजमर्रा की जरूरत के सब सामान रहे । ऊ कुछ खाये के सामान लेबे खातिर बहार गइल । तब ले हम ओकर रूम में ताक झाँक करे लगनीं, बाकीर कुछ ना मिलल जवना के चलते हम ओ दिन कुछ ना बोल पवनीं ।

कुछ दिन के बाद हम एक बेर फेर समीर के रूम पर गइनीं । दरवाजा अंदर से बंद रहे । आवाज देहनीं । ऊ सूतल रहे शायद । का हो, बड़ा दिन बाद। कवनो फोनो ना कइलS। का बात बा समीर पुछलें? हमार आज फोन बस में चोरी हो गइल ह । एही से फोन ना क पवनीं । कवनो बात ना हमरा लगे 2 गो फोन बा, जवन पसन होखे ऊ ले ला । आज रात के हमरा रूम पर रुकिहS, कहि के ऊ बाहर चल गइल । रात के 10 बजत होई, समीर पसेना में लतफत भइल रूम पर आइल। साथ में खाना के थैली रहल ।

खाना खात घरी हम बात कइल शुरू कइनीं ।समीर तू बहुत दिन से दिल्ली में बाड़S, कवन काम करेलS? ना होखे त हमरो के अपने साथे काम पर रख लS । छव महीना हो गइल घर से अइले। अभी ले कवनो ढंग के नोकरी ना मिलल ।

हम बहुत मेहनत के काम करीले। एस्पोर्ट कंपनी में। तहरा से ऊ काम ना होई । हमरा के कुछ दिन के समय दS। हम केहू से बात क के तहरा के काम पर रखवा देम, समीर कहलस। बाकिर हम ज़िद पर रहनीं कि हम काम तहरे कंपनी में करेम, चाहे जवन होखे । बहुत हुज्जत कइला के बाद समीर साँच बोल देहलस कि हम कवनो काम ना करीले । हम बस आ बाजार में पॉकिट मारीले । हमहूँ दिल्ली में काम खातिर दर दर भटकनीं, जब कुछ ना मिलल त लफुवन के साथ पेट के खातिर ई काम सुरू क देहनीं। पेट खातिर ना हो दारू, शाराब आ अय्याशी खातिर समीर, हम बीच में टोक देहनीं । हमरा अतना कहते समीर बिदक गइल। हँ, हँ रहे द$ ...

पेट के आग का होला ई हम बुझले बानीं। दिल्ली में आ के जब रोटी ना मिली त छीन के खाइल कवनो पाप ना ह ? रोटी पर सबकर मौलिक अधिकार बा । ई तहरा जइसन पढ़ल लोग के ना बुझाई । अच्छा समीर एगो बात बतावा- ई रोटी पर ज्यादा हक केकर बा? तहार कि हमार ? जाहिर से बात बा हमरा लगे नोकरी नइखे त, हमार बा। ई जबाब रहल समीर के हमरा सवाल के ।

सही कहत बाड़ा, वाह भाई, वाह। रोटी पर हक तहार बा, बाकिर जवना बेरा हम किताब पढ़े में आपन दिमाग लगावत रहीं तवन घड़ी तू मिथुन के फिलिम देखे में । जब स्कूल के बोर्ड पर आँख गड़ावे के घरी तू बहरी जा के नयन लड़ावत रहा । हम जब रात रात भर जाग के पढ़ी त तू अजमेरी में आर्केस्ट्रा देखत रहा। बाह, बाह, तहार पेट भरल बा एही से ई भाषण देत बाड़S, समीर बीच में टोक देहलें । रोटी पर हमार मौलिक अधिकार ना मिली ता हम छीन के खाएम । दुनियाँ में सब केहू एक दूसरा के हक छीन के खात बाड़े । ए देश में जेतना नेता, डाक्टर, पुलिस सब केहु चोर बा, हमहीं ना । समीर के जवाब रहे । पूरा रात बहस चलल । सुबह हम एक बेर फेर से समझावे

के कोसिस कइनीं कि ई लाइन गलत बा। ई सब छोड़ दS आ मेहनत से दू पइसा कमा आ घरे भेजS । बाकिर समीर आसानी से माने वाला कहाँ रहे !!हर बात पे हुज्जत करे खातिर तेयार रहे ।

दिन में हम आपन रूम पर जाये खातिर तेयार भइनीं । समीर भी हमरा साथे बस अड्डा पर अइलें । बस में टिकट लेबे के बेर एगो आदमी पर नजर समीर के पड़ गइल । जवना के बटुवा में ज्यादा पइसा रहे । लाख इसारा कइला के बादो समीर के अंदर से शैतान जाग गइल आ ऊ ओकरा बगल वाली सीट पर बैठ गइल । मौका पा के बटुवा उड़ा के निकल गइल । हम बदरपुर आ के उतर गइनीं ।

ओने समीर पइसा मिलते अपनी प्रेमिका के साथे खूब रंगरेली मनवले पांच छव दिन ले । सातवाँ दिने हमरा फोन पर फोन आवे लागल समीर के । हम ना फोन उठाईं । गुस्सा बहुत आवे। कबो मन करे कि एक बेर बात क के पूछीं । तबले अचानक हमरा बास के फोन आइल कि आज शाम के तहरा बावल जाये के बा हरियाणा में तू तेयार हो जा । हम कपड़ा रखे लगनीं आ रात के जाये के तेयारी करे लगनीं । नव बजे हमार बस रहे, धौलाकुवा से सात बजे मन ना मानल त हम समीर के फोन कइनीं । हमरा घरे जायेके बा कुछ पैसा चाहीं। अम्मा के तबियत बहुत खराब बा। ऊ अब बची ना । हम एक बेर माई के देखे के चाहत बानीं, समीर कहलस । बाकिर समीर तहरा ता आपन घर दुवार माई बाप से कवनो मतलाबे ना रहल ह। अचानक ई अतना प्यार दुलार आ आँसू कहाँ से? तहार त दुनियाँ रात के डिस्को डान्स, लइकी आ दारू में रहल ह। फेर ई माई पर ममता कहाँ से? हमरा लगे पइसा नइखे । ई जरूर तहार कवनो नया पाएत्रा ह, पइसा लेबे के। कहि के फोन बंद कर देहनीं ।

सुबह हम बवाल पहुँच गइनीं । साईट पर रिपोर्ट कर के सुत गइनीं । कुछ काम ज्यादा रहला के चलते समय न मिल पावे । रविवार के समय मिलल त हम समीर के फोन कइनीं । बहुत घंटी भइल बाकिर केहू फोन ना उठावे । शाम के एक बेर फेर हम फोन कइनीं । फोन पर केहू औरत रहे, हम कहनीं कि समीर से बात करवा दीं । ऊ बात करे लायक नइखन । हम उनकर बहिन बोलत बानीं । का भईल बा समीर के? बतावS हमरा के आ तोहार अम्मा कइसन बाड़ी? अतना सुनते ऊ रोवे लागलि आ बतवलसि कि माई त चल गइली हमनीं के छोड़ के । कइसे आ कब?- हम पूछनीं। माईं के कुछ दिन पहिले से तबियत खराब रहे त हमनीं के दिल्ली के एम्स में देखा के घरे लेके आइल रहनीं हँ जा । दवा खत्म हो गइल रहे आ ऊ दवा इहवाँ ना मिलत रहे त अब्बा कवनो अपना दोस्त से जे दिल्ली काम करेले ऊ गाँवे आवे वाला रहले उनकरे से कहि के दवा लेबे खातिर एम्स भेजले बाकिर कवनो उनकर बटुआ चोरी कर लेहलस आ पइसा के साथे साथे अम्मा के पर्ची भुला गइल। समय से दवा ना मिलल त शायद एही से अम्मा के इंतकाल हो गइल आ जब से भाई जान घरे आइल बाड़े, ई सब सुन के ऊ पागल जइसन बर्ताव करत बाड़े । केहू से कुछ बात नइखन करत ।

ए घटना के सोच के हम आज भी सोचीले आ घुटघुट के रहीले। काश, हम ओ दिन समीर के पइसा दे देले रहतीं । हमार पइसा ना दिहल सही रहे कि गलत? रउरा जबाब के इंतज़ार में-

✍**अभियंता सौरभ भोजपुरिया**

जय हो कोरोना

(भोजपुरी झलकी)

गंजी आ हाफ पैंट में एगो गरीब , दुखिआरा, सतावल आदमी। जे हाथ जोड़के गिड़गिड़ा रहल बा। ओकरा के घेरले एगो काली कलूटी, भयावह कोरोना माई। जवन डेरवावत बिआ।

आदमी :- जय हो बरहम बाबा. जय हो काली माई. हे शंकर भगवान, बचाव जा ए दादा. जान जाता ए दादा. बचाव जा हो

कोरोना:- हूँह, केहू ना बचाई...

आदमी:- जय हो कोरोना माई. (आदमी गोड़ परत बा) गोड़ लागत बानी ए दादा. हमरा के छोड़ द$ ए मइया....

कोरोना:- हमरा के पुलिस समझ लिहले बाड़े का कि पकड़म आ छोड़ देम?

आदमी :- ना ए दादा, तू शक्तिमान बाडू. भगवान बाडू. बस एक बेर छोड़ द$ ए माई....

कोरोना:- हमरा डर से दुनियाँ थरथर काँपता आ तोर अतना हिम्मत कि बहरी घुमत बाड़े...

आदमी :- हमहूँ काँपते- काँपते बहरी निकलनी हँ हो दादा. हम त खाली बबितवा के झाँके आइल रहनी हँ हो दादा....

कोरोना:- ओ हो, आशिक...., आशिकी के भूत सवार बा. देख ले, भरपेट देख ले. (भिरी आ के) फेर हम देखे लाएक ना छोड़म.

आदमी :- अब ना देखम हो दादा. अपनो माई बहिन के ना देखम हो दादा. बिआह होई त मेहरारूओ के ना देखम हो दादा...

कोरोना:- नाहीं, नाहीं.. एक दू बेर अऊरी निकल के देखे अइहे....

आदमी :- हम 21 दिन ना निकलम हो दादा. 21 दिन का 21 साल, पुरा जिनिगी घर से बहरी ना निकलम हो दादा. बस एक बेरी घरे जाए द ए कोरोना माई...

कोरोना:- अरे, तोर परधानमंत्री, घर से बहरी निकले से मना कइले बाड़ें न. तबो तू बहरी घुमत बाड़े...?

आदमी :- ऊ त मोदीजी हवें ए दादा. जबे ना तबे 'मन के बात' करत रहेलें हो दादा...

कोरोना:- त ऊ मजाक करत बा का....?

आदमी :- ना हो दादा, ऊ मजाक ना करेलें. राति में टीव्ही प आठ बजे आवेले आ बोलेलें. (दुनु हाथ उठाके मोदी की आवाज में) भाइयों एवं बहनों, आज रात बारह बजे से.....

ओकरा बाद ऊ कुछुओ बंद करा देले हो दादा. 500 आ 1000 के बक्सा में सरिआ के रखल नोट के घूरा प फेंके के परल रहे हो दादा. नाली में बहावे के परल रहे हो दादा. एह बेर त एके बेरी में 135 करोड़ लोगन के 21 दिन खातिर बन क देल बाड़े... तू आपन देख लिह$ केने लुकइबू हो दादा....?

कोरोना:- (चिल्ला के) हम कोरोना हईं....

आदमी :- ऊहो मोदी जी हवें. कुछो क देलें हो दादा. एतवार के खाली 05 मिनट थपरी बजावे के कहले रहें. पता न कए लाख थरिआ थूरा गइल हो दादा.....

कोरोना:- अच्छा, त तोहनी के थारी चम्मच बाजा के हमरा के भगा देबसन...?

आदमी :- ना हो दादा, ऊ त करोना फाइटर, डकदर, पुलिस लोगन के धनवाद करत रहीं जा हो दादा...

कोरोना:- अच्छा, त ऊ लोग का क लिही हमार....?

आदमी :- ऊहे लोग त सभ केहू के जान बचावता हो दादा. अपनी जान प खेल के दिने राते सेवा, टहल करत बा हो दादा.... ओह लोग के बहुते बहुते धनबाद हो दादा...

कोरोना:- अच्छा, आ तू काल्ह जवन दू बोरा समान किन के लाइल बाड़े. ओकर का होई रे...?

आदमी :- तहरा कइसे पता चल गइल ए दादा...?

कोरोना:- हम हर जगह फइलल बानीं, सर्वव्यापी हईं...

आदमी :- पहिलहीं खबर आइल रहे हो दादा. दर दोकान बंद हो जाई. जरूरत के सामान रख लेवे के....

कोरोना:- (खिसिआ के) पाँच किलो निमक आ पचास किलो आटा...?

आदमी :- ह ए दादा...

कोरोना:- पालच जन के परिवार भकोसइओ के खइब$ सन तबो छ महीना चली... 20 लीटर तेल, 25 पाकिट मैगी... का होई रे?

आदमी :- (डेरात डेरात) घरे में रहल जाई त कुछ खाए पिए के चाही न.

कोरोना:- अरे दुष्ट, पिकनिक आ पार्टी मनत बा का.... 20 दिन नून तेल खा के ना जी सकेल$ सन... अरे हरामी, जमाखोरी क के कए गो गरीबन के रोटी छीन लेले तू..... केतना लोगन के त खइला बिना तू मार देबे... आ दवाई के दोकान प काहे लाइन लगइले रहस रे....?

आदमी :- व्हाट्सएप प मैसेज आइल रहे कि जरुरी दवाई, सिरप किन के रखे के...

कोरोना:- जा ए पढल लिखल जाहिल, तोहनी के मारे खातिर महामारी के का जरूरत बा? तोहनी के त व्हाट्सएप आ फेसबुक के मसैजे से मर जइब$ सन. एगो बात बताव, एको बेरा सोचले ह$, तू अतना दवाई आ सिरप हसोत ले ले? ओह से कतना जरूरत मंद लोगन के जान बच सकत रहे? अदमिन के मारत बाड़न सन तोहनी के (गुस्सा से चिचिआ के) आ बदनाम, हम होत बानी....?

आदमी :- गलती हो गइल हो दादा, हम मए रासन पताई, कुल्ही दवाई लोगन में बाँट देम हो दादा....

कोरोना:- हा, हा, हा. जिंदा बचबे तब न. चल हम तोरा प सवार होके चलम. कुछ दिन हमहूँ मैगी चउमिन खाइम आ फिर तोरा के खा जाइम....

आदमी :- ना हम घरे ना जाए देम. हमरा घरे माई बिआ, बाबूजी बाड़े, भइया- भऊजाई आ छोट एगो भतिजी बिआ ए दादा....

कोरोना:- तोरा घरे त मजा आ जाई रे....

आदमी :- (टाइट हो के) ए कोरोना, हम एतना देरी से डेरात बानीं आ तू डेरवइले जात बाडू? बचना समझ लेल बाडू का....? सभे केहू जान गइल बा तहरा बारे में. हमार गलती बस अतने बा कि हम बहरी निकल गइल बानीं. बाकिर हथिआर त लेइएके आइल बानीं....

कोरोना:- (ठेंगा देखा के) हम गोली बनूक से ना डेराईं ए बबुआ.

आदमी :- (खुश हो के) त हम तोप लेके आइल बानीं हो....

(बगली में से सेनेटाइजर निकाल के बढ़िया से हाथ साफ करत बा, मास्क पेन्हता, फिर हैंडवाश निकाल के सामने से देखावत बा)

(कोरोना भागे लागत बाड़ी, आदमी लखेदे लागता बा आ भाग के अपना घर में घुस जाता. ऊ सीधे कोठिला में घुसत बा आ चिल्लात बा)

आदमी :- लुका के रह$ जा हो दादा, बहरी कोरोनवा घुमत$ बिआ.....

✍**विशाल नारायण**

रोहतास,बिहार

एह अंक के चित्रकार

अपना नेह- छोह, तियाग आ बलिदान से जिनिगी में रंग भरेवाली नारी शक्ति के योगदान के सभे एक मत से स्वीकार करेला। काहें ना करी? नारी अपना हर रूप में पुरुष के सम्बल बनि जाली, चाहे ऊ बेटी के रूप होखे, बहिन के, सहचरी, माई- बहन भा नानी- आजी के । जब दुनियाँ मुँह मोड़ लेले तब नारी के सहयोगे पुरूष के समाज के बिकट परिस्थिति से लड़े ख़ातिर नवका ऊर्जा देला ।

प्रतिभा त एगो लुत्ती नियन होले, जवन दबल त रहेले लेकिन मोका मिलते लहक उठेले । ई साबित हो चुकल बा, अगर इंसान के भीतरी प्रेरणा, दृढ़ इच्छाशक्ति और साहस होखे त ऊ अपना शौक़ के नवका ऊँचाई दे सकता, चाहे कहहूँ रहो, कइसहूँ रहो।

एह अंक के चित्रकार अन्जना शर्मा जी एकर एगो बेहतरीन उदाहरण बानीं। अपने गाँव के मेहरारून के बीच उनकर पहचान एगो आम घरेलू गृहणिए के रूप में बा। अपनी चित्रकारी के शौक के जिन्दा राखे बदे उहाँ का कठिनाई अउरी संघर्ष क आपन हिस्सा झेलहीं के पड़ल । अन्जना जी गाँव तमकुही राज, जिला कुशीनगर उत्तरप्रदेश के रहवइया हईं शिक्षा एम ए हिन्दी तक भइल बा । ऊ श्री मनोज शर्मा क विवाहिता हईं अउरी एगो आम घरेलू मेहरारू के भूमिका में आपन परिवार के सम्हारे में आपन पुरहर सहयोग दे रहल बानीं। आपन सँउसे पारिवारिक जिम्मेदारियन के निभावत बिषम परिस्थिति के बावजूदो बिना कवनो बिधिवत ट्रेनिग के अपना सपना के उड़ान दिहनीं, अन्जना जी। उनका हाथ के तूलिका जब कैनवास पर चलेला तब खूबसूरत अउरी बेहतरीन चित्र के रूप अख्तियार क लेला । ओ चित्र के खूबसूरती के का कहे के! सिरिजन टीम के खोजी नजर जब अन्जना जी पर पड़ल त उनकर प्रतिभा के समाज के सोझा ले आवे बदे उनकर चित्रन के अपना पतिरिका में जगह देवे के निर्णय भइल । एह अंक के अधिकांश चित्र अउरी आवरण अन्जना जी के बनावल ह ।

आजुवो घर के चारदीवारी में आपन घरेलू काज निपटावत अपना शौक़ के परवान चढावे के पुरहर परयास में लागल बानीं, अन्जना जी । एह काम मे पति श्री मनोज शर्मा जी के पूरहर सहयोग आ सहमति रहेला । सिरिजन टीम अन्जना जी के उज्ज्वल अउरी सुखद भविष्य के कामना करतिया।

कुछ छाया चित्र श्री सुरेन्द्र कुमार पाण्डेय जी, आरा के खींचल ह जेकरा खातिर टीम सिरिजन आभारी बा ।

राउर बात

✍सिरिजन - एगो पत्रिका भर नइखे । ई समेटले बा - लोक के भाव , सुर , लय , ताल , छंद। येहमें बसल बा |भोजपुरिया माटी के सोन्ह सुगंध । ई झंपोली बा- नेह , प्रेम , आ आदर के। कहानी , कविता , विमर्श से भरपूर । सादर प्रणाम बा येह सिरिजन के पूरा टीम के । स्नेहिल सुभकामना सह बधाई बा। सभ रचनाकार भाई - बहिनन के – अमरेंदर सिंह, आरा, बिहार

✍साँचों करेजा जुड़ा जाला जब आपन माई भाषा भोजपुरी मे कवनों ढंगर लेख पढे का मिलेला त् । पेट का भूख , माई बाप के सपना , आपन मेहरारू बाल बचन का रोटी आ सुख का जोगाड़ मे आपना माटी से दूर भईले पर रावां सभ के प्रयास पढ़े सुने का मिलेला त कतना निमन लाागेला वोइके बर्नन करे के हमरा लगे त शब्दे नाईखे । भागां भर के आभार रावां सभन के एह सुनर प्रयास खतिरा – रमेंद्र कुमार सिंह, कोलकाता, पच्छिम बंगाल

✍बहुत बहुत बधाई बा सिरिजन के। सातवां अंक मिल गइल बा पहिले त आवरण मोहता पन्ना खोलते सम्पादकीय में मन भरमि जाता जवना में "भोजपुरी शब्द संचय" आ "आपन बात" के सटले "कनखी" पढ़ला पर आगे आउर पढ़े प लालचावता। जस जस आगे बढ़ता किसिम किसिम के रस से सराबोर होत जाता । अब सिरिजन अपना परिचय के मोहताज नइखे खुद पहचान बना के दउरे सुरु क देले बा , एकर अंदाज एहि से लागता की अब सिरिजन के आवे के लोग इंतजार करत बाड़े । त शुभकामना बा सिरिजन असहिं बढ़त रहो आ सिरिजन के जतना सहयोगी बा सभी के बहुत बहुत धन्यवाद आ बधाई बा – सुरेंद्र सिंह, पटना, बिहार

✍सिरिजन खाली एगो ई-पतिरिका भर ना ह हमरा खातिर । भोजपुरिआ समाज में रहेवाला अनमोल भाव के अपना लेखनी से शब्द में पिरोके प्रकट करेवाला बिद्वान लोग के रचना मिलेला । एहीसे साहित्य के समाज के आइना कहल जाला । जय भोजपुरी – एस एन मिश्रा, तंज़ानिया, पूर्वी अफ्रिका

✍हमेशा के तरह इहो अंक लाज़वाब बा , आवरण पृष्ट के कवनो तुलना नइखे ...संपादकीय टीम के बधाई – गुप्तेश्वर पाण्डेय, बिहियां, बिहार

✍बहुत सुनर... अनिल चौबे जी के 'कनखी'.. 'छोड़ी, कवन बात बा कहले के'।पढ़ीके आन्नद आ गईल... प्रणाम प्रदुम्मन कुमार सोनी

✍ई पतिरिका सगरो भोजपुरी कलम आ तूलिका के आगे बढवला खातिर अपने आप में बेजोड़ सिरिजनहार बा।हार्दिक बधाई आ शुभकामना – माया शर्मा, पंचदेवरी, गोपालगंज, बिहार

✍सिरिजन आ गइल समय पर, अब त बुझाता सिरिजन खाती नशा हो जाता कब आयी, आवरण दूरेसे बोलावता सम्पादकीय में भोजपुरी के बारे में चर्चा अपने आगे पढ़ेके लालचावता बधाई बा सिरिजन के – अवधेश तिवारी, अहमदाबाद, गुजरात

✍सिरिजन के सतवाँ अंक आ गइल बा। आवरण चित्र देखि के मन पुलकि उठल ह। जइसे अषाढ़ का उमस में ठंढा फुहार परे। आजु का विषम वातावरण में केतना सुन्नर सनेस दे रहल बा ई चित्र। एक नजर पत्रिका के देखनी हँ। ई देखि के बहुते नीक लागल ह कि सिरिजन का झपोली में रसगर मिठाई से लेके मन फेरवट दालबूट, सबके धेयान राखल बा। नया कलमकार सब के भी भरपूर जगहि मिलल बा। ई कदम भोजपुरी युवा पीढ़ी के रचनात्मकता खातिर प्रेरित करी। हर अंक का साथे सिरिजन निखरि रहल बा। सिरिजन परिवार आ सब लेखक के अनघा बधाई |अपने सब से निहोरा बा कि अपनहूँ पढीं आ अधिका से अधिका हीत-मीत, संगी-साथी तक पत्रिका के लिंक भेजि के, सब लिखनिहार आ सिरिजन परिवार का मेहनत के सफल करीं। भोजपुरी के एतना सेवा त$ हमनी सब केहु कर सक$ तानी – शशिरंजन शुक्ल सेतू, बंगलौर, कर्नाटका

✍सिरिजन के देख के मन खुश हो जाला, भाषा त माटी के ह, माटी से दूर होते खालीपन आ जाला जिनिगी में । सिरिजन के पेज दर पेज पढ़ला पर गांव में बीतल जिनिगी आँखि के सोझा नाच उठेला । आँख लोरा जाता । रहे दिहिं रउवा सभे माटी के बोली के जियावे के कोशिश में लागल बानी जा । जरूर सफल होखब जा । अविनाश अग्निहोत्री, दुबई

कलमकार से गोहार

निहोरा

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

माईभाषा के सम्बन्ध जनम देवे वाली माई आ मातृभूमि से बा, माईभाषा त अथाह समुद्र बा, ओके समझल बहुत आसान काम नइखे । भोजपुरिया क्षेत्र के लोग बर्तमान में रोजी रोटी कमाए खातिर आ अपना भविष्य के सइहारे खाति अपनी माँटी आ अपनी भाषा से दूर होत चल जाता, ओहि दूरी के कम करे के प्रयास ह “सिरिजन” । जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया, आपन माँटी -आपन थाती के बचावे में प्रयासरत बिया इहे प्रयास के एगो कड़ी बा "सिरिजन" । भोजपुरी भाषा के लिखे आ पढ़े के प्रेरित करे खातिर एह ई-पत्रिका के नेंव रखाइल । "सिरिजन" पत्रिका रउवा सभे के बा, हर भोजपुरी बोले वाला के बा आ ओकरे खातिर बा जेकरा हियरा में माईभासा बसल बिया । ई रउरे पत्रिका ह, उठाईं लेखनी, जवन रउरा मन में बा लिख डाली, ऊ कवनो बिध होखे कविता, कहानी, लेख, संस्मरण, भा गीत गजल, हाइकू, ब्यंग्य आ भेज दिहीं “सिरिजन” के ।

रचना भेजे के पहिले कुछ जरूरी तत्वन प धियान देवे के निहोरा बा :

1. आपन मौलिक रचना यूनिकोड/कृतिदेव/मंगल फॉण्ट में ही टाइप क के भेजीं । फोटो भा पाण्डुलिपि स्वीकार ना कइल जाई ।
2. रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार जरूर पढ़ीं, रचना के शीर्षक, राउर रचना कवन बिधा के ह जइसे बतकही, आलेख, संस्मरण, कहानी आदि क उल्लेख जरूर करीं । कौमा, हलन्त, पूर्णविराम प बिशेष धियान दीं। लाइन के समाप्ति प डॉट के जगहा पूर्णविराम राखीं ।
3. एकर बिशेष धियान राखीं कि रउरी रचना से केहू के धार्मिक, समाजिक आ ब्यक्तिगत भावना के ठेस ना पहुंचो । असंसदीय, फूहड़ भाषा के प्रयोग परतोख में भी ना दियाव, एकर बिशेष धियान देवे के निहोरा बा ।
4. राउर भेजल रचना सम्पादक मंडल के द्वारा स्वीकृत हो जा तिया त ओकर सूचना मेल भा मैसेज से दियाई ।
5. आपन एगो छोट फोटो, परिचय जइसे नाम, मूल निवास, बर्तमान निवास, पेशा, आपन प्रकाशित रचना भा किताबन के बारे यदि कवनो होखे त बिवरण जरूर भेजीं।
6. रचना भा कवनो सुझाव अगर होखे त रउवा ईमेल - sirijanbhojpuri@gmail.com प जरूर भेजी ।
7. रउरा हाथ के खिंचल प्राकृतिक, ग्रामीण जीवन, रीति- रिवाज के फोटो भेज सकतानी। धियान राखीं ऊ ब्यक्तिगत ना होखे ।

जय भोजपुरी जय भोजपुरिया

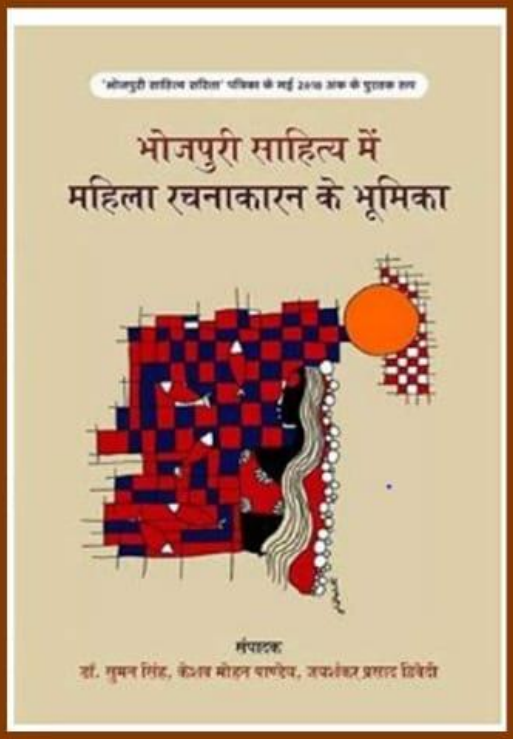

भोजपुरी साहित्य-संस्कृति के प्रचार-प्रसार, संरक्षण आ संवर्धन में भोजपुरी साहित्य के तारामंडल के महत्वपूर्ण तारा सर्वभाषा ट्रस्ट के अतुलनीय योगदान बा।

रउरा द्वारा भोजपुरी किताब किन के पढ़ल चाहे केहू के उपहार में देहल, भोजपुरी खातिर बड़हन योगदान रही।

किताब खातिर सम्पर्क करीं :
श्री जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
मोबाइल नं.- 9999614657